ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला

हिन्दी ग्रन्थाङ्क—११५

आस्कर वाइल्डकी कहानियाँ

आजसे १३ वर्ष पहलेके, साहित्य-क्षेत्रमें
डरते-डरते प्रवेश करनेवाले,
किशोर लेखक धर्मवीर
की ओरसे
उसके प्रथम प्रोत्साहक, मित्र और प्रकाशक
राजा मुनुआको स्नेह और आदरसे

आस्कर वाइल्डकी कहानियाँ

धर्मवीर भारती

द्वारा

अनूदित

भा र ती य ज्ञा न पी ठ • का शी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला
सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

द्वितीयावृत्ति
१९६०
मूल्य ढाई रुपये

प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

●

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

आस्करवाइल्ड अंग्रेज़ी साहित्यके उन थोड़ेसे लेखकोमेंसे एक है जिसका लेखन जितना विवादास्पद रहा है, उतना ही उसका व्यक्तित्व भी। किन्तु अग्रेज़ी गद्यके अनुपम शैलीकारके रूपमे उसे सभीने मान्यता दी है! शिल्पसज्जा, शब्दचयन, चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति और भाषा-प्रवाहके लिए आज भी उसका लेखन अद्वितीय माना जाता है। उसकी कथाएँ अपने ढगकी अनूठी है। आशा है वे हिन्दीके पाठकोको रुचिकर प्रतीत होगी।

—अनुवादक

"कैवेलरीके पहाड़ोपर प्रभु जीससको फाँसी दी गई थी। जब जोजेफ उसकी फाँसी देखकर शामको नीचे घाटीमे आया तो उसने एक सफेद चट्टानपर एक जवान आदमीको बैठ कर रोते हुए देखा।

और जोज़ेफ उसके पास गया और बोला—"मै जानता हूँ तुझे कितना दुःख हो रहा है क्योंकि सचमुच जीसस बडा महान् पैगम्बर था।"

लेकिन उस जवान आदमीने कहा—"ओह् मै उसके लिए नही रो रहा हूँ। मै इसलिए रो रहा हूँ कि मुझे भी जादू आता है, मैने भी अन्धोको आँखें दी है, मुर्दोको जीवन दिया है, भूखोको रोटी दी है, पानीको शराब बनाया है ' 'और फिर भी मानव-जातिने मुझे क्रासपर नही लटकाया।"

—'आस्कर वाइल्ड'

सूची
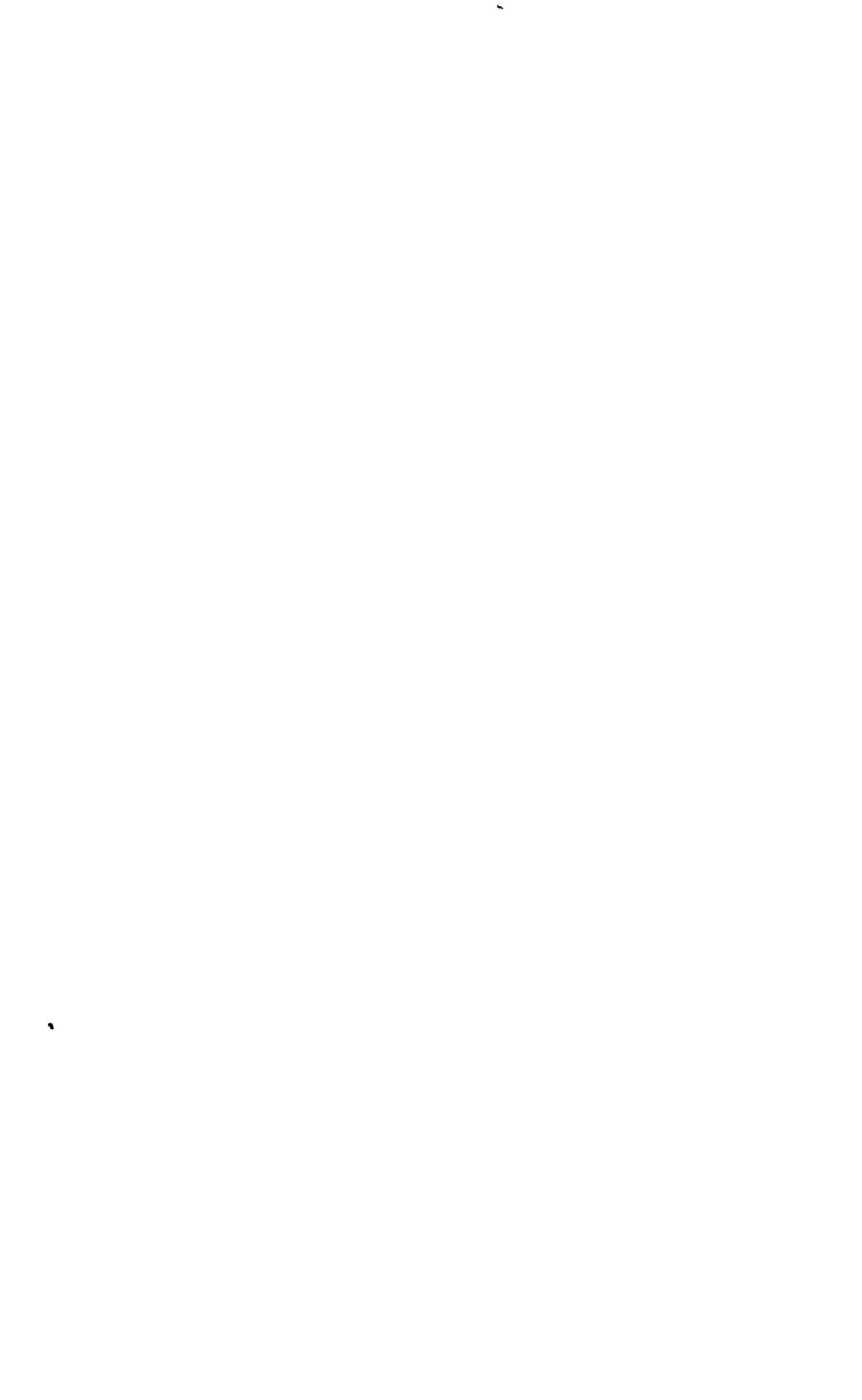
आस्कर वाइल्डकी
कहानियाँ
●

शिशु-देवता

शिशु-देवता

स्कूलसे लौटते समय रोज शामको बच्चे उस जादूगरके बागमें जाकर खेला करते थे।

बड़ा सुन्दर बाग था, मखमली घासवाला! घासमे यहाँ-वहाँ तारोकी तरह रंगीन फूल जडे थे और उसमे बारह नारंगीके पेड़ थे जिनमे वसन्तमे मोतिया किसलय लगते थे और पतझडमें रसदार फल। डालोपर बैठकर चिडियाँ इतने मीठे स्वरोमे गाती थी कि बच्चे खेल रोककर उन्हें सुनने लगते थे।

एक दिन जादूगर विदेशसे लौट आया। वह अपने मित्रको देखने गया था और वहाँ सात वर्ष तक रुक गया था। सात साल तक बातें करते रहनेके बाद उसकी बातें समाप्त हो गई (क्योंकि उसे थोड़ी-सी बातें करनी थी) और वह अपने घरको लौट आया। जब वह आया तो उसने बागमे बच्चोंको ऊधम मचाते हुए देखा।

"ऐ! तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?" उसने गुर्राकर पूछा। लड़के डरकर भाग गये।

"मेरा बाग मेरा खुदका बाग है। कोई भी नासमझ इसे समझ सकता है?" इसलिए उसने उसके चारो ओर ऊँची-सी दीवार खिचवाई और फाटकपर एक तख्ती लटका दी जिसपर लिखा था—"आम रास्ता नही है।"

अब बेचारे बच्चोंके खेलनेके लिए कोई जगह नही रह गई। वे सड़कपर खेलने लगे मगर सड़कपर नुकीले पत्थर गड़ते थे अतएव जब उनको

छुट्टी हो जाती थी तो वे उस ऊँची दीवारके चारो ओर चक्कर लगाते थे।

उसके बाद वसन्त आया और सभी बागोमे छोटी-छोटी चिडियाँ चह-कने लगी और नये किसलय फूलने लगे। मगर इस जादूगरके बागमे अब भी शिशिर ऋतु थी। उसमे कोई बच्चे न थे इसलिए चिड़ियाँ गानेकी इच्छुक न थी और पेड फूलना भूल गये थे।

एक वार एक फूलने घाससे सर निकालकर ऊपर झाँका, किन्तु जब उसने वह तख्ती देखी तो उसे इतना दु ख हुआ कि वह शबनमके आँसुओसे रोता हुआ फिर जमीनमे सोने चला गया।

हाँ, हिम और पाला वेहद खुश थे—"वसन्त शायद इस बागको भूल गया है—अब हम साल भर यही रहेगे।" उन्होने उत्तरी ध्रुवकी बर्फीली आँधीको भी आमन्त्रित किया और वह भी वही आ गई।

"वाह कैसी अच्छी जगह है" आँधीने कहा—"यहाँ ओलोको भी बुला लिया जाय तो कैसा हो!" और ओले भी आ गये।

"मालूम नही अभी तक वसन्त क्यो नही आया?" स्वार्थी जादूगरने सोचा—उसने खिडकीमे बैठकर ठण्डे सफेद बागकी ओर देखा—"अब तो मौसम बदलना चाहिए।"

लेकिन वसन्त नही आया और न ग्रीष्म—पतझडमें हर बागमे सुनहले फल झूलने लगे—मगर जादूगरके बागमे डाले खाली थी।

"वह बडा स्वार्थी है" पतझडने कहा—और वहाँ सदा शिशिर रहा—और आँधी, हिम और ओलेके साथ कोहरा बराबर छाया रहा।

एक दिन सुबह जब जादूगर आया तो उसे बडा आकर्षक सगीत सुन पडा। इतना मीठा था वह स्वर कि उसने समझा राजाके चारण इधरसे गाते हुए निकल रहे है। किन्तु वास्तवमें उसकी खिड़कीके पास एक वृक्षकी डालपर बैठकर एक चिडिया गीत गा रही थी। किसी भी विहगके कलरव-

को सुने उसे इतने दिन बीत गये थे कि वह उसे स्वर्गीय संगीत समझ रहा था। उस वक्त वर्फ रुक गया था, आसमान खुल गया था, तूफान सो गया था। और खुले हुए वातायनसे सौरभकी लहरें उसे चूम जाती थी।

"मैं समझता हूँ वसन्त आ गया", जादूगरने कहा और विस्तरसे उछल कर वाहर झाँकने लगा।

उसने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा—दीवाल के एक छोटे-से छेदमेंसे वच्चे भीतर घुस आये हैं और पेडकी शाखोंपर वैठ गये हैं। पेड़ वच्चोंका स्वागत करनेमें इतने खुश थे कि वे फूलोंसे लद गये थे और लहराने लगे थे! चिड़ियाँ खुशीसे फुदक-फुदककर गीत गा रही थी और फूल घासमें-से झाँककर हँस रहे थे।

किन्तु फिर भी एक कोनेमें अभी शिशिर था। वहाँ एक वहुत छोटा वच्चा खडा था। वह इतना छोटा था कि डाल तक नही पहुँच पाता था—अतः वह रोता हुआ घूम रहा था। पेड़ वर्फसे ढँका था और उसपर उत्तरी हवा वह रही थी। "प्यारे वच्चे चढ आओ!" पेडने कहा और डालें झुका दी मगर वह वच्चा वहुत छोटा था।

वह दृश्य देखकर जादूगरका दिल पिघल गया। "मैं कितना स्वार्थी था!" उसने सोचा, "यह कारण था कि अभी तक मेरे वागमें वसन्त नही आया था? मैं उन वच्चेको पेडपर चढा दूँगा, यह दीवाल तुडवा दूँगा और तव मेरा उपवन हमेशाके लिए शैशवकी क्रीडा-भूमि वन जायगा!"

वह नीचे उतरा और दरवाजा खोलकर वागमे गया। जव वच्चोंने उसे देखा तो वे डरकर भागे और वागमें फिर जाडा आ गया। मगर उस छोटे वच्चेकी आँखोंमें आँसू भरे थे और वह जादूगरका आगमन नही देख सका। जादूगर चुपचाप पीछेसे गया और उसने धीरेसे उसे उठाकर पेडपर विठा दिया। पेडमें फौरन कलियाँ फूट निकली और चिड़ियाँ लौट आईं और गाने लगी। छोटे वच्चेने अपनी नन्ही वाहें फैलाकर जादूगरको चूम लिया। दूसरे वच्चोंने भी यह देखा और जव उन्होने देखा कि जादूगर

अव निष्ठुर नही रहा तो वे भी लौट आये और उनके साथ-साथ मधुमास भी लौट आया ।

"अव यह वाग तुम्हारा है", जादूगरने कहा और उसने फावड़ा लेकर वह दीवाल ढहा दी ।

दिन भर तक वच्चे खेलते रहे और शाम होनेपर वे जादूगरसे विदा माँगने आये । "मगर वह नन्हाँ साथी कहाँ है ?" उसने पूछा—"वह जिसे मैंने पेडपर विठाला था" जादूगर उसे प्यार करने लगा था ।

"हम नही जानते—वह आज पहली वार आया था ।" जादूगर वहुत दु खी हो गया ।

हर रोज स्कूलके वाद वच्चे आकर जादूगरके साथ खेलते थे । मगर वह छोटा वच्चा फिर कभी नही दिखाई पड़ा । वह सभी वच्चोको चाहता था मगर उस नन्हे वच्चेको वहुत प्यार करता था !

वरसो वीत गये और वह जादूगर वहुत वुड्ढा हो गया । अव एक आरामकुर्सी डाल वह वैठ जाता था और वच्चोके खेलोंको देखा करता था "मेरे वागमे इतने फूल है मगर ये जिन्दा फूल सवसे कोमल है !"

एक दिन जाडेकी सुवह उसने अपनी खिड़कीके वाहर देखा । एक विचित्र दृश्य था । उसने ताज्जुवसे आँखें मली । दूर कोनेमे एक पेड़ सफेद फूलोंसे ढँका था । उसकी डालियाँ सोनेकी थी और उसमे चाँदीके फल लटक रहे थे और उसके नीचे वह वच्चा खड़ा था । वह प्यारा नन्हाँ वच्चा जिसे वह प्यार करता था ।

जादूगर खुशीसे पागल होकर दौडा और वच्चेके पास गया—मगर जव पास पहुँचा तो गुस्सेसे चीख उठा—"किसने तुम्हे घायल करनेकी हिम्मत की है ?" क्योकि वच्चेकी हथेलियोपर और पावोमे क्रासकी कीलियोके निशान थे ।

"किसने यह दुस्साहस किया है ? बताओ मैं उसे अभी इसका मजा चखाता हूँ !"

"नही !" बच्चेने कहा—"ये तो प्रेमके घाव है !"

जादूगर स्तब्ध हो गया।

"कौन हो तुम ?" उसने भयमिश्रित श्रद्धासे पूछा। बच्चा हँसा और बोला—"तुमने एक बार मुझे अपने बागमे खेलने दिया था। आज तुम मेरे बागमें चलो—वह बाग जिसे लोग स्वर्ग कहते है।"

आज जब दोपहरको बच्चे आये तो उन्होंने देखा कि उस पेडके नीचे सफेद फूलोकी चादर ओढे बूढा जादूगर अनन्त निद्रामे निमग्न है।

अभिषेक

अभिषेक

दूसरे दिन प्रात काल उसका राज्याभिषेक होने वाला था, और तरुण युवराज अपने सुपमागारमें अकेले बैठा था। भूमि तक सर झुका कर वन्दन कर उसके दरबारियोने उससे विदा माँग ली थी और महलके मुख्य वहि प्रकोष्ठमे चले गये थे। वहाँ अभिषेकाचार्य उन्हें उत्सवकी रीति समझा रहा था, क्योंकि उनमेसे कुछ अब भी साधारण स्वाभाविक व्यवहारके अभ्यस्त होनेके कारण दरबारी आडम्बर न सीख पाये थे। किन्तु स्वाभाविकता दरबारमे अपराध गिना जाता है।

युवराज—जो अभी केवल सोलह वर्षका किशोर था, उनके जानेपर तनिक भी अप्रसन्न नही हुआ और छुटकारेकी एक लम्बी साँस लेकर अपने जडाऊ पलगके रेशमी गद्देपर लेट गया और आज़ादीके लिए बेकरार निगाहोसे चारो ओर देखने लगा जैसे कोई कुंजोका स्वच्छन्द पक्षी, या जालमे नया फँसा हुआ कोई आज़ाद जगली जानवर।

सच तो यह है कि उसे भी शिकारी जालमें फँसा लाये थे। वह खुले बदन हाथमें बाँसुरी लेकर गडरियोंके झुण्डके साथ जा रहा था। वह बचपनसे उन्हींके बीचमें पला था और अपनेको भी गडरिया समझता था। किन्तु वास्तवमें वह एक राजकुमारीकी सन्तान था। वह अपने पिताकी अकेली पुत्री थी और उसने अपनेसे बहुत निम्न श्रेणीके किसी व्यक्तिसे गान्धर्व विवाह किया था। कुछका कहना था कि एक अजनबीने जादू भरी बाँसुरीके रजत स्वरोंसे राजकुमारीकी चेतनापर मोहिनीका जाल बुन दिया था, कुछका कहना था कि रिमिनीके किसी कलाकारके प्रति राजकुमारीने

असाधारण आकर्षण प्रदर्शित किया था और जो अधूरा मन्दिर निर्माण छोड कर भाग गया था। जब कुमार केवल सात दिनका था, तभी किसीने चुरा कर उसे एक साधारण किसान दम्पतिको सौंप दिया था, जो स्वयम् निस्सन्तान थे और शहरसे बहुत कम अन्तरपर रहते थे। दु ख या महामारी, या जैसा राजवैद्यका कथन था कि प्यालेमे मिले हुए इटालियन जहरके कारण, प्रसवके बाद जागते ही उसकी सुन्दर और कृपकाय माता मर गई। जिस समय उसे सुरक्षित रूपसे ले जाने वाले विश्वस्त अनुचरने अपना थका हुआ घोड़ा रोककर किसान दम्पतिका द्वार खटखटाया, उस समय उस राजकुमारीका शव नगरसे दूर किसी उजाड स्थानमें खुदी समाधिमे लिटाया जा रहा था, जिसमें एक बहुत सुन्दर विदेशी युवकका शव पहले हीसे रक्खा हुआ था, जिसके हाथ पीठकी ओर बँधे हुए थे और सीनेपर कई ताज़े घाव खून टपका रहे थे।

इस तरहकी अफ़वाहें लोगोमें उड़ रही थी। यह तो निश्चित था कि स्वर्गीय महाराजने पश्चात्तापवश या वशोच्छेदनके भयसे अपनी मरण-शय्यापर वर्तमान युवराजको बुलवा भेजा था और सरे आम उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।

किन्तु इस अधिकार-प्राप्तिके प्रथम क्षणसे ही उसमे सौन्दर्यके प्रति असाधारण उपासनाके भाव दीख पडे, जो बादमे उसके जीवनमे बहुत ही प्रभावशाली सिद्ध हुए। उसके विश्वस्त अनुचरोका कहना था कि जब कभी वह कोई भी सुन्दर वस्त्र या जाज्वल्यमान रत्न देखता था तो वह खुशीसे चीख उठता था। और अपने मृगचर्म और मेखलाको फेंकते समय तो वह आनन्दसे पागल था। यद्यपि कभी-कभी वह वनवासी जीवनकी स्वतन्त्रताकी कमी अनुभव करता था, कमसे कम दरबारकी अनावश्यक रस्म-रिवाजोसे तो वह बहुत ऊब चुका था किन्तु, वह आश्चर्यजनक महल

जिसका नाम "सुषमागार" था और जिसका वह एकच्छत्र स्वामी था, उसे एक सर्वथा नवीन संसार-सा मालूम होता था। ज्योंही उसे दरबार या मन्त्रणा-गृहसे छुटकारा मिलता था, वह आनन्दसे रजत-सोपानोपर संचरण करता था। प्रकोष्ठसे प्रकोष्ठमें वह घूमता था जैसे वह सौन्दर्यमे दु:ख और दुर्बलताका प्रतिकार ढूँढ रहा हो।

वह इनको आविष्कारकी यात्राएँ समझता था और वास्तवमें उसके लिए ये जादूके देशकी स्वप्निल यात्राएँ थी। कभी-कभी उसके साथ सुनहली अलकोंवाले कृश बालभृत्य रहते थे जिनके उत्तरीय लहराते थे और बालमें बँधे हुए रेशमी तन्तु खुल-खुल पडते थे। किन्तु अधिकतर वह एकान्तमे ही रहता था क्योंकि उसने न जाने किस दैवी प्रेरणासे यह समझ लिया था कि कलाके गूढतम सत्य केवल एकान्तमे ही मिलते है और ज्ञानकी भाँति सौन्दर्य भी एकान्त पूजासे सन्तुष्ट होता है।

उनके विषयमें उन दिनो विचित्र कहानियाँ कही जाती थी। कहा जाता है कि नागरिकोंकी ओरसे उसे अभिनन्दन देनेके लिए आनेवाले प्रबन्धाध्यक्षने देखा कि वह एक बड़ेसे चित्रके सामने झुककर उसकी पूजा कर रहा है। वह चित्र वेनिससे आया था और उसमे किसी नवीन देवताकी पूजाका रेखाङ्कन है। एक बार वह कई घण्टोंके लिए खो गया और बहुत लम्बी खोजके बाद वह महलकी उत्तरी मीनारमें मिला जहाँ वह एक बडे-से ग्रीक हीरेको अपलक देख रहा था जिसपर कामदेवका चित्र खुदा हुआ था। कहा जाता है कि एक दिन वह संगमरमरकी प्रतिमाके अधरोको चूमते हुए देखा गया जो सन्तरिणीके निर्माणके समय सरिता तटपर पाई गई थी। कहते हैं एक समूची पूनोकी रात उसने एक रजत प्रतिमापर किरण रेखाएँ देखनेमे बिता दी।

सभी मूल्यवान् और दुर्लभ वस्तुओंमें उसे एक विचित्र आकर्षण मालूम देता था। उन्हें मँगवानेकी उत्सुकतामें बहुतसे सौदागरोंको विदेशोंमें भेजा था। कुछ कस्तूरीकी खोजमें उत्तरी समुद्रके मल्लाहोंके पास गये, कुछ

मिस्र गये ताकि वहाँसे वह दुर्लभ हीरा लायें जो राज-समाधियोमे पाया जाता है और जिसमे जादूकी शक्तियाँ होती है। कुछ फारसके कालीन चित्रित वर्तन लाने गये और भारतसे हाथी दाँतकी जालियाँ, दन्तपत्र, चन्द्रकान्त मणि, पन्नेके कण्ठहार, चन्दन, नीलम और ऊनी शाल लेने गये।

किन्तु वह अपने अभिषेकके वस्त्रोके लिए बहुत ही व्यस्त था। स्वर्ण-तारोके वस्त्र, लाल जटित मुकुट और मुक्ता-खचित राजदण्ड; आज वह अपनी राज-शय्यापर लेटकर अग्नि पात्रमे सुलगते हुए कण्ठकी ओर शून्य दृष्टिसे देखते हुए इन्हीके विषयमे सोच रहा था।

उस युगके श्रेष्ठतम कलाकारोने उनके नमूने बनाकर महीनो पहले उसे दिखा दिये थे और उसने जौहरियोको दिन-रात काम कर उसे पूरा करनेकी आज्ञा दे दी थी और ससार भरसे उसके लिए हीरे एकत्रित किये जा रहे थे। उसने कल्पनामे देखा कि वह राजसी वस्त्रमे मन्दिरके सोपानपर खडा है, उसके होठोपर एक मुसकुराहट खेलने लगी और उसकी काली आँखोमें एक चमक आ गई।

कुछ देर बाद वह उठा और अग्निपात्रके नक्काशीदार शिखरपर झुककर उसने धुँधली रोशनीवाले कमरेकी ओर देखा। दीवारोपर ज़री-दार स्वर्ण-पट टँगे थे जिनपर सौन्दर्यकी विजय अंकित थी। शय्याके आस्तरणपर पीली कलियाँ कढी हुई थी मानो नीदकी थकी हुई अञ्जलिसे खुलकर बिखर गई हो। वशीनुमा हाथीदाँतकी छडियोसे ऊपरका चँदोवा थमा हुआ था जिसमें गुँथे हुए शुतुरमुर्गके खूबसूरत पख छतके रजत आवरणको स्पर्श कर सिहर उठते थे। हरे मीनेकी एक हँसती हुई रति-प्रतिमा शीशपर एक स्वच्छ दर्पण थामे थी।

वाहर एक मन्दिरका बडा-सा गुम्बद था। नदीके किनारे उनीदे प्रहरी घूम रहे थे। दूर किसी उपवनमें एक बुलबुल गा रही थी। खुले हुए वातायनके हवाके झोके रजनीगन्धाका सौरभ उँडेल रहे थे। उसने माथेपर

झूलती हुई भूरी अलकें पीछेकी ओर समेटी और एक वीणा उठाकर अलसित भावसे तारोंपर उँगलियाँ फिराने लगा। उसकी पलकें मुँद गई और अजब-सा नशा उसपर छा गया। कभी जीवनमें उसपर सौन्दर्यके जादूने इतना नशा नही डाला था।

जब नगर-कोटसे अर्द्ध रात्रिका निर्घोप हुआ तो उसने आवाज़ दी। भृत्योंने आकर उसके वस्त्र उतारे और गुलाब-जलसे उसके हाथ धुलाये। तकियेपर शाल बिछा दिये गये और उनके जानेके कुछ ही क्षणो बाद उसे नीद आ गई।

जब वह सो गया तो उसने एक स्वप्न देखा। वह स्वप्न यह था—

उसने देखा कि वह एक बडे-से प्रकोष्ठमें खडा है। जहाँ बहुत-सी कराहोंका शोर गूँज रहा है। पुरानी खिडकियोंसे सहमी हुई धूप झाँक रही थी। और उसके धुँधले उजालेमें वह जालोंपर झुके हुए वस्त्र-कारोंको देख रहा था। ताने-बानेके पास जर्द बीमार बच्चे बैठे थे। करघेकी गुल्ली ज्योंही इस ओरसे उस ओर फिसलती थी, वे खटका उठा देते थे और उसके गुज़रते ही खटका गिराकर सूत मिला देते थे। उनके चेहरोंपर भूखकी छाया थी और उनके बाँस-से पतले हाथ कमज़ोरीसे काँप रहे थे। कुछ भूखी औरतें चौकीके पास बैठी कपडे सिल रही थी। पूरे स्थानमें एक विचित्र गरीबीकी दुर्गन्ध थी। दीवारोंपर नमी थी और लोना लग गया था।

युवराज एक वस्त्रकारके समीप गया और उनके बगलमें खडे होकर देखने लगा। वस्त्रकारने उसकी ओर झल्लाकर देखा और-कहा—"तू मुझे क्यों देख रहा है? क्या तू मेरे मालिकका जासूस है?"

"कौन है तुम्हारा मालिक?" युवराजने पूछा।

"मेरा मालिक!" वस्त्रकार बहुत कडुवे स्वरमे बोला—"वह मेरी

ही तरह एक मनुष्य है। हाँ, हममे यह भेद अवश्य है कि मै चीथडे पहनता हूँ, वह रेशम पहनता है। मै भूखो मरता हूँ, वह अपना खाना भी नही पचा पाता !"

"यह देश तो प्रजातन्त्रवादी है।" युवराजने कहा—"यहाँ कोई किसीका गुलाम नही !"

"युद्धमे विजयी पराजितको गुलाम वना लेते है और शान्ति कालमे धनी निर्धनको।" वस्त्रकारने कहा—"हम जीनेके लिए काम करते है और वह हमे इतना कम धन देते है कि हम मरने लगते है। हम दिन भर काम करते है, वे अपनी तिजोरीमे सोना भरते है। और हमारे वच्चे समयके पहले ही कुम्हला जाते है। हम अंगूर निचोडते है, शराव दूसरे पीते है। हम अनाज वोते है, हमारे चूल्हे ठण्डे पडे रहते है। हम ज़ंजीरोमे जकडे है यद्यपि वे दिखाई नही देती, हम गुलाम है यद्यपि दुनिया हमे आजाद कहती है।

"क्या यह सभीका हाल है ?" युवराजने पूछा।

"हाँ सभीका यह हाल है—वच्चे-वूढे, स्त्री-पुरुप सभी। व्यापारी हमे पीस डालते है, और हमें उन्हीके आदेश मानने पडते है। पुरोहित पास वैठे माला फेरते रहते है, और कोई भी हमारी परवाह नहीं करता। हमारी अन्वेरी गलियोमे भूखी आँखो वाली गरीवी रेगती रहती है। सुवह होते ही भूख हमे जगा देती है और रातको लज्जा हमारे सिरहाने कराहती रहती है। लेकिन इससे तुझे क्या ? तू ग़रीव थोडे ही है। तेरा चेहरा तो फूलकी तरह खिला है। यह कहकर मुड़ा और उसने करघेकी गुल्ली फेक दी। युवराज यह देखकर कि उसमे सोनेका तार गुँथा है, काँप गया। उसने वस्त्रकारसे पूछा—"तुम किसके वस्त्र वुन रहे हो ?"

"युवराजके राज्याभिपेकके वस्त्र !" वस्त्रकारने उत्तर दिया—"किन्तु इससे तुझे क्या ?"

और युवराज चीख पडा और जाग गया।

उसने देखा कि वह अपने महलमें है और मधुवर्णी चन्द्रमा धुँधले आकाशमें तैर रहा है।

वह फिर सो गया और उसने एक स्वप्न देखा। स्वप्न यह था :—

उसने देखा कि वह एक बड़ेसे बजरेपर लेटा है जिसे एक सौ गुलाम मिलकर खे रहे हैं। उसके पार्श्वमें एक कालीनपर बजरेका मालिक बैठा है। वह आबनूसकी तरह काला था और उसकी पगड़ी लाल रेशमकी थी। बड़े-बड़े चाँदीके कुण्डल उसके कानोंमें झूल रहे थे और उनके हाथमें एक हाथीदाँतका पैमाना था।

सिवा एक मोटे लँगोटके, वे सभी गुलाम नंगे थे और हरेक अपने साथीसे जंजीरसे जकड़ा हुआ था। उनपर जलती हुई धूप तप रही थी और कोड़े लेकर हब्शी लोग उनकी देख-भाल कर रहे थे। वे अपनी पतली-पतली बाहें निकालकर पानीमें बोझीले पतवार चला रहे हैं। पतवारोंसे नमकीन फेन उछल रहा है।

ज्योंही वे एक खाड़ीमें पहुँचे उन्होंने आहट लेना शुरू किया। किनारेसे एक झोंका आया और जहाज तथा वातावरण हल्की लाल बालूसे भर गया। किनारेपर तीन अरब सवार दीख पड़े जिन्होंने इनपर भाले फेंके। बजरेके मालिकने एक रंगीन धनुष उठाया और तीर छोड़ा। एक अरब सवार घायल होकर बालूपर गिर गया और उनके साथी भाग निकले। पीले बुरकेमें लपटी हुई एक औरत मुड़-मुड़कर लाशको देखती हुई ऊँटपर बैठी हुई चली गई।

ज्योंही उन्होंने मस्तूल गिराया और लंगर डाले, हब्शी गये और एक रस्सीकी सीढ़ी लाये जिसमें शीशा लगा था। मालिकने उसे समुद्रमें डाल दिया और उसके ऊपरी सिरोंको दो लोहेकी खूँटियोंसे फँसा दिया। तब

हब्शियोने सवसे छोटे गुलामको पकड़ा। उसके नाक और कानमे मोम भर दिया और उसके कमरमे पत्थर बाँधकर सीढीके सहारे उतार दिया। जहाँ वह उतरा, थोडेसे बुलवुले उठे और फूट गये। दूसरे गुलाम आश्चर्यसे उधर झाँकते रहे। वजरेके सिरेपर शार्क मछलियोको मोहित करनेवाला एक जादूगर छोटी-सी ढोलक वजाता रहा।

थोडी देर वाद पनडुव्वा ऊपर आया और उसके दायें हाथमें एक मोती था। हब्शियोने उसे छीन लिया और उसे फिर नीचे ढकेल दिया। दूसरे गुलाम अपनी-अपनी पतवारोपर सो गये थे।

वार-वार वह ऊपर आया और हर वार उसके हाथमें एक मोती था। मालिक उन्हे तौल-तौलकर एक चमडेकी थैलीमें रखता जा रहा था।

युवराज कुछ वोलना चाहता था मगर उसकी जुवान तालूसे चिपक गई और उसके होठोने हिलनेसे इन्कार कर दिया। हब्शी आपसमे चिल्ला रहे थे और दो मालाओके लिए झगड़ रहे थे। कुछ समुद्री पक्षी नावके चारों ओर मड़रा रहे थे।

फिर पनडुव्वा ऊपर आया। इस वारका मोती सवसे सुन्दर था क्योकि वह पूर्ण चन्द्रकी तरह गोल था और भोरके तारेसे अधिक उज्ज्वल था। लेकिन पनडुव्वेका मुख विवर्ण था और ज्योही वह डेकपर आया उसके कान और नाकसे खून वहने लगा। क्षण भर तक वह तड़पा और फिर ठण्डा हो गया। हब्शियोने अपने कन्धे हिलाये और उसकी लाश समुद्रमें फेंक दी।

मालिक हँसा। उसने मोती लिया, देखकर अपने माथेसे लगाया और झुककर कहा—"यह युवराजके राजदण्डमें लगेगा!"

जव युवराजने यह सुना तो वह चीख पड़ा और जग गया।

उसने देखा कि प्रभातकी भूरी अंगुलियाँ धूमिल तारेको पकड़नेका प्रयत्न कर रही हैं।

वह फिर सो गया—और उसने एक स्वप्न देखा। वह स्वप्न यह था—

उसने देखा कि वह एक धुँधले जंगलमें घूम रहा है जिसमे विचित्र फल और जहरीले फूल झूम रहे है। पाससे गुजरनेपर साँप फुफकारते थे। और डालसे डालपर चमकदार तोतें उड रहे थे। गर्म दलदलोपर बडे-बडे कच्छप सो रहे थे। पेडोमें मोर भरे थे।

वह चलता ही गया और जंगलके सिरेपर पहुँचा, वहाँ एक सूखी हुई नदीकी तलहटीमें बहुतसे मजदूर काम कर रहे थे। जमीनमे गहरे-गहरे गड्ढे खोदकर वे उनमें घुस जाते थे। कुछ बडी-बडी चट्टानोको कुदालोंसे फोड रहे थे, कुछ बालू छान रहे थे। घासको जडसे उखाड रहे थे और जगली फूलोको लापरवाहीसे कुचल रहे थे। इधर-उधर वे एक दूसरेको पुकार रहे थे और मशीनोकी तरह काम कर रहे थे।

एक गुफाके अन्धेरेसे मौत और तृष्णा उन्हें देख रही थी। मौतने कहा—"मैं थक गई हूँ, मुझे मेरा तिहाई भाग दे दो और मै जाऊँ!"

लेकिन तृष्णाने अपना सर हिलाया—"वे मेरी सम्पत्ति हैं!"

और मौतने पूछा—"अच्छा तो तुम्हारी मुट्ठीमे क्या है?"

"तीन दाने!" उसने उत्तर दिया—"लेकिन उससे तुझे क्या?"

"मुझे एक दे दो!" मौत चिल्लाई—"मैं उन्हें अपने बागमे बोऊँगी—सिर्फ एक दाना! फिर मैं चली जाऊँगी।"

"मै तुझे कुछ भी न दूँगी!" तृष्णाने कहा और उन दानोको अपनी पोशाकमे छिपा लिया।

मौत हँसी और एक प्याला लिया और उसे एक तालाबमे डुबोया। प्यालेसे महामारी निकली। वह उस भीड़में घुस गई और एक तिहाई मजदूर मरकर गिर पडे। उसके पीछे-पीछे शीतल कोहरा था और बगलमें जल-सर्प दौडते जा रहे थे।

जब तृष्णाने देखा कि उसके दासोका एक तिहाई भाग मर गया तो उसने अपनी छाती पीट ली और रो दी—"तूने मेरे एक तिहाई लोगोको मार डाला। जा यहाँसे—तातारके पर्वतोपर युद्ध हो रहा है। वे तुझे बुला

रहे है। अफगानोने काले वृषभकी वलि दी है और हथियार उठा लिये है। मेरी घाटीमें क्या है ? तू यहाँसे क्यो नही जाती।"

"नही" मौतने कहा—"जव तक तू मुझे एक दाना नही दे देगी मै नही जाऊँगी।"

लेकिन तृष्णाने आँखे मूँदकर और दाँत पीसकर कहा—"मै तुम्हे कुछ भी न दूँगी !"

मौत हँसी—उसने एक काला पत्थर उठाया और उसे जंगलोमे फेंक दिया। जगली लतरोंके कुञ्जमेसे ज्वर निकला। उसकी पोशाक चिताकी लपटोंकी थी। वह भीडमेसे गुजरा और जिसे जिसे उसने छुआ वह मर गया। उसके पैरोके नीचेकी घास जल गई।

तृष्णाने अपना सर पीट लिया। "तू वडी निष्ठुर है" उसने कहा—"हिन्दोस्तानमे चहारदीवारियोसे घिरे हुए शहरोमे अकाल पड रहा है और समरकन्दके चश्मे सूख गये है। मिस्रमे अकाल पड रहा है और रेगिस्तानकी टीडियाँ वहाँके आसमानमे छा रही है। तू वहाँ जा—मुझे छोड़ दे !"

"नही !" मौतने जवाव दिया—"मै विना दाना लिये नही जाऊँगी !"

"मै तुझे कुछ नही दूँगी। कुछ भी नही दूँगी !" तृष्णा वोली।

मौत हँसी और उसने सीटी वजाई। आकाशमें उड़ती हुई एक जादूगरनी आई जिसके माथेपर "प्लेग" लिखा था और उसके साथ-साथ सैकड़ो भूखे गिद्ध मडरा रहे थे। उसने घाटीको पखकी छाँहसे ढँक लिया और सभी लोग मर गये।

तृष्णा चीखती हुई जंगलोमे भागी और मौत हँसकर लौट गई।

और घाटीके नीचेसे वडे-वडे अजगर लुढकते हुए निकले और वालूपर वहुत-से स्यार हवा सूँघते हुए आ गये।

युवराज रो पडा और वोला—"ये लोग कौन थे और क्या ढूँढ रहे थे?"

"राज-मुकुटके लिए हीरे ढूँढ रहे थे।" पीछेसे आवाज़ आई।

युवराज चौंक पड़ा। पीछे एक तीर्थयात्री खडा था और उसके हाथमे एक दर्पण था।

युवराज पीला पड गया—"किसके राजमुकुटके लिए ?"

तीर्थयात्रीने दर्पण उसके सामने कर दिया।

युवराजने उसमें अपना प्रतिविम्व देखा और चीख़ पडा, और उसकी नीद उखड गई। कमरेमे चमकीली धूप चमक रही थी और वगलके कुंजोमे पक्षी चहक रहे थे।

महासचिव और अन्य राज्याधिकारी आये और उसे प्रणाम किया। दासोने स्वर्ण तारोंसे वुनी पोशाक, मुकुट और राजदण्ड उसके सामने रख दिये।

युवराजने उन्हे देखा। वे सुन्दर थे। लेकिन उसे अपने स्वप्न याद आ गये और दरवारियोसे उसने कहा—"इन्हे ले जाओ, मैं नही पहनूँगा।"

वे आश्चर्यमें पड गये। उनमेसे कुछ हँस पडे। क्यो इन्होने इसे मजाक समझा। किन्तु उसने फिर सख्तीसे कहा—"इन्हे मेरे सामनेसे ले जाओ। यह मेरा अभिषेकका दिन है, किन्तु मैं इन्हे नही पहनूँगा, क्योंकि करुणाके करघेपर दर्दकी सफेद अँगुलियोंने मेरी पोशाक वुनी है। हीरोंके दिलमे मौत छिपी है और मोतीके दिलमे खून लगा है।" और उसने उन्हें तीनो सपने वताये।

दरवारियोने यह सुना और एक दूसरेके कानमे वोले—"सचमुच यह पागल है, क्योकि सपना तो आखिर सपना होता है। उनमे सच्चाई तो होती नही कि कोई उनका ध्यान करे। और फिर जो लोग मेहनत करते ही है उनके जीवनसे हमे मतलव ? क्या विना किसानके देखे हम रोटी ही न खाये और विना कलवारसे वात किये हुए शराव ही न पिये ?"

और महासचिवने युवराजसे कहा—"महाराज, इन सब अन्धकारमय

विचारोंको एक ओर हटाइए और राजवस्त्र धारण कीजिए। बिना उसके लोग आपको कैसे राजा समझेगे ?"

युवराजने उनकी ओर देखा—"क्या यह बात सच है ? बिना राज-वस्त्रोके राजाकी कोई पहचान नही ?"

"नही, महाराज वे आपको नही पहचानेंगे !"

"हो सकता है !" युवराजने कहा—"किन्तु मै न यह पोशाक पहनूँगा और न ये मुकुट पहनूँगा। जैसे मै आया था, वैसे ही मै चला जाऊँगा !"

और उसने हरेकसे विदा ली और अपना चर्मवस्त्र निकाला। उसे पहन कर हाथमे गडरियो वाला डण्डा लेकर चल पड़ा।

उसके साथी एक शिशुदासने अपनी नीली आँखें फैलाकर कहा—"महाराज, आपकी पोशाक और राजदण्ड तो है। आपका मुकुट कहाँ है ?"

युवराजने जगली लतरके फूलोका एक गुच्छा तोड लिया और उसको वृत्ताकार मोडकर अपने सरपर रख लिया।

इस प्रकार सजकर वह उस बडे प्रकोष्ठमे गया जहाँ उसकी प्रजा प्रतीक्षा कर रही थी।

लोग हँस पडे। एक बोला—"महाराज, प्रजा अपने सम्राट्‌की प्रतीक्षा कर रही है और आप भिखमंगोका रूप धारण किये है।"

दूसरे लोग नाराज हो गये और बोले—"वह राज्यका अपमान कर रहा है।" लेकिन युवराजने कुछ भी उत्तर नही दिया और उनके बीचसे चुपचाप गुजर गया। बडेसे फाटकको पारकर वह घोडेपर सवार होकर गिरजेकी ओर चल दिया।

राहगीरोने देखा, वे हँसकर बोले—"यह देखो राजाका विदूपक जा रहा है।"

युवराज रुककर बोला—"नही, मै ही राजा हूँ।" और उनसे अपने सपने बताये।

भीडमेसे एक मनुष्य आगे बढा और उससे बडे कड़ुए स्वरोमें कहा—

"महाराज, क्या आप नही जानते कि धनपतियोंके ऐश्वर्य दरिद्रोंके ही जीवनका मूल्य देकर खरीदे जाते हैं। किन्तु किसी मालिकके लिए श्रम करना इससे तो अच्छा ही है कि व्यर्थ हो श्रम किया जाय। फिर हमे खिलायेगा कौन ? आप कर ही क्या सकते हैं ? क्या आप हरेक वस्तुके क्रय-विक्रयपर नियन्त्रण कर सकेंगे ? मुझे तो विश्वास नही है। इसलिए आप महलमे अपने गद्दोपर लौट जाइए, और हमें हमारे भाग्यपर छोड दीजिए।"

"क्या अमीर और गरीब आपसमें भाई-भाई नही है ?" युवराजने पूछा।

"क्यो नही ?" उसने उत्तर दिया—"और अमीरोंके हाथ अपने भाइयोंके खूनसे रगे हुए हैं।"

युवराजकी आँखोमें आँसू छलछला आये और वह असन्तुष्ट जनताकी भीडको चीरता हुआ चल दिया।

जब वह गिरजाघरके दरवाजेपर पहुँचा तो सन्तरियोने भाले अटाकर पूछा—"तू यहाँ क्यो आया है ? सिवा राजाके और कोई यहाँसे नही जा सकता।"

उसका चेहरा क्रोधसे तमतमा गया—"मैं राजा हूँ !" उसने कहा, भाले हटे और राजा बडबड़ाता हुआ अन्दर चला गया।

जब बूढे विशपने उसे हरवाहोकी पोशाकमे आते देखा तो आश्चर्यमे पडकर अपने सिंहासनसे उठ खडा हुआ और बोला—"वत्स, यह क्या राजाओकी पोशाक है ? और किस मुकुटसे मैं तुम्हारा अभिषेक करूँ ? तुम्हारा राजदण्ड कहाँ है ! यह तो तेरे लिए आनन्दका दिन है—पश्चात्तापका तो नही ?"

"तो क्या आनन्दके दिन वह वस्त्र पहने जाते हैं जो निश्वासके डोरोमे बुने हो ?" युवराजने कहा और अपने स्वप्न बताये।

और जब विशप उन्हे सुन चुका तो उसने भवे सिकोडी और कहा—"मेरे वत्स, मै बूढा हूँ। मौतके करीब हूँ और जानता हूँ कि ससारमे बहुत-सी बुराइयाँ है। पहाडोसे भयानक डाकू उतरकर बच्चे चुरा ले जाते है और उन्हे बेच देते है। कुजोमे यात्रियोकी प्रतीक्षामे सिह छिपे रहते है, खेतोमे जगली सुअर फसल रौद डालते है। समुद्री डाकू तटोपर घूमते रहते है। खारे दलदलोमें कोढी रहा करते है। शहरकी सडकोपर भिखमगे घूमते है और कुत्तोके साथ-साथ खाते है। किन्तु तुम क्या कर सकते हो? क्या कोढीको तुम अपनी शय्यापर सुला सकते हो? क्या तुम भिखमगेको अपनी थालीमे खिला सकते हो? क्या सिह तुम्हारे कहनेसे हिंसा छोड़ देगा? फिर जिसने इस ससारमे दु ख बनाया है वह तुमसे अधिक बुद्धिमान् है। तुमने जो किया मै उसकी प्रशसा करता हूँ लेकिन अब तुम अपने महलमें लौट जाओ। सपनोंके बारेमे अब मत सोचो। यह दुनिया इतनी बडी है कि एक ही व्यक्ति उसका भार नही उठा सकता!"

"यह सब तुम इस पवित्र भवनमे कह रहे हो?" युवराजने कहा और वह विशपके पाससे हटकर पवित्र वेदीपर ईसाकी मूर्तिके सम्मुख खडा हो गया!

वह ईसाकी प्रतिमाके सम्मुख खड़ा था। उसके दायें-बायें बड़े-बडे स्वर्ण-कलश रखे थे। वह झुका। हीरेके शमादानोमे मोमदीप जल रहे थे और सुगन्धित धूप पतले गुच्छोमें लहरा रही थी। उसने प्रार्थनामे अपना सर झुकाया। पुरोहित वहाँसे हट गये।

एकाएक बाहरसे शोरकी आवाज़ आई। सहसा बडे-बडे पदाधिकारी शिरस्त्राण पहने, ढाल हिलाते, तलवार खीचे घुस आये। "कहाँ है वह सपनोमे डूबा रहनेवाला कायर? कहाँ है वह जिसने हमारे सर शर्मसे झुका दिये? वह राज्यके अयोग्य है। हम उसे जीवित नही छोड़ेंगे।"

युवराजने अपना सर उठाया और जब वह प्रार्थना कर चुका तो उठा और घूमकर उदास चेहरेसे उनकी ओर देखा।

और लो ! रंगीन वातायनोंसे उसपर धूप खिल गई और किरणोंने उसके शरीरपर ऐसा सुनहला जाल बुन दिया जो उसके राजवस्त्रोंसे अधिक सुन्दर था ।

वह वहाँ उस राजवस्त्रमें खड़ा रहा । हीरेके द्वार खुल गये और उसमें विचित्र रहस्यमय दीप जल उठे । वह वहाँ खडा रहा और प्रकोष्ठमें ईश्वरका प्रकाश भर गया । वाद्य यन्त्र बजने लगे, और गायकोंने गीत गाने प्रारम्भ कर दिये ।

लोग घुटनोंपर झुक प्रार्थना करने लगे । सरदारोंने सर झुका लिया । विशप पीला पड गया और उसके हाथ काँपने लगे । सरदारोंने सर झुका लिया "तू राजाओंका भी राजा है" उसने कहा और चरणोंपर गिर पडा ।

युवराज वेदीपरसे उतरा और जनताको चीरकर घरकी ओर लौट पडा । किन्तु उसके मुखकी ओर देखनेका साहस किसीको भी न हुआ क्यों कि उसपर देवदूतोंकी छाया थी, क्रान्ति थी, सौन्दर्य था ।

तारा-शिशु

तारा-शिशु

एक बार एक चीड़के जंगलसे होकर दो गरीब लकड़हारे अपने घरकी ओर जा रहे थे। जाडेका मौसम था और रातका वक्त। धरतीपर और पेड़की शाखोंपर बरफ बिछी हुई थी और उनकी पगडण्डीके दोनो ओरकी झाड़ियोंकी कोपलें पालेमें ठिठुर रही थी। पानकी पहाड़ीकी निर्झरिणी ठंडसे जम गई थी क्योंकि बर्फके राजाने उसे चूम लिया था।

इतनी ठण्डक थी कि चिड़ियाँ और जानवर भी परेशान थे।

"उफ" पूँछ दबाये हुए भेडियेने कहा—"कितना तकलीफदेह मौसम है। सरकार इसका ध्यान क्यों नहीं रखती ?"

"ट्वी ट्विट !" हरी लिनेट चिड़ियाने कहा—"बुड्ढी धरती मर गई है और उन्होंने उसे कफन ओढ़ा दिया है !"

"नहीं—धरतीका ब्याह होनेवाला है और लोगोंने उसे शादीकी पोशाक पहना दी है।" गौरैयोंने एक दूसरेसे कहा। उनके पाँव ठण्डसे जम गये थे मगर वे सदा हर परिस्थितिको रोमाण्टिक दृष्टिकोणसे देखती थीं।

"उँह, बिलकुल गलत !" भेड़िया गुर्राया—"मैं तुमसे कह रहा हूँ कि यह सब सरकारकी गलती है, और अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगी तो मैं तुम्हें खा डालूँगा !" भेडिया जरा राजनीतिज्ञ था और बहसमें दलीलोंकी कभी उसे कमी नहीं पड़ती थी।

"जहाँ तक मेरे विश्वासका सवाल है," उल्लू बोला, जो कि पूरा दार्शनिक था—"मैं विज्ञान आदिकी कोई जरूरत ही नहीं समझता।

अगर एक चीज ऐसी है तो ऐसी है, और इस वक्त सर्दी पड़ रही है, इसलिए पड रही है !"

सर्दी तो खैर थी ही। गिलहरियाँ अपनी पूँछ फटकार-फटकार कर ठण्डक भगानेकी कोशिश कर रही थी और खरगोश अपने बिलमे घुसकर बैठ गये थे।

बर्फपर नाल जडे हुए जूते रखते हुए और फूँक-फूँककर अँगुलियाँ गरम करते हुए दोनो लकड़हारे चलते गये। एक बार वे एक गड्ढेमे गिर गये और जब वे निकले तो इतने सफेद हो गये थे जैसे आटेकी पनचक्की-का मज़दूर। दूसरी बार वे फिसले और उनकी लकड़ीका गट्ठर खुल गया; और एक बार उन्हे लगा जैसे वे रास्ता भूल गये हैं। वे बेहद घबड़ा गये क्योकि वे जानते थे कि बर्फ कभी पथभूलेपर दया नही दिखलाती। मगर उन्हे सन्तमार्टिनपर भरोसा था जो मुसाफिरोकी मदद किया करते है। वे लकड़हारे फिर घूमे और आखिरकार जब वे जंगलके किनारे पहुँचे तो उन्हें अपने गाँवकी रोशनी दीख पडी।

वे अपनी मुसीबतके छुटकारेसे इतने खुश हो गये कि धरती उन्हें चाँदीका फूल लगने लगी और चाँद सोनेका फूल!

मगर खुश हो चुकनेके बाद वे उदास हो गये क्योकि उन्हें अपनी गरीबीकी याद आ गई और एकने दूसरेसे कहा—"हम क्यों खुश हुए जब हमे मालूम है कि दुनिया अमीरोके लिए है! अच्छा होता हम ठण्डसे अकड़ गये होते या कोई जंगली जानवर हमे खा गया होता !"

"सच है !" उसके साथीने कहा, "कुछ लोगोके पास धनकी बहुतायत है और कुछ लोग भूखो मरते है। दुनियापर आज अन्यायका राज है !"

मगर जब वे आपसमें खड़े हुए बातें कर रहे थे तो एक अजब-सी घटना घटी। आसमानसे एक बहुत चमकदार और खूबसूरत तारा टूटा। वह एक ओरसे फिसलते हुए एक झाडीके पिछवाडे बीस कदमकी दूरीपर गिर पड़ा।

"लो ! यह तो सोना वरस रहा है ।" वे दोनों चीखे और दौड़ पड़े । वे सोनेके लिए इतने उत्सुक थे ।

उनमेंसे एक अपने साथीके मुकाबिलेमें जल्दी पहुँच गया । वह झाड़ियाँ चीरता हुआ वहाँ पहुँचा तो देखा कि सचमुच सफ़ेद बरफ़पर कोई सोनेकी चीज़ पडी थी । वह झुका और उसने हाथमें उसे छुआ । वह एक लबादा था जो सोनहले तारोंसे बुना था और उसमें सलमें सितारे जडे थे । उसने अपने साथीको भी पुकारा और जब वह आ गया तो दोनोंने मिलकर लबादेके बटन खोले ताकि वे सोनेका हिस्सा-बाँट कर लें । मगर अफ़सोस न उसमें सोना था, न चाँदी थी, न कोई खजाना था, महज़ एक छोटा-सा, भोला-सा बच्चा उसमें सो रहा था ।

और उनमे-से एकने कहा—"लो ! हमारी सभी आशाओंपर पानी फिर गया । भला बच्चेसे हमें क्या फायदा ? इसे छोड़कर चुपचाप घर चले चलो ! हम खुद अपने ही बच्चोंके लिए खाना नही जुटा पाते हैं ।"

मगर उसके साथीने जवाब दिया—"नहीं, यह तो बड़ी ख़राब बात है कि हम बच्चेको यहीं बर्फमें गलनेके लिए छोड़ दें । मैं भी ग़रीब हूँ और मेरे यहाँ भी खाना कम है खानेवाले बहुत, मगर फिर भी मैं इसे घर ले जाऊँगा और मेरी स्त्री इसे और पालेगी ।"

उसने बड़े नरम हाथोंसे बच्चेको उठा लिया और उसके चारों ओर लबादा लपेट दिया ताकि उसे सरदी न लग जाय और घरकी ओर चल दिया । उसका साथी रास्ते भर उसकी मूर्खता और भावुकतापर ताज्जुब करता रहा ।

और जब वे गाँवके पास आये तो उसके साथीने कहा—"तूने बच्चेको अपने हिस्सेमें लिया तो यह लबादा मुझे दे दे, ताकि हममें उचित हिस्सा-बाँट हो जाय ।

मगर उसने जवाब दिया—"लबादा न मेरा है न तेरा, यह तो बच्चे-का है ।"

इसपर उसका साथी नाराज़ हो गया और अपने घर चल दिया।

पहला लकड़हारा बच्चेको लेकर अपने दरवाज़ेपर पहुँचा। औरतने दरवाजा खोला और उसका मुसकुराकर स्वागत किया और खुद पीठपरसे लकड़ीका गट्ठर उतार लिया।

लकड़हारा वोला—"मैंने जंगलमे आज एक नायाव चीज पाई है और उसे तुझे सहेजने ले आया हूँ!"

"क्या लाये हो!" स्त्रीने उत्सुकतासे पूछा—"मुझे दिखाओ!"

"भगवान् तुम्हारा भला करे!" उसने कहा—"क्या हमारे वच्चे कम थे कि तुम और एक वच्चा ले आये! हम भला इसे कैसे पालेगी?" और वह नाराज होने लगी!

"मगर यह तो तारा-शिशु है!" उसने जवाव दिया—और उसने वताया कि कैसे अजव तरीकेसे यह वच्चा उसे मिला।

मगर इसपर भी वह शान्त न हुई और उसका मजाक उडाते हुए ग़ुस्सेमे वोली—"हमारे वच्चे भूखो मरेंगे और दूसरोके वच्चे पेट भरेंगे? कौन हमारी पर्वाह करता है? हमे कौन खाना देता है?"

"ईश्वर पशु-पछी तकका ध्यान करता है, हम तो खैर आदमी है!"

"मगर पशु-पछी भी जाडेमे अकडकर मर जाते है और आज कल जाडा ही तो है।"

लकडहारेने कोई जवाव न दिया और चुप-चाप वैठा रहा। जंगलकी ओरसे ठण्डी हवाका एक झोंका आया और वह काँप गई।

दरवाज़ा क्यो नही वन्द कर देते। इतनी ठण्डी हवा आ रही है।"

"जिस घरके रहनेवालोका दिल सर्द हो जाता है वहाँ हमेशा सर्द वर्फानी झोके वहते हैं!" उसने कहा!

औरतने कोई जवाव न दिया वह महज आगके और नजदीक खसक आई। थोड़ी देर वाद वह मुडी और आँखोमें आँसू भरकर उसने अपने पतिकी ओर देखा। उसने जल्दीसे उठकर वह वच्चा उसकी गोदमे रख

दिया। लकडहारिनने उसे चूमा और अपने बच्चोंके खटोलेपर सुला दिया। दूसरे दिन लकडहारेने उस सुनहले लबादेको और बच्चेकी गर्दनमें पड़ी हीरेकी जंजीरको एक सन्दूकमें बन्द कर दिया।

इस तरह धीरे-धीरे तारा-शिशु उसी लकड़हारेके बच्चोंके साथ बडा हुआ। वह उन्हींके साथ खाना खाता था और उन्हींके साथ खेलता था। हर रोज़ उसका सौन्दर्य बढता जाता था। गाँववाले दग थे क्योंकि वे कुरूप और अनाकर्षक थे, जब कि ताराशिशु हाँथी-दाँतकी तरह गोरा था और उसके बाल सुनहले छल्लोंकी तरह थे, उसके होठ गुलाबकी पंखु-ड़ियोंकी तरह थे और उसकी आँखें नरगिसकी तरह थी।

मगर उसका सौन्दर्य उसके लिए फायदेमन्द नहीं साबित हुआ। वह घमण्डी, स्वार्थी और क्रूर हो गया। वह लकडहारे तथा दूसरे देहातियो-के बच्चोंको नीची निगाहसे देखता था, क्योंकि वे छोटे खानदानके थे, जब कि वह खुद एक तारेकी सन्तान था। वह खुद उनका मालिक बन बैठा और उन्हें अपना नौकर समझने लगा। उसके मनमे गरीबोंके लिए कुछ भी रहम नहीं था और न वह अन्धे या लँगडे-लूलोंके प्रति ही कुछ भी सहानु-भूति करता था। वह उनपर पत्थर फेंकता था और उन्हे भगा देता था। वह अपनी ख़ूबसूरतीपर घमण्ड करता था और दूसरोंका मज़ाक उड़ाता था। वह गर्मियोंमें झीलके किनारे लेट जाता था और खुद अपना प्रति-बिम्ब देखकर खुशीसे हँस पडता था।

कभी-कभी लकडहारा और उसकी स्त्री उसे डाँटा करते थे और पूछते थे—"हम लोगोंने कभी तेरे साथ ऐसा बर्ताव नहीं किया जैसा तू दूसरोंके साथ करता है। तू क्यों उन लोगोंके साथ क्रूरताका व्यवहार करता है जिन्हें दयाकी ज़रूरत है।"

एक बार बुड्ढे पुरोहितने उसे जीवोंसे प्रेम करनेका उपदेश दिया—

"जानवरोमें तुम्हारी जैसी जान है। उनको कभी नुकसान न पहुँचाओ। चिड़ियोंकी आज़ादीमें कभी वाधा न पहुँचाओ। ईश्वरने हर जानवरको आजाद और खुश वनाया है, तुम्हे उनका दिल दुखानेका क्या हक है ?"

मगर ताराशिशु कभी उनकी वातोपर ध्यान नही देता था, उन्हें मुँह चिढाकर वह वापस चला आता था और साथियोंपर हुकूमत चलाता था। उसके साथी उसका कहना मानते थे क्योंकि वह .खूवसूरत था, तेज़ दौड़ता था और सुरीला गाना गाता था। जहाँ कही ताराशिशु उन्हें ले जाता था, वे जाते थे और जो कुछ उनसे कहता था, वे करते थे। जव वह भिखा-रियोपर पत्थर फेंकता था तो वे लोग भी हँसते थे। हर वातमे वह अपनी हुकूमत चलाता था और इसलिए वे भी उतने ही क्रूर वन गये।

एक दिन गाँवसे एक गरीव भिखारिन गुज़री। उसकी पोशाक फटी हुई थी, उसके पैरोसे .खून वह रहा था। वह इतनी थकी थी कि एक पेड़ के नीचे थककर वैठ गई।

किन्तु जव ताराशिशुने उसे देखा तो उसने अपने साथियोंसे कहा—"देखो उस छतनार पेड़के नीचे एक गन्दी भिखारिन वैठी हुई है। कितनी भद्दी है वह ! चलो उसे गाँवके वाहर खदेड़ आवें !"

वह उसके नज़दीक गया और उसपर पत्थर फेंकने लगा और मुँह चिढाने लगा। भिखारिनकी आँखोमे त्रासकी छाया थी और वह उसे एक-टक देखने लगी। लकड़हारा ज़रा दूरपर लकड़ीके गट्ठर वाँध रहा था। जव उसने ताराशिशुकी करतूत देखी तो वह भागकर आया और उसे डाँटने लगा—तू कितना वेरहम है ? भला इस औरतने तेरा क्या विगाड़ा है जो तू इसे इस तरह सता रहा है ?"

ताराशिशु .गुस्सेसे लाल हो गया और पैर पटककर वोला—"तू

मुझसे यह सवाल पूछनेवाला कौन है ? मै तेरा लड़का थोडे ही हूँ जो यह रोब सहूँ !"

"ठीक है !" लकड़हारेने कहा—"मगर जब मैंने तुझे जगलमें पाया था तो मैंने तुझपर कितनी दया दिखलाई थी !"

और जब भिखारिनने यह वाक्य सुना तो वह चीख पड़ी और बेहोग हो गई। लकडहारा उसे घर ले गया और उसकी औरतने भिखारिनकी शुश्रूपा की जिससे उसे होश आ गया। उसके बाद लकडहारेने उनके सामने कुछ खानेका सामान रक्खा।

मगर उसने कुछ भी नही खाया-पीया और लकडहारेने कहा—"क्या तुमने यह बच्चा जंगलमें पाया था ? क्या यह दस साल पहलेकी बात है ?"

और, लकडहारेने कहा—"हाँ, मैंने दस साल पहले यह बच्चा जगलमे पाया था !"

"और इसके साथ क्या निशानी थी ?" भिखारिनने व्याकुल होकर पूछा—"क्या उसके गलेमें कोई जजीर थी ? क्या वह कोई जरीदार लबादा ओढ़े था ?"

"हाँ, बिल्कुल यही निशानी थी !" लकडहारेने कहा और उसके बाद उसने सन्दूकसे निकालकर दोनो चीजें उसे दिखलाई !

जब उसने वे दोनो चीजें देखी तो वह खुशीसे रोने लगी—"वह मेरा बच्चा है जिसे मै जगलमें छोड़ आई थी। जल्दी बुलाओ उसे मै उसकी खोजमें सारी दुनिया घूम आई हूँ !"

लकडहारा बाहर गया और ताराशिशुको बुलाकर उसने कहा—"घर चल। वहाँ तेरी माँ बैठी तेरा इन्तजार कर रही है !"

वह ताज्जुब और खुशीसे पागल होकर अन्दर दौड़ गया। मगर जब उसने उसे देखा तो वह नफरतसे बोला—"कहाँ है मेरी माँ ? यह तो वही भिखारिन है !"

"मैं तेरी माँ हूँ बेटा !" भिखारिनने प्यारसे कहा।

"छिः, तुम मेरी माँ हो—तुम कितनी गन्दी और ग़रीब हो! मैं तुम्हारा लड़का नही हो सकता! जाओ भागो यहाँ से!"

"नही बेटा तू मेरा ही लड़का है!" उसने घुटने टेककर बाहें फैलाकर कहा—"डाकुओंने तुझे चुराकर जंगलमे छोड़ दिया था। मगर तुझे देखते ही मै पहचान गई और तेरी निशानियाँ भी मिल गई। तू मेरा ही बेटा है। भैया! चल मेरे साथ, लाल! मै सारी दुनियामें तुझे खोज-खोज कर हार गई!"

मगर ताराशिशु अपनी जगहसे नही हिला। सारे कमरेमें सन्नाटा था महज़ उस औरतकी सिसकियाँ वातावरणमें गूँज रही थी।

और अन्तमें वह बोला—"अगर तू सचमुच ही मेरी माँ है तो भी अच्छा हो कि तू यहाँसे चली जा और मुझे शर्मिन्दा न कर क्योंकि मैं समझता था कि मै किसी भिखारिनकी नहीं वरन तारोकी सन्तान हूँ। इसलिए तू यहाँसे चली जा।"

"हाय मेरे लाल! तू कितना निर्मोही है।" भिखारिन बोली—"मैंने छातीपर पत्थर रखकर तुझे ढूँढ़ा है! चलनेके पहले क्या तू मुझे चूमेगा भी नही!"

"मैं और तुझे चूमूँगा!—तेरे बजाय मैं किसी छिपकली या साँपको चूमना ज़्यादा पसन्द करूँगा!

भिखारिन उठी और सिसकते हुए जंगलकी ओर चली गई। ताराशिशु ने देखा कि वह चली गई तो वह बहुत ख़ुश हुआ और हँसते हुए अपने साथियोंमें खेलने चला गया।

•

मगर जब उसके साथियोंने उसे देखा तो वे मुँह चिढ़ाकर बोले—"अरे, तू तो छिपकलीकी तरह बदशकल और साँपकी तरह घिनौना है!

जा, भाग, हम लोग तेरे साथ नहीं खेलेंगे !" और उन्होंने उसे बगियासे बाहर भगा दिया।

ताराशिशु अचरजमें पड़कर सोचने लगा—"यह लोग ये क्या कह रहे हैं ? मैं अभी झीलमें जाकर अपनी परछाई देखता हूं !"

और जब उसने झीलके पानीमें झाँका तो उसने देखा कि उसका चेहरा छिपकलीकी तरह था और उसका बदन साँपकी तरह टेढ़ा हो गया था। वह घासपर लेट गया और रोने लगा, और बोला—"सचमुच यह मेरे पापोंका फल है। मैंने अपनी माँका अपमान किया और उससे घमण्ड और क्रूरताका वर्ताव किया। मैं जाऊँगा और सारे संसारमें उसे ढूंढूंगा, बिना उसके प्यारके मुझे चैन नहीं मिलेगा।

इसी समय लकड़हारेकी लड़की आई और उसने प्यारसे कहा "क्या हुआ अगर तुम्हारा सौन्दर्य नष्ट हो गया ! तुम मेरे साथ रहो मैं तुम्हारी हँसी नहीं उड़ाऊँगी !"

और उसने उससे कहा—"नहीं, मैंने अपनी माताके साथ बेरहमीका व्यवहार किया है और यह शाप मुझे वास्तवमें उसीकी सजा है। मैं सारी दुनियामें उसे ढूंढूंगा, उससे क्षमा माँगे बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा !"

वह जंगलमें जाकर माँको पुकारने लगा मगर उसकी पुकारका कोई भी जवाब नहीं मिला। दिनभर वह चीखता रहा और जब शाम हुई तो वह जमीनपर लेट गया। सभी पशु-पक्षी उसपर हँसते हुए अपने घोंसलों-को चल दिये क्योंकि उसने हमेशा उन्हें सताया था। केवल छिपकलियाँ उसे देखती रहीं और साँप उसके पास रेंगते रहे।

सुबह होते ही उसने पेड़से तोड़कर कड़ुये बेर खाये और आगे चल दिया। रास्तेमें सबसे वह माँके बारेमें पूछता जाता था।

उसने चूहेसे पूछा—"तू तो जमीनके अन्दर जा सकता है, बता मेरी माँ कहाँ है ?"

चूहेने जवाव दिया—"तूने पहले ही मेरी आँखें फोड़ दी अव मै तो देख भी नही सकता !"

उसने चीड़के पेडमें रहनेवाली छोटी गिलहरीसे पूछा—"तुम्हें मालूम है मेरी माँ कहाँ है ?"

गिलहरीने जवाव दिया—"तूने मेरी माँको तो मार डाला—क्या अव अपनी माँको भी इसीलिए ढूँढ रहा है ?"

ताराशिशु रो पड़ा और दिलमें उन सवसे क्षमा माँगते हुए आगे चल पडा। दूसरे दिन वह जंगल पारकर मैदानमे आ गया।

और, जव वह गाँवोंसे गुज़रता था तो वच्चे उसका पीछा कर और उस पर पत्थर फेंकते थे। लोग उसे सरायमे नही रुकने देते थे, किसान उसे खेतोसे नही गुजरने देते थे और दुनिया उससे नफरत करती थी ! तीन साल तक घूमते रहनेके वाद भी उसे उसकी माँ नही मिली। कभी-कभी वह उसे दूर सडकपर वैठी हुई दीख पड़ती थी, वह उसको पुकारकर पीछे दौड़ता था, उसके पैरमे कंकड़ चुभ जाते थे और खून वहने लगता था, मगर कभी भी वह अपनी माँके नज़दीक तक नही पहुँच पाता था। राहगीर इसे उसकी नजरोका धोखा वतलाते थे और उसका मज़ाक उड़ाते थे।

तीन साल तक वह सारी दुनियामें घूमता रहा मगर दुनियामे न प्यार था, न दया थी और न सहानुभूति। यह दुनिया वैसी ही थी जैसा कि वह अपने सौन्दर्यके जमानेमे था।

एक दिन शामको वह नदीके किनारे एक शहरके समीप आया जिसके चारों ओर एक मजवूत परकोटा था। वह थका और परेशान था मगर वह अन्दर गया। किन्तु द्वार-रक्षक सिपाहियोंने भाले अड़ाकर उसे रोक दिया और पूछा—"तू क्यो शहरमे जाना चाहता है ?"

मैं अपनी माँको ढूँढ रहा हूँ ! तुम लोग मुझे अन्दर जाने दो । सम्भव है वह यहीं हो ।" उसने जवाब दिया ।

मगर वे लोग उसपर हँसने लगे । उनमेंसे एक अपनी ढाल नीचे रख कर बोला—"सच तो यह है कि अगर तेरी माँ तुझे देखेगी तो भी खुश न होगी, क्योंकि तू गन्दी छिपकलियोंसे ज्यादा बदसूरत और साँपोंसे ज्यादा घिनौना है । जा भाग यहाँसे ! तेरी माँ इस शहरमें नहीं है !'

जब वह रोते हुए वापस जा रहा था तो एक व्यक्ति जिसके हथियारों पर फूल बने थे और जिसके शिरस्त्राणपर पंखदार शेर बने थे, आया और द्वाररक्षकोंसे पूछने लगा कि कौन अन्दर आना चाहता था । उन्होंने कहा—"वह एक भिखमंगा लड़का था और हम लोगोंने उसे भगा दिया।"

"नहीं !" वह हँसते हुए बोला—"उसे पकड़कर बेच दो । उसके दामोंसे कमसे कम हमारी शराबका इन्तजाम हो जायगा ।"

और एक बुड्ढा और खूँखार आदमी जो बगलसे गुजर रहा था, बोला कि—"मैं उसे खरीद लूँगा !" और सचमुच वह उतना दाम देकर ताराशिशुको अपने साथ घसीट ले गया ।

कई सड़कोंसे गुजरनेके बाद वह एक मकानके सामने पहुँचा जिसके सामने एक अनारका पेड़ था । बुड्ढेने एक हीरेकी अँगूठीसे दरवाजा छुआ और वह खुल गया । उसने देखा कि बादमें ५ ताँबेकी सीढ़ियाँ उतरनेके बाद एक बाग था जिसमें गेरुवे गमलोंमें पोस्तके फूल लगे थे । उसके बाद बुड्ढेने एक छायेदार रेशमी रूमालसे ताराशिशुकी आँखें बाँध दी और तब उसे आगे ले चला । जब रूमाल खोला गया तो उसने देखा कि वह एक तहखानेमें है ।

बुड्ढेने उसे कुछ खाना दिया और एक प्यालेमें पानी । जब वह खा-पी चुका तो बुड्ढा बाहरसे ताला बन्द कर चला गया ।

बुड्ढा वास्तवमें लीबियाका मशहूर जादूगर था और उसने मिस्रके मकबरोंमें रहनेवाले पीरोंसे जादू सीखा था । उसने कहा—' शहरके पास-

के एक जगलमें सोनेके तीन टुकडे है—सफेद, पीला और लाल। जा और जाकर सफेद टुकडा उठा ला। अगर तू उसे आज नही ला सका तो मै तुझे सौ कोडे लगाऊँगा। मै बाग़के दरवाज़ेपर तेरा इन्तज़ार करता रहूँगा।" और उसने उसकी आँखोमें छायेदार रेशमी रूमाल बाँधकर पोस्तके बाग और ताम्बेकी सीढियोपर घुमाते हुए घरसे निकाल दिया।

ताराशिशु शहरके बाहर गया और जादूगरके बताये हुए जगलमें पहुँचा।

बाहरसे देखनेपर यह जंगल बहुत ही आकर्षक लगता था। उसमे महकदार फूल थे, सुरीली आवाज़वाली चिड़ियाँ थी—ताराशिशु खुशीसे उसके अन्दर गया! मगर फिर भी जगलके सौन्दर्यका उसे कुछ आनन्द नही मिल पाया, क्योकि जहाँ वह जाता था ज़मीनसे काँटे उभर आते थे और चुभ-चुभकर उसे परेशान कर डालते थे। न उसे कही भी वह सफेद सोनेका टुकडा ही मिला जिसे वह सुबहसे दोपहर और दोपहरसे शाम तक ढूँढता रहा—शामके वक़्त वह शहरकी ओर रोते हुए मुडा क्योकि वह जानता था कि क्या सज़ा मिलनेवाली है।

मगर जब वह जंगलके किनारे पहुँचा तो उसने दर्दकी तेज चीख़ सुनी और वह फौरन अपना दर्द भूलकर वहाँ पहुँचा। उसने देखा कि एक खरगोश किसी शिकारीके जालमे फँस गया है।

ताराशिशुको उसपर रहम आ गया और उसने उसे आज़ाद करते हुए कहा—"मै गुलाम भले ही होऊँ मगर मै तुम्हें ज़रूर आज़ाद कर दूँगा।"

और खरगोशने उसे जवाब दिया—"सचमुच तूने मुझे आज़ाद किया, मै तेरे लिए क्या कर सकता हूँ?"

ताराशिशुने उससे कहा—"मैं एक सफेद सोनेका टुकड़ा ढूँढ़ रहा हूँ मगर मुझे नही मिला। और अगर वह मुझे नही मिलेगा तो मेरा मालिक मुझे बहुत मारेगा!"

"मेरे साथ आ, मैं तुम्हें वह सोनेका टुकड़ा दूँगा !"

वह खरगोशके साथ गया और लो, एक शहवलूतके कोटरमें सफ़ेद सोनेका टुकड़ा रक्खा था। वह खुशीसे उछल पड़ा और खरगोशने बोला—"जो मैंने तेरे लिए किया उससे कहीं ज्यादा तूने मेरे लिए किया है—मैं तेरा बहुत-बहुत कृतज्ञ हूँ !"

"नहीं, ऐसी क्या बात है !" खरगोशने जवाब दिया—"तूने मेरे साथ जो किया था, मैंने भी अपना फ़र्ज़ समझकर वही किया !" और उसके बाद खरगोश भाग गया।

शहरके दरवाज़ेपर एक बीमार फ़कीर बैठा था। जब उसने ताराशिशु-को आते हुए देखा तो उसने अपना लकड़ीका प्याला खड़काया। उसको पुकारकर कहा—"मुझे पैसा दो बाबू—मैं भूखमे मर रहा हूँ। लोगोंने मुझे शहरसे निकाल दिया, किसीने मुझपर दया नहीं की !"

"अफ़सोस ! मेरे पास केवल एक सोनेका टुकड़ा है और अगर मैं वह तुझे दूँगा तो मेरा मालिक मुझे मारेगा !"

मगर भिखारीने उससे मिन्नत की तो ताराशिशुने उसे वह टुकड़ा दे दिया।

जब वह जादूगरके घर आया तो अन्दर आकर जादूगरने पूछा—"क्या तुम वह सोनेका टुकड़ा लाये हो ?" जब उसने जवाब दिया "नहीं !" तो जादूगरने उसे बेहद मारा और ख़ाली प्याला उसके सामने रखकर कहा—"लो खाओ" और खाली गिलास रखकर कहा—"लो पियो !" और फिर उसे तहख़ानेमें बन्द कर दिया।

दूसरे दिन जादूगर आया और बोला—"अगर आज तू पीले सोनेका टुकड़ा नहीं लाया तो मैं तुझे ३०० कोड़े मारूँगा !"

ताराशिशु जंगलमें गया और दिनभर उसने सोनेका टुकड़ा ढूँढ़ा मगर

शाम हो गई और वह असफल रहा। शामके वक्त वह एक डालसे टिककर रोने लगा। इतनेमें वह खरगोश दीख पड़ा।

"तू क्यों रो रहा है ?" उसने पूछा—

"मै एक पीले सोनेका टुकड़ा ढूंढ़ रहा हूँ और अगर मुझे वह नही मिलेगा तो मेरा मालिक मुझे वहुत मारेगा !"

"मेरे साथ आओ !" खरगोशने कहा और वह उसे एक तालावके किनारे ले गया जिसके तलेमे सोनेका टुकड़ा रक्खा था।

"ओह ! मै तुम्हें कैसे धन्यवाद दूँ !" ताराशिशुने कहा।

"कुछ नहीं ! पहले तुम्हीने मेरी जान वचाई थी !" खरगोश कहकर भाग गया।

ताराशिशुने वह पीले सोनेका टुकड़ा लिया और घर चला। रास्तेमे दरवाज़ेपर वही फकीर वैठा था। वह दौडा और उसने अपना प्याला फैला दिया। ताराशिशुने कहा—"मेरे पास एक ही सोनेका टुकड़ा है। अगर मै उसे घर नही ले जाऊँगा तो जादूगर मुझे वहुत मारेगा।" मगर फ़क़ीर गिड़गिड़ाता रहा और ताराशिशुने उसे वह टुकड़ा दे दिया।

जव वह घर पहुँचा तो जादूगरने उसे अन्दर लाकर पूछा—"क्या तू सोनेका टुकड़ा लाया है ?"

"नही" ताराशिशुने जवाव दिया—जादूगरने उसे वहुत मारा और जंजीरोंमें कसकर तहखानेमें वन्द कर दिया।

दूसरे दिन जादूगर फिर उसके पास आकर वोला—"अगर तू आज लाल सोनेका टुकड़ा ला देगा तो मैं तुझे आजाद कर दूँगा वरना मैं तुझे मार डालूँगा !"

ताराशिशु जंगलमें गया और दिन-भर उस सोनेके टुकड़ेकी खोज करता रहा। मगर शामको भी अव उसे कुछ न मिला तो वह वैठकर रोने लगा। उसी वक्त खरगोश आ गया।

"ओह ! तू जिस सोनेके लिए रो रहा है वह तेरे ही पासकी खोहमे रक्खा है !"

"आह ! मै तुझे कैसे धन्यवाद दूँ । तूने आज मुझे तीसरी वार सहायता दी है !"

"कुछ नही ! तूने पहले मुझपर दया की थी !" खरगोश बोला और भाग गया !

ताराशिशुने खोहसे सोना निकाला और शहरकी ओर चल दिया । जब फकीरने उसे आते हुए देखा तो वह फाटकके बीचो-बीच खडा होकर बोला—"मुझे कुछ दो मालिक ! वरना मै भूखो मर जाऊँगा !"

ताराशिशुने वह लाल सोना उसके प्यालेमे डाल दिया और कहा—"तुम्हारी जरूरत मेरी जरूरतसे वडी है !" मगर वह मन-ही-मनमे अपनी जिन्दगीसे मायूस हो चुका था ।

किन्तु लो ! ज्यो ही वह फाटकसे निकला द्वारपालोंने उसे झुककर नमस्कार किया और कहा—"हमारा मालिक कितना सुन्दर है !" नागरिकों-की एक भीड़ उसके पीछे लग गई और बोली—"सचमुच दुनियामे कोई इससे ज्यादा सुन्दर नही है !"

ताराशिशु रोने लगा और बोला—"ये लोग मुझपर व्यंग्य कस रहे है !" भीड इतनी ज्यादा बढ गई थी कि वह राह भूल गया और एक राजमहलके पास पहुँच गया ।

राजमहलके फाटक खुले और राज्याधिकारी और पुरोहित उसके स्वागतके लिए निकल आये—"आप हमारे मालिक हमारे राजकुमार है जिनकी हमलोग इतने दिनोंसे प्रतीक्षा कर रहे थे ।"

ताराशिशुने उन्हे जवाव दिया—"मै राजकुमार नहीं, एक भिखारिन-

की सन्तान हूँ। तुम कहते हो मै सुन्दर हूँ, मेरी बदसूरतीका मजाक मत उड़ाओ !"

वह व्यक्ति, जिसके हथियारोपर फूल और गिरस्त्राणपर उड़न-शेर बना था, बोला—"आप कैसे कहते है कि आप बदसूरत है ?"

और ताराशिशुने उसकी आँखोमे अपनी छवि देखी। उसका सौन्दर्य वापस आ गया था।

पुरोहित और अधिकारीगण उसके सामने झुके और बोले—"यह भविष्य वाणी थी कि आजके दिन साकार सौन्दर्य हमपर राज करने आयेगा। आप यह मुकुट लीजिए और यह राजदण्ड, और हमपर राज कीजिए !"

मगर वह बोला—"मै इस योग्य नही हूँ। मैंने अपनी जननीका अपमान किया है और जबतक मै उसे ढूँढ़ नही लूँगा तबतक मुझे चैन नही मिलेगा। तुम मुझे मुकुट और छत्र दे रहे हो मगर मै सारी दुनिया घूमकर उसे ढूँढूँगा और उससे क्षमा मागूँगा।" और इतना कहनेके बाद ज्योंही उसने फाटककी ओर सर घुमाया तो देखा कि भीड़मे उसकी भिखारिन माँ खड़ी है और उसके बगलमे वही फ़कीर खड़ा है।

वह खुशीसे चीख पड़ा और दौडकर माँके पैरोपर पड गया और अपने आँसूसे उसके जख्म भिगोने लगा।

"माँ !" उसने सिसकते हुए कहा—"माँ, घमण्डके क्षणोमे मैंने तुम्हे ठुकराया, आज मै तुम्हारे स्नेहकी भीख माँग रहा हूँ। मैंने तुम्हे तिरस्कार किया, तुम मुझे वात्सल्य दो !" मगर भिखारिन कुछ नही बोली।

वह दौड़कर फ़कीरके पैरपर गिरकर बोला—"मैंने तीन बार तुमपर दया की, आज तुम मेरी माँको मना दो !" मगर फ़कीर भी कुछ नही बोला !

वह फिर सिसकता हुआ बोला—"माँ, अब मुझसे नही सहा जाता। मुझे क्षमा कर दो, माँ !"

भिखारिनने उसके सिरपर हाथ रक्खा और कहा "उठो !"—फ़क़ीरने उसके सिरपर हाथ रक्खा और कहा—"उठो !" और वह उठकर खड़ा हुआ और उसने देखा—एक राजा और रानी खड़े है ।

और रानीने कहा—"यह तेरे पिता हैं जिसपर तूने दया की थी !"

और राजाने कहा—"यह तेरी माँ हैं जिसके जख्मोको तूने आँसुओंसे धोया है !"

उन्होंने उसका मस्तक चूमा और वे उसे महलमें ले आये । उन्होंने उसे सुन्दर पोशाक पहनायी, उसके माथेपर मुकुट रक्खा, उसके हाथमे राजदण्ड दिया और वह उस शहरका राजा हो गया । उसने दयाका शासन किया, प्रजाको सन्तुष्ट रक्खा और लकड़हारेके परिवारको बड़ा आदर और धन दिया । उसने दया और प्रेमका उपदेश दिया । भूखोको रोटी और नंगोको कपड़ा दिया और देशमे सुख-शान्तिकी स्थापना की ।

मगर उसपर इतने दुःख पड चुके थे और उनके कारण वह इतना टूट चुका था कि तीन सालमें ही मर गया, उसके बाद जो राजा आया उसने वही अत्याचार करने शुरू कर दिये ।

मूर्ति और मनुष्य

मूर्ति और मनुष्य

नगरमें उत्तरकी ओर एक ऊँचेसे स्तम्भपर सुखी· राजकुमारकी प्रतिमा स्थापित थी। मूतिपर हल्का स्वर्ण-पत्र मढा था, आखोंके स्थानपर दो चमकदार नीलम थे और तलवारकी मूठमें एक वड़ा-सा लाल जड़ा था।

लोग उस प्रतिमाके सौन्दर्यकी वड़ी प्रशंसा करते थे। एक नगर-समिति-का सदस्य, जो अपनेको कलाका पारखी वतलाना चाहता था, कहता था—"यह प्रतिमा इतनी ही सुन्दर है जितना दिशा-सूचक यन्त्र।" फिर इस डरसे कि लोग उसे अयथार्थ पलायनवादो न समझ लें वह फौरन कह देता था—"हाँ, है तो यह कलावस्तु, किन्तु उतनी भी उपयोगी नही जितना दिशासूचक यन्त्र।"

एक वुद्धिमती माँ अपने जिद्दी वच्चेको समझाती थी "तुम भी राज-कुमारकी तरह क्यो नही वन जाते? भला उसकी प्रतिमा कभी किसीसे चन्द-खिलौना माँगती है?"

"मुझे खुशी है कि कम-से-कम दुनियामें कोई तो सुखी और शान्त है!" मूर्तिकी ओर देख कर एक निराश मनुष्य कहा करता था।

चर्चमें पढ़नेवाले शिशु छात्र, लाल मखमली कोट और सफेद धुले हुए रूमाल गलेमें पहनकर आते थे और उसे देखकर कहते थे—"वाह! यह तो देवदूत-सा लगता है।"

"तुम्हें कैसे मालूम कि देवदूत कैसा होता है?" उनके गणित अध्यापक ने पूछा—"तुमने कभी देवदूत देखा है?"

"क्यो नही! रोज़े सपनेमे हमारी शय्याके पास देवदूत खड़े रहते हैं!"

गणित अध्यापक दिलमें कुढ़ गया क्योंकि वह उन लोगोंको बहुत ही नापसन्द करता था जो सपने देखा करते थे।

एक रातको उस शहरके ऊपरसे एक गौरैया उड़ कर गयी। उसके साथी कई सप्ताह पहले दक्षिणकी ओर चले गये थे किन्तु वह पीछे रुक गयी थी क्योंकि वह एक वेतके कुंजको प्यार करती थी। वह वसन्तके पहले सप्ताहमे मादक पंखोंपर जब एक पीली तितलीके पीछे-पीछे नदीके किनारे उड़ रही थी तो उसने उस वेंतको देखा। वह उसके लम्बे, पतले शरीरसे आकर्षित होकर वही उतर गयी और बात करने लगी—

"तुम मुझे प्यार करने दोगे ?" गौरैयाने पूछा। वेतने धीमेसे सिर हिला दिया। वह उसके चारो ओर उड़ने लगी। कभी-कभी उसके पंख जलसे छू जाते थे और चाँदीकी हल्की लहरियाँ मुसकरा देती थी। यही उसका प्रणय सकेत था और यह सारे मधुमास तक चलता रहा।

"यह बिलकुल बेकारका सम्बन्ध है !" दूसरी गौरैयोंने कहा—"उसके पास न रुपये हैं न अमीर सम्बन्धी !" इसलिए पतझड़ आते-आते अन्य सभी गौरैयाँ उड़ गयी। यह गौरैया बहुत अकेलापन महसूस करने लगी और इस प्यारसे उसकी तबीयत भी ऊब गई। "यह बोलना तो जानता ही नहीं—और इसमे कोई व्यक्तित्व भी नही ! हवाके हर झोंकेपर यह झूम उठता है। सच बात तो यह है कि यह बिलकुल घरेलू है और मैं हूँ सदा उड़नेवाली। मेरा इसका क्या साथ ?" उसने पूछा—"क्या तुम मेरे साथ आओगे ?"

वेंतने सिर हिला दिया।

"ओह, मैं अभी तक प्रेममे मूर्ख बन रही थी !" उसने चीख कर भावुक स्वरमें कहा—"मैं अब दक्षिणमें जा रही हूँ निराश होकर ! अच्छा अलविदा !"

दिनभर उड़नेके बाद वह रातको नगरके समीप पहुँची। "मैं ठहरूँ कहाँ ?" उसने कहा। "मैं समझ रही थी शहर मेरा स्वागत करेगा !"

इतनेमें उसने स्तम्भासीन मूर्ति देखी।

"आहा ! मैं यहीं ठहरूँगी ! यह बहुत अच्छा स्थान है यहाँ काफी साफ हवा आ रही है।" और वह मूर्तिके पैरोंके पास उतर पडी।

उसने चारो ओर देखकर कहा—"मेरा शयनागार सोनेका है।" और वह पखोमे मुँह छिपाकर सोने जा रही थी कि एक पानीकी बडी-सी बूँद टपसे उसपर गिर पडी। "ताज्जुब है" उसने कहा "आकाशमे एक भी बादल नही है—तारे साफ चमक रहे हैं—फिर भी पानी बरस रहा है—बेंतको वर्षा पसन्द थी—मगर आह ! वह तो बडा स्वार्थी था।"

इतनेमें दूसरी बूँद गिरी—"इस प्रतिमासे फ़ायदा क्या अगर यह वर्षा भी नही रोक सकती।" उसने कहा—"चलो कोई दूसरा आश्रय-स्थान ढूँढें।"

उसने पंख खोले और तीसरी बूँद गिर पड़ी। उसने ऊपर देखा।

राजकुमारकी आँखोमें आँसू थे और उसके सुनहले गालपर आँसू ढलक रहे थे। उसका चेहरा इतना भोला था कि गौरैयाको दया आ गई।

"तुम कौन हो ?" उसने पूछा !

"मै सुखी राजकुमार हूँ !"

"फिर तुम रो क्यो रहे हो !" पख फड़फड़ाकर गौरैयाने कहा—"तुमने तो मुझे बिल्कुल भिगो दिया !"

"जब मै जीवित था"—मूर्तिने उत्तर दिया—और मेरे वक्षमें मनुष्यका हृदय धड़कता था तब मेरा आँसुओसे परिचय नही हुआ था। मैं आनन्द-महलमे रहता था जहाँ दुःखको प्रवेश करनेकी इजाज़त नही है। दिनमें मैं अपने उद्यानमें विलास करता था और रातको नृत्यमें लगा रहता था। मेरे उद्यानके चारो ओर एक प्राचीर थी किन्तु मेरे चारों ओर इतना सौन्दर्य

था कि मैने कभी वाहर देखनेका प्रयत्न नही किया। मै जीवित रहा और मै मर गया। आज जव मै मर गया हूँ तो उन्होने मुझे इतने ऊँचेपर स्थापित कर दिया है कि मै ससारकी सारी कुरूपता और दुख-दर्द देख सकता हूँ। मेरे ही नगरमे इतना दु ख है कि यद्यपि मेरा हृदय जस्तेका है मगर फिर भी फटा जा रहा है!"

"अच्छा तो राजकुमार ठोस सोनेका नही है!" गौरैयाने सोचा—मगर वह इतनी शिष्ट थी कि उसने यह वात ज़ोरसे नही कही।

"दूर, वहुत दूर—" मूर्ति अपनी सुनहली आवाज़मे कहती रही—"एक गन्दो-सी गलीमें एक टूटा-फूटा मकान है, उसकी एक खिड़की खुली है—उसके अन्दर एक चौकीपर एक स्त्री वैठी है। उसका चेहरा दुवला और थका हुआ है और उसके हाथ सुईके घावोसे क्षत-विक्षत है। वह रानीकी सर्व सुन्दरी अग-रक्षिकाके नृत्यवसनपर फूल काढ़ रही है। एक कोनेमें उसका वच्चा वीमार पड़ा है। उसे ज्वर है और वह फल माँग रहा है। गौरैया, नन्ही गौरैया क्या तुम मेरी तलवारकी मूठमे जगमगाता हुआ हीरा निकालकर उसे नही दे आओगी—मेरे पैर तो इस स्तम्भमे जडे है और मै चल नही सकता!"

"दक्षिण देशमे लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे है। वे नील नदीपर उड रहे होगे। और कमलके फूलोसे वार्तालाप करनेके वाद राजाओके मकवरोमे सोते होगे। राजा रंगीन तावूतमे सो रहा होगा। वह पीले वस्त्रमें लपटा होगा और मसालोसे उसका अग लेपन किया गया होगा। उसकी गर्दनमे पुखराजका हार होगा और उसके हाथ सूखी पत्तियोकी तरह होगे!" गौरैयाने कहा।

"गौरैया! गौरैया! सिर्फ आज रातको तुम मेरा काम कर दो। वच्चा प्यासा है—उदास भी है!"

"उँह! मुझे वच्चोंसे ज़रा भी स्नेह नही है!" गौरैयाने कहा—"पिछले वसन्तमे दो वच्चे रोज़ आकर मुझे ढेले मारा करते थे। यद्यपि

मुझे चोट नही लगी, मैं वहुत तेज उड़ती हूँ, किन्तु यह वड़ी ही अपमान-जनक वात है।"

मगर राजकुमार इतना उदास था कि गौरैयाको दया आ गई—"यहाँ वहुत सर्दी पड़ने लगी—लेकिन कोई वात नही। मैं आज तुम्हारा काम कर दूँगी!"

"धन्यवाद—नन्ही गौरैया!" राजकुमारने कहा।

गौरैयाने राजकुमारकी तलवारकी मूठसे लाल निकाला और उसे अपनी चोचमें दावकर उड़ चली। उडते वक्त वह गिरजेघरके शिखरके पाससे गुज़री जहाँ श्वेत संगमरमरसे देवदूतोकी मूर्तियाँ वनी थी। वह उच्च प्रासादके समीपसे गुज़री और उसने नाचकी आवाज़ सुनी! छज्जे-पर एक सुन्दर किशोरी अपने प्रेमीके कन्धेपर हाथ रक्खे हुए आई!

"आह! तारे कितने सुन्दर हैं, प्रेमकी शक्ति भी कितनी अद्भुत है," उसने भावोन्मेषमें कहा, "मै समझती हूँ कि अगले नृत्यके लिए मेरे वस्त्र तैयार हो जायेंगे" उसने जवाव दिया। "मैंने उसपर फूल कढवानेकी आज्ञा दी है। मगर ये लोग देर कितनी लगाते हैं!"

वह नदीपरसे गुज़री और जहाज़के शिखरोंपर लटकते हुए आकाश-दीप देखे। अन्तमे वह उस टूटे-फूटे मकानके समीप पहुँची और भीतर झाँका। वच्चा वुखारके कारण विस्तरपर तड़प रहा था। वह फुदककर भीतर पहुँची और उसने उस स्त्रीके पासकी मेज़पर लाल रख दिया। माँ थककर सो गई थी। वह वच्चेके सिरहाने उडकर पखोंसे हवा करने लगी। "आह कैसा अच्छा लग रहा है!" वच्चेने कहा "अव शायद मैं अच्छा हो रहा हूँ!" और वह सो गया।

गौरैया उड़कर राजकुमारके पास वापस आ गई और उसने उसे सव हाल वताकर कहा—"आश्चर्य है, यद्यपि इतनी ठण्डक है लेकिन मुझे जरा भी ठण्डक नही लग रही है!"

"इसलिए कि तुमने आज एक भलाई की है" राजकुमारने कहा। गौरैया सोचने लगी और सो गई। सोचनेमे उसे सदा झपकी आ जाती थी।

जब दिन उगा तो वह नदीमे गई और नहायी। "अरे! इन दिनो गौरैया! ताज्जुब है", एक जीवशास्त्रीने कहा जो पुलसे गुजर रहा था। और उसने स्थानीय समाचार-पत्रके सम्पादकको एक बडा लम्बा पत्र लिखा। मगर वह इतना गम्भीर और विद्वत्तापूर्ण था कि किसीकी समझमे नही आया, इसलिए लोग उसके उद्धरण रटने लगे।

"अच्छा आज रातको मैं मिस्र देश जाऊँगी!" उसने सोचा। वह आज उमगसे भरी थी। उसने शहरकी सभी इमारते घूम डाली, और वह गिरजाघरके शिखरपर बहुत देर तक बैठी रही।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमारके पास गई और बोली—"तुम्हें मिस्रमे किसीसे कुछ कहलाना तो नही है—मैं अभी-अभी जानेके लिए तैयार हूँ।"

"गौरैया! गौरैया! नन्ही गौरैया! क्या तुम आज रातको और नही ठहर सकती" मूर्तिने कहा—"शहरमे, दूर एक सीली हुई कोठरीमे मुझे एक तरुण कलाकार दीख रहा है। वह अपनी कागजोंसे लदी मेजपर झुका है और उसके बगलमें एक पात्रमे सूखे हुए फूल लगे है। उसके बाल भूरे और सुनहले है, उसके होठ अनारके फूलकी तरह लाल है, उसकी आँखें बड़ी सपनीली है, वह रगमंचके लिए नया नाटक लिख रहा है, मगर ठण्डके कारण उसकी अँगुलियाँ नही चल रही है। अगीठीमें एक भी कोयला नही है और भूखसे उसकी आँखोके सपने टूट रहे है।"

"मिस्रमे सब मेरी प्रतीक्षा कर रहे होगे। कल मेरे सब साथी दूसरे प्रपात तक उड़ जायँगे। जहाँ नरकुलकी झाड़ियोमें दरियाई घोड़े सोते है

और सगमूसाकी शिलापर मेम्नानका देवता बैठा है। रातभर वह तारोंकी ओर देखता है। किंत भोरका तारा जब डूबने लगता है तो वह खुशीसे चीख पड़ता है और फिर चुप हो जाता है। दोपहरके समय वहाँ शेर आते है, जिनकी आँखें हरे रत्नोंकी तरह चमकती है और जिनकी गरजमें प्रपातका स्वर डूब जाता है।"

"लेकिन केवल आज रातके लिए भी तुम न रुकोगी!"

"अच्छा आज मै और रुक जाऊँगी, क्या दूसरा लाल उसे दे आऊँ!" गौरैयाने पूछा। "शोक! मेरे पास अब कोई दूसरा लाल नही है। मेरे पास मेरी आँखें है जो पद्मराग मणियोकी बनी है जो हज़ारो वर्ष पहले भारतसे लाये गये थे। उसे निकालकर उसे दे आओ। वह उसे बेचकर ईंधन और खाना खरीद लेगा।"

"प्यारे राजकुमार" गौरैयाने सिसकते हुए कहा—"यह तो मुझसे नही होगा और वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"गौरैया! प्यारी गौरैया!" राजकुमार बोला—"तुम्हें मेरी आज्ञा माननी चाहिए।"

गौरैयाने उसकी आँखका हीरा निकाल लिया और कोठरीकी ओर उड चली। एक छेदसे वह अन्दर घुस गई। कलाकार सिर झुकाये बैठा था अतः उसने उमके पखोंकी आवाज नही सुनी। जब उसने सिर उठाया तो देखा मुर्झाये हुए फूलोपर बडा-सा पद्मराग रक्खा था।

"ओह, मालूम होता है मेरा मोल लोग आँक रहे है। यह शायद किसी बडे भारी प्रशंसकने भेजा है। अब मै अपना नाटक समाप्त कर लूँगा!"

गौरैया बन्दरगाहकी ओर जाकर एक जहाज़के मस्तूलपर बैठ गई। वहाँ कुछ मजदूर अपने सीनेपर रस्सियाँ बाँधे नावें खीच रहे थे।

जब चाँद उगा तो वह राजकुमारके पास आकर बोली—"मै तुमसे विदा माँगने आई हूँ!"

"गौरैया, प्यारी गौरैया ! क्या आज रातको और नही ठहरोगी ?"

"देखो, अव जाड़ा पडने लगा है। मिस्रमे हरे-भरे खजूरके कुञ्जोपर गर्म धूप छायी होगी। मेरे साथी एक पुराने मन्दिरमें घोसला वना रहे होगे। प्यारे राजकुमार, मै जा रही हूँ मगर मै तुम्हे भूल नही सकती। अगले वसन्तमे जव मै लौटूँगी तो तुम्हारे लिए एक लाल और एक पद्मराग लेती आऊँगी।"

"नीचे गलीमें"—राजकुमारने कहा—"एक लडकी खड़ी है। उसका सौदा नालीमे गिर गया है और वह रो रही है। यदि वह खाली हाथ घर जायगी तो उसका पिता उसे मारेगा। उसके पैरोमे जूता नहीं है, उसका सिर नगा है। मेरी दूसरी आँख निकालकर उसे दे दो तो वह मारसे वच जायगी !"

"कहो तो मै आज रातभर और रुक जाऊँ मगर मैं तुम्हारी आँख नही निकालूँगी। फिर तो तुम विलकुल ही अन्वे हो जाओगे !"

"गौरैया ! प्यारी गौरैया !" राजकुमारने कहा—"मै जो कुछ कहता हूँ उसे करो।"

उसने उसकी आँख निकाल ली और रोती हुई लड़कीके हाथमे वह हीरा रख दिया। "वाह कैसा रंगीन काँच है !" लड़कीने कहा और हँसकर घरकी-ओर भागी।

गौरैया वापस आई।

"अव तुम अन्वे हो" उसने कहा "इसलिए मै हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगी।"

"नही-नही, गौरैया अव तुम मिस्र देशको जाओ।"

"मैं तुम्हे नही छोड़ूँगी।" गौरैयाने कहा और उसके पैरोपर सिर रखकर सो गई।

अगले दिन वह राजकुमारके कन्धोपर वैठकर भाँति-भाँतिकी कहानियाँ

सुनाने लगी—लाल बगुलेकी कहानी जो नील नदीके किनारे कतारमें खड़े रहते हैं और मौका पाते ही झपटकर सुनहली मछलियाँ चोचमें दबाकर उड़ जाते हैं, स्फिन्क्सकी मूर्तिकी कहानी जो रेगिस्तानमें रहती है और सर्वज्ञ है, चन्द्रमाकी घाटियोंके राजाकी कहानी जो बड़ेसे संगमरमरकी पूजा करता है, और उस हरे साँपकी कहानी जो डालियोंमे लपटा रहता है और बीस पुरोहित उसे दूध पिलाते हैं।

"प्यारी गौरैया, तुमने मुझे इतनी आश्चर्यजनक वस्तुएँ बताईं लेकिन इनसे भी ज्यादा आश्चर्यजनक है मनुष्यका दु:ख-दर्द। दु:ख से बड़ा कोई रहस्य नही। जाओ मेरे नगरको देखकर बताओ वहाँ क्या हो रहा है।"

गौरैया शहरपर उड़ने लगी। अमीर अपने महलोंमें रँगरलियाँ मना रहे थे और गरीब हाथ फैलाये भीख माँग रहे थे। वह अँधेरी गलियोंपर-से उडी और उसने देखा कि भूखे बच्चे सूनी निगाहोंसे ज़र्द चेहरे लटकाये हुए देख रहे हैं। एक पुलियाके नीचे दो बच्चे सिकुड़े हुए बैठे हैं—"भागो यहाँसे!" चौकीदार बोला और वे बारिशमें भीगते हुए चल दिये।

वह वापस आ गई और उसने राजकुमारको यह सब हाल बताया।

"मैं सोनेसे मढ़ा हूँ" राजकुमार बोला—"इसमेंसे स्वर्णपत्र निकालकर मेरी निर्धन प्रजामें बाँट दो!"

गौरैया एकके बाद दूसरा स्वर्णपत्र निकालकर बाँटती रही, अन्तमें राजकुमार बिलकुल मटमैला और मनहूस दीखने लगा। लेकिन बच्चोंके चेहरेपर गुलाबी किरणें झलक आईं और वे गलियोंमें खेलने लगे।

उसके बाद ओले गिरे और फिर पाला पड़ने लगा। सड़कें चमकदार बरफसे ढँककर चाँदीकी मालूम होने लगी। छज्जोंसे बड़े-बड़े बर्फके टुकड़े लटकने लगे। सभी फरके ओवरकोट पहनकर निकलने लगे।

बेचारी नन्ही गौरैया ठण्डसे अकड़ने लगी; लेकिन वह उसे इतना प्यार करती थी कि उसे वह छोड़ नही सकती थी। अन्तमें उसे लगा कि

अव उसके दिन करीव है। अव उसके परोमे केवल इतनी शक्ति शेप थी कि वह राजकुमारके कन्धो तक एक वार उड सकती थी। "अलविदा! राजकुमार" वह वोली—"क्या तुम मुझे अपना हाथ चूमने दोगे?"

'ओहो! वड़ी खुशी हुई सुनकर कि आखिर तुम अव मिस्र देग जानेके लिए तैयार हो।"

"मिस्र नही मै मृत्युके देग जानेकी तैयारी कर रही हूँ!"

और उसने राजकुमारको चूमा और मरकर उसके पैरोके पास गिर पडी।

इसी समय मूर्तिके अन्दरसे कुछ आवाज़ हुई, जैसे कुछ टूट गया हो। वास्तवमे मूर्तिके अन्दर सीसेका दिल चटख गया था। इस समय पाला गजवका था।

दूसरे दिन मेयर अन्य सदस्योंके साथ टहल रहा था। जव वे वहाँसे गुजरे तो मेयरने उसकी ओर देखा और कहा—"कितनी भद्दी लग रही है यह प्रतिमा!"

"हाँ, कितनी भद्दी है!" सदस्योने कहा जो हमेगा मेयरकी हाँ-में-हाँ मिलाते थे।

"उसकी तलवारसे लाल गिर गया है, उसकी आँखे ग़ायव है। और उसका सोना उतर गया है। यह तो विलकुल पत्थरका भिखारी मालूम देता है!"

"विलकुल विलकुल पत्थरका भिखारी!" सदस्योने कहा।

"लो उसके पैरपर एक चिड़िया भी मरी पड़ी है," मेयरने कहा—"कल घोपणा करवा दो कि यहाँ चिड़ियाँ न मरने पावें।" सदस्योने फ़ौरन नोट कर लिया।

और उसके बाद उन्होने मूर्ति हटा ली ।

"चूँकि अब वह सुन्दर नही अत उसका कोई उपयोग नही है !" नगरके एक सुप्रसिद्ध कलाविज्ञने कहा ।

उसके बाद उन्होने मूर्ति भट्टीमे गलायी और कारपोरेशनकी बैठकमे यह प्रश्न उठा कि इसका क्या किया जाय ! "यहाँपर एक दूसरी मूर्ति होनी चाहिए," मेयरने कहा—"मै समझता हूँ, मेरी मूर्ति ठीक रहेगी !"

"नही मै समझता हूँ मेरी !" हरेक सदस्यने कहा—और वे बराबर झगड़ते रहे ।

लोहा गलानेके कारखानेमें मिस्त्रीने कहा—"कैसा अचरज है, यह टूटा हुआ सीसेका दिल भट्टीमे पिघल ही नही रहा है !"

उसने एक कूडेखानेमे उसे फेंक दिया, वही गौरैयाकी लाश भी पड़ी थी ।

ईश्वरने अपने देवदूतसे कहा—"मेरे लिए नगरकी दो सबसे मूल्यवान् वस्तुएँ ले आओ ।" देवदूत वह सीसेका दिल और गौरैयाकी (लाश) ले आया ।

"ठीक, बिलकुल ठीक !" ईश्वरने कहा—"मेरे स्वर्गकी डालोपर यह गौरैया सदा चहकेगी और मेरे उपवनमें राजकुमार सदा विहार करेगा ।"

निःस्वार्थ मित्रता

निःस्वार्थ मित्रता

एक दिन सुबह तालावके किनारे रहनेवाली छछूँदरने विलमें-से अपना सिर निकाला। उसकी मूँछें कडी और भूरी थी और उसकी पूँछ काले वाल्ट्यूवकी तरह थी। इस समय वत्तखके छोटे-छोटे वच्चे तालावमे तैर रहे थे और उनकी माँ वुड्ढी वत्तख उन्हें यह सिखा रही थी कि पानीमे किस तरह सिरके वल खडा होना चाहिए।

''जव तक तुम सिरके वल खडा होना नही सीखोगे, तव तक तुम ऊँची सोसायटीके लायक नही वन सकोगे।'' वत्तख उन्हे समझा रही थी और वार-वार उसे खुद करके दिखला रही थी, किन्तु वच्चे उसकी ओर कुछ भी घ्यान नही दे रहे थे क्योंकि वे इतने छोटे थे कि अभी सोसायटी-का महत्त्व नही समझते थे।

"कैसे नालायक वच्चे है," छछूँदर चिल्लायी "इन्हें तो डुवो देना चाहिए!"

"नही जी! अभी तो ये वच्चे है। और फिर माँ कभी डुवोनेका विचार कर सकती है!"

"आह! माँकी भावनाओंसे तो अभी मैं अपरिचित हूँ! वास्तवमें मै अभी अविवाहित हूँ और रहूँगी भी! यो प्रेम अच्छी चीज़ होती है किन्तु मित्रता उससे भी वड़ी चीज़ होती है!"

"ये तो ठीक है, किन्तु मित्रताका कर्त्तव्य तुम क्या समझती हो।" एक जलपक्षीने पूछा जो पासके एक नरकुलकी डालपर वैठा हुआ यह वार्ता-लाप सुन रहा था।

"हाँ, यही मै भी जानना चाहती हूँ!" वत्तखने कहा और अपने बच्चोको दिखानेके लिए सिरके बल खड़ी हो गई।

"कैसा पागलपनका सवाल है!" छछूँदरने कहा—"मै यही चाहता हूँ कि मेरा अनन्य मित्र मेरे प्रति अनन्य रहे, और क्या?"

"और तुम उसके वदलेमे क्या करोगे?" छोटे जलपक्षीने पूछा और उतरकर किनारेपर वैठ गया।

"तुम्हारा सवाल मेरी समझमे नही आया!" छछूँदरने जवाव दिया।

"अच्छा तो मै इस विपयपर तुम्हे एक कहानी सुनाऊँ।" जल-पक्षीने कहा।

"वहुत दिन हुए एक ईमानदार आदमी था। उसका नाम था हैन्स!"

"ठहरो क्या वह कोई वडा आदमी था?" छछूँदरने पूछा।

"नहीं वह वड़ा आदमी नही था, वह ईमानदार आदमी था। हाँ, वह हृदयका वहुत साफ था और स्वभावका वड़ा मीठा। वह एक छोटी-सी कुटियामे रहता था और अपनी वगियामे काम करता था। सारे देहातमे कोई इतनी अच्छी वगिया नही थी। गेदा, गुलाव, चम्पा, केतकी, हुस्नेहिना, इश्कपेचां सभी उसके वागमे मौसम-मौसमपर फुलते थे। कभी वेला, तो कभी रातरानी, कभी हर्रासगार तो कभी जूही—इस तरह हमेशा उसकी वगियामे रूप और सौरभकी लहरें उड़ती रहती थी।

हैन्सके कई मित्र थे किन्तु उसकी विशेप घनिष्ठता ह्यू मिलरसे थी। मिलर वहुत धनी था किन्तु फिर भी वह हैन्सका इतना घनिष्ठ मित्र था कि कभी वह विना फल-फूल लिये वहाँसे वापस नही जाता था। कभी वह झुककर फलोका एक गुच्छा तोड लेता था, तो कभी जेवमे फल तोड़कर भर ले जाता था।

"सच्चे मित्रोमें कभी स्वार्थका लेश भी नही होना चाहिए," मिलर कहा करता था और हैन्सको गर्व था कि उसके मित्रके विचार इतने ऊँचे है।

कभी-कभी पड़ोसियोको इस वातसे आश्चर्य होता था कि धनी मिलर कभी अपने निर्धन मित्रको कुछ भी नही देता था, यद्यपि उसके गोदाममे सैकड़ो वोरे आटा भरा रहता था, उसकी कई मिलें थी और उसके पास वहुत-सी गायें थी। मगर हैन्स कभी इन सव वातोपर ध्यान नही देता था। जव मिलर उससे नि स्वार्थ मित्रताके गुण वखानता था तो हैन्स तन्मय होकर सुना करता था।

हैन्स हमेशा अपनी वगियामें काम करता था। वसन्त, ग्रीष्म और पतझड़में वह वहुत सन्तुष्ट रहता था किन्तु जव जाडा आता था और वृक्ष फल-फूल विहीन हो जाते थे तो वह वहुत ही निर्धनतासे दिन विताता था, क्योकि कभी-कभी उसे विना भोजनके भी सो जाना पडता था। इस समय उसे अकेलापन भी वहुत अनुभव होता था क्योकि जाडेमे कभी मिलर उससे मिलने नही आता था।

"जव तक जाडा है तव तक हैन्ससे मिलने जाना व्यर्थ है," मिलर अपनी पत्नीसे कहा करता था—"जव लोग निर्धन हों तव उन्हें अकेले ही छोड देना चाहिए, व्यर्थ जाकर उनसे मिलना उन्हे संकोचमे डालना है। कम-से-कम मेरा तो मित्रताके विपयमें यही विचार है! जव वसन्त आयेगा तव मैं उससे मिलने जाऊँगा। तव वह मुझे फूल उपहारमें देगा और उनसे उसके हृदयको कितनी प्रसन्नता होगी! मित्रकी प्रसन्नताका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है!"

"वास्तवमें तुम अपने मित्रका कितना ध्यान रखते हो!" अगीठीके पास आरामकुर्सीपर वैठी हुई उसकी पत्नीने कहा—"मैत्री-धर्मके विपयमे राजपुरोहितके विचार भी इतने ऊँचे नही होगे यद्यपि वह तिमंजिले मकानमे रहता है और उसके पास एक हीरेकी अँगूठी है!"

"क्या हमलोग हैन्सको यहाँ नही वुला सकते!" मिलरके सवसे छोटे लड़केने पूछा—"यदि वह कष्टमें है तो मैं उसे अपने साथ खिलाऊँगा और अपने सफेद खरगोश दिखाऊँगा!"

"तुम कितने वेवकूफ लडके हो!" मिलरने डाँटा—"तुम्हें स्कूल भेजनेसे कोई फायदा नही हुआ। तुम्हे अभी ज़रा भी अक्ल नहीं आई। अगर हैन्स यहाँ आयेगा और हमारा वैभव देखेगा तो उसे ईर्ष्या होने लगेगी और तुम जानते हो ईर्ष्या कितनी निन्दित भावना है! मै नही चाहता कि मेरे एक-मात्र मित्रका स्वभाव विगड जाय। मै उसका मित्र हूँ और उसका ध्यान रखना मेरा कर्तव्य है! अगर वह यहाँ आये और मुझसे कुछ आटा उधार माँगे तो भी मै नही दे सकता। आटा दूसरी चीज़ है, मित्रता दूसरी चीज। दोनो शव्द अलग है, दोनोके अर्थ अलग है, दोनोके हिज्जे अलग है! कोई वेवकूफ भी यह समझ मकता है!"

"तुम कैसी चतुरतासे वाते करते हो" मिलरकी पत्नीने कहा—"तुम्हारी वाते पादरीके उपदेशसे भी ज्यादा प्रभावोत्पादक होती है क्योकि इन्हें सुनते-सुनते जल्दी झपकी आने लगती है।"

"वहुतसे लोग कार्य चतुरतासे कर लेते है," मिलरने उत्तर दिया—"किन्तु चतुरतासे सलाम वहुत कम लोग कर पाते है जिससे स्पष्ट है कि वात करना अपेक्षाकृत कठिन कला है।" उसने मेजके पार वैठे हुए अपने छोटे वच्चेकी ओर इतनी क्रोधभरी निगाहसे देखा कि वह रोने लगा!

"क्या यही कहानीका अन्त है?" छछूँदरने पूछा।

"नही जी, यह तो अभी आरम्भ है!" जल-पक्षीने कहा।

"ओह, तो तुम अच्छे कथाकार नही हो—युगके विलकुल पीछे—साहित्यमे तो हर कहानीकार पहले अन्तका वर्णन करता है फिर आरम्भ-का विस्तार करता है और अन्तमे मध्यपर लाकर कहानी समाप्त कर देता है। यही यथार्थवादी कला है। कल मैने स्वयम् एक आलोचकसे ऐसा सुना था जो मोटा चश्मा लगाये हुए घूम रहा था और एक नौजवान लेखकको

यही समझा रहा था। जब कभी वह लेखक कुछ प्रतिवाद करता था तो आलोचक कहता था—"हूँ, अभी कुछ दिन पढ़ो !"

"खैर, तुम अपनी कहानी कहो। मुझे मिलरका चरित्र बड़ा गम्भीर लग रहा है। बड़ा स्वाभाविक भी है। बात यह है कि मैं भी मित्रताके प्रति इतने ही ऊँचे विचार रखती हूँ।"

"अच्छा तो ज्यों ही जाड़ा समाप्त हुआ और वनन्ती फूल अपनी पाँखुडियाँ फैलाकर धूप खाने लगे मिलरने अपनी पत्नीसे हैन्सके पास जानेका इरादा प्रकट किया।

"ओह तुम कितना ध्यान रखते हो हैन्सका !" उसकी पत्नी बोली—"और देखो वह फूलोंकी डोलची ले जाना मत भूलना !"

और मिलर वहाँ गया।

"नमस्कार हैन्स !" मिलरने कहा।

"नमस्कार !" अपना फावडा रोककर हैन्सने कहा और बहुत खुश हुआ।

"कहो जाड़ा कैसा कटा !" मिलरने पूछा।

"ओह ! तुम सदा मेरी कुशलताका ध्यान रखते हो।" हैन्सने गद्‌गद स्वरोंमें कहा—"कुछ कष्ट अवश्य था, किन्तु अब तो वसन्त आ गया है और फूल बढ रहे हैं !"

"हम लोग कभी-कभी सोचते थे कि तुम कैसे दिन बिता रहे होगे ?" मिलरने कहा।

"सचमुच तुम कितने भावुक हो ! मैं तो सोच रहा था तुम मुझे भूल गये हो !"

"हैन्स ! मुझे कभी-कभी तुम्हारी बातोंपर आश्चर्य होता है—मित्रता कभी भुलाई भी जा सकती है ! यही तो जीवनका रहस्य है ! वाह तुम्हारे फूल कितने प्यारे है।"

"हाँ वहुत अच्छे है !" हैन्स वोला—"और किस्मतसे कितने अधिक फूले है ! इस वर्ष मै इन्हे सेठकी पुत्रीके हाथ वेचूँगा और अपनी वैलगाड़ी वापस खरीद लूँगा !"

"वापस खरीद लोगे ? क्या तुमने उसे वेच दिया ? कितनी नादानी की तुमने !"

"वात यह है !" हैन्सने कहा "जाडेमे मेरे पास एक पाई भी नही थी। इसलिए पहले मैने अपने चाँदीके वटन वेंचे, वादमे अपना कोट वेचा, फिर अपनी चाँदीकी जंजीर वेची और अन्तमे अपनी गाड़ी वेच दी ! मगर अव मै उन सवको वापस खरीद लूँगा !"

"हैन्स !" मिलरने कहा—"मै तुम्हें अपनी गाड़ी दूँगा। उसका दायाँ हिस्सा गायव है और वाये पहियेके आरे टूटे हुए है, फिर भी मै तुम्हे दे दूँगा। मै जानता हूँ यह वहुत वड़ा त्याग है और वहुतसे लोग मुझे इस त्यागके लिए मूर्ख भी कहेगे। मगर मै सासारिक लोगोकी भाँति नही हूँ। मै समझता हूँ सच्चे मित्रोका कर्त्तव्य त्याग है और फिर अव तो मैने नई गाड़ी भी खरीद ली है। अच्छा है, अव तुम चिन्ता मत करो मै अपनी गाड़ी तुम्हे दे दूँगा !"

"वास्तवमे यह तुम्हारा कितना वडा त्याग है !" हैन्सने आभार स्वीकार करते हुए कहा—"और मै उसे आसानीसे वना लूँगा। मेरे पास एक वड़ा सा तख्ता है।"

"तख्ता !" मिलर वोला—"ओह, मुझे भी तो एक तख्तेकी जरूरत है। मेरे आटागोदामकी छतमे एक छेद हो गया है। अगर वह नही वना तो सव अनाज सील जायगा। भाग्यसे तुम्हारे ही पास एक तख्ता निकल आया। आश्चर्य है। भले कामका परिणाम सदा भला ही होता है। मैने अपनी गाडी तुम्हे दे दी और तुम अपना तख्ता मुझे दे रहे हो। यह ठीक है कि गाड़ी तख्तेसे ज्यादा मोलकी है मगर मित्रतामे इन वातोका ध्यान

नही किया जाता। अभी निकालो तख्ता, तो आज ही मैं अपना गोदाम ठीक कर डालूँ।"

"अवश्य!"—हैन्सने कहा और वह कुटियाके अन्दरसे तख्ता खींच लाया और उसने उसे बाहर डाल दिया।

"ओह! यह बहुत छोटा तख्ता है!" मिलर बोला—"शायद तुम्हारे लिए इसमेंसे बिलकुल न बचे—मगर इसके लिए मैं क्या करूँ। और देखो मैंने तुम्हें गाडी दी है तो तुम मुझे कुछ फूल नही दोगे। यह लो! टोकरी खाली न रहे!"

"बिलकुल भर दूँ!" हैन्सने चिन्तित स्वरोमे पूछा—क्योकि डोलची बहुत बडी थी और वह जानता था कि उसे भर देनेके बाद फिर बेचनेके लिए एक भी फूल नही बचेगा, और उसे अपने चाँदीके बटन वापस लेने थे।

"हाँ और क्या!" मिलरने उत्तर दिया "मैने तुम्हें अपनी गाडी दी है, अगर मैं तुमसे कुछ फूल माँग रहा हूँ तो क्या ज्यादती कर रहा हूँ। हो सकता है मेरा विचार ठीक न हो, मगर मेरी समझमे मित्रता बिलकुल स्वार्थहीन होनी चाहिए।"

"नही प्यारे मित्र! तुम्हारी खुशी मेरे लिए बड़ी चीज़ है, मै तुम्हें नाखुश करके अपने चाँदीके बटन नही लेना चाहता।" और उसने फूल चुन-चुनकर वह डोलची भर दी।

अगले दिन जब वह क्यारियाँ ठीक कर रहा था तब उसे सडकसे मिलरकी पुकार सुनाई दी। वह काम छोड़ कर भागा और चहारदीवारीपर झुककर झाँकने लगा। मिलर अपनी पीठपर अनाजका एक बडा-सा बोरा लादे खडा था।

"प्यारे हैन्स!" मिलरने कहा—"ज़रा इसे बाज़ार तक पहुँचा दोगे।"

'भाई आज तो माफ करो!" हैन्सने सकुचाते हुए कहा "आज तो मैं

सचमुत वहुत व्यस्त हूँ ! मुझे अपनी सव लतरे चढानी है, सव फूलके पौवे सीचने है और दूव तराशनी है ।"

"अफसोस है !" मिलरने कहा "यह देखते हुए कि मैने तुम्हें अपनी गाडी दी है, तुम्हारा इस प्रकार इन्कार करना शोभा नही देता !"

"नही भैया, ऐसा ख्याल क्यो करते हो !" हैन्स वोला, वह भागकर टोपी पहनने गया और फिर कन्धोपर वोरा लादकर चल दिया ।

धूप वहुत कडी थी और सडकपर वालू तप रही थी । छ मील चलनेपर हैन्स वेहद थक गया, लेकिन वह हिम्मत नही हारा, चलता ही गया और अन्तमें वाजारमे पहुँच गया । कुछ देर तक इन्तजार करनेके वाद उसने खरे दामोपर बिक्री की और जल्दीसे लौट आया ।

जव वह सोने जा रहा था तो उसने मनमे कहा—"आज वड़ा वुरा दिन वीता, मगर मुझे खुशी है मैने मिलरका दिल नही दुखाया, वह मेरा मित्र है और फिर उसने मुझे अपनी गाडी दी है ।"

दूसरे दिन तडके मिलर हैन्ससे रुपये लेने आया, मगर हैन्स इतना थका था कि वह अव भी पलगपर पड़ा था ।

"सच कहता हूँ" मिलर वोला—"तुम वडे आलसी मालूम देते हो । मैने सोचा था गाडी मिल जानेपर तुम मेहनतसे काम करोगे ! आलस्य वहुत वडा दुर्गुण है ! मै नही चाहता कि मेरा कोई मित्र आलसी वने । माफ करना मै मुँहफट वातें करता हूँ सिर्फ यही सोचकर कि तुम्हारी चिन्ता रखना मेरा धर्म है । लल्लो-चप्पो तो कोई भी कर सकता है, मगर सच्चे मित्रका कार्य सदा अपने मित्रको दुर्गुणोसे वचाना होता है ।"

"मुझे वहुत दु ख है !" हैन्सने आँखें मलते हुए कहा—"मै वहुत थका था ।"

"अच्छा उठो !" मिलरने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा—"चलो ज़रा मुझे गोदामकी छत वनानेमे मदद दो !"

मिलर अपने वागमें जाकर काम करनेके लिए चिन्तित था क्योंकि उसके पौधोमें दो दिनसे पानी नही पडा था।

"अगर मै कहूँ कि मैं व्यस्त हूँ तो इससे तुम्हें ठेस तो नही पहुँचेगी!" उसने दवी हुई आवाज़में पूछा।

"खैर तुम्हें यह याद रखना चाहिए कि मित्रताके ही नाते मैंने तुम्हे अपनी गाडी दी है, लेकिन अगर तुम मेरा इतना काम भी नही कर सकते तो कोई हर्ज़ा नही, मैं खुद कर लूँगा।"

"नही-नही भला यह कैसे हो सकता है!" हैन्सने कहा—वह फौरन तैयार होकर मिलरके साथ चल दिया।

वहाँ उसने दिन भर काम किया। शामके वक्त मिलर आया।

"हैन्स तुमने वह छेद वन्द कर दिया?" मिलरने पूछा।

"हाँ विलकुल वन्द हो गया"—हैन्सने सीढीसे उतरकर जवाव दिया।

"आहा!" मिलर वोला—"दुनियामें दूसरोके लिए कष्ट उठानेसे ज्यादा आनन्द और किसी काममे नही आता।"

"मुझे तो सचमुच तुम्हारे विचारोंसे वडा सुख मिलता है!" हैन्सने कहा और माथेसे पसीना पोछकर वोला—"मगर न जाने क्यो मेरे मनमे कभी इतने ऊँचे विचार नही आते!"

"कोई वात नही, प्रयत्न करते चलो!" मिलरने कहा, "अभी तुम्हें-मित्रता क्रियात्मक रूपमें आती है, धीरे-धीरे उसके सिद्धान्त भी समझ लोगे! अच्छा, अव तुम जाकर आराम करो, क्योकि कल तुम्हे मेरी भेडें चराने ले जानी है!"

इस तरहसे वह कभी अपने फूलोकी देख-भाल नही कर पाता था क्योंकि उसका मित्र कभी न कभी आकर उसे कोई न कोई काम वता दिया करता था। हैन्स कभी-कभी वहुत परेशान हो जाता था, क्योकि वह सोचता था कि फूल समझेंगे कि वह उसे भूल गया। मगर वह सदा सोचता

था कि मिलर उसका घनिष्ठ मित्र है और फिर वह उसे अपनी गाडी देने जा रहा था, और यह कितना बडा त्याग था।

इस तरहसे हैन्स दिनभर मिलरके लिए काम करता था और मिलर उसे रोज़ बहुत लच्छेदार शब्दोमे मित्रताके सिद्धान्त समझाता था जिन्हे हैन्स एक डायरीमे लिख लेता था और रातको उनपर ध्यानसे मनन करता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि रातको हैन्स अपनी अंगीठीके पास बैठा था। किसीने जोरसे दरवाजा खटखटाया। रात तूफानी थी और इतने जोरका अन्धड था कि वह समझा हवासे किवाड़ खड़का होगा। मगर दूसरी बार, तीसरी बार किवाड खडके।

"शायद कोई गरीब मुसाफिर है!" वह दरवाजा खोलने चला।

द्वारपर एक हाथमें लालटेन और दूसरेमे एक लाठी लिये मिलर खडा था।

"प्यारे हैन्स!" मिलर चिल्लाया—"मै बहुत दुःखमे हूँ! मेरा लडका सीढीसे गिर गया और मैं डाक्टरके पास जा रहा हूँ। मगर वह इतनी दूर रहता है और रात इतनी अन्धेरी है कि अगर तुम चले जाओ तो ज्यादा अच्छा हो। तुम जानते हो ऐसे ही अवसरपर तुम अपनी मित्रता दिखा सकते हो!"

"अवश्य मै अभी जाता हूँ! मगर तुम अपनी लालटेन मुझे दे दो! रात इतनी अन्धेरी है कि मै किसी खड्डमे न गिर पडूँ!"

"मुझे बहुत दुःख है!" मिलर बोला—"मगर यह मेरी नई लालटेन है और अगर इसे कुछ हो गया तो मेरा बडा नुकसान होगा!"

"अच्छा मै योही चला जाऊँगा!"

बहुत भयानक तूफान था। हैन्स राह मुश्किलसे देख पाता था और

उसके पाँव नही ठहरते थे। किसी तरह ३ घण्टेमें वह डाक्टरके घरपर पहुँचा और उसने आवाज़ लगाई!

"कौन है!" डाक्टरने बाहर झाँका।

"मैं हूँ हैन्स, डाक्टर!"

"क्या बात है, हैन्स!"

"मिलरका लडका सीढीसे गिर गया है। आप अभी चलिए।"

"अच्छा!" डाक्टरने कहा और अपने जूते पहने, लालटेन ली और घोडेपर चढकर चल दिया। हैन्स उसके पीछे चल पडा।

मगर तूफान बढता ही गया, पानी मूसलाधार बरसने लगा और हैन्स अपना रास्ता भूल गया। धीरे-धीरे वह ऊपरकी ओर चला गया जो पथरीला था और वहाँ एक खड्डमे डूब गया। दूसरे दिन गडरियोको उसकी लाश मिली और वे उसे उठा लाये।

हर एक आदमी हैन्सकी लाशके साथ गये, मिलर भी आया। "मै उसका सबसे घनिष्ठ मित्र था, इसलिए मुझे सबसे आगे जगह मिलनी चाहिए।" यह कहकर काला कोट पहन कर वह सबसे आगे हो रहा और उसने जेबसे एक रुमाल निकालकर आँखोपर लगा लिया।

बादमें लौटकर वे सरायमें बैठ गये और इस समय केक खाते हुए लोहारने कहा—"हैन्सकी मृत्यु बडी ही दु खद रही!"

"मुझे तो बेहद दु:ख हुआ!" मिलरने कहा—"मैंने उसे अपनी गाड़ी दी थी। वह इस बुरी हालतमें है कि मैं उसे चला नही सकता, दूसरे उसे खरीद नही सकते। अब मैं क्या करूँ? दुनिया भी कितनी स्वार्थी है?" मिलरने शराब पीते हुए गहरी साँस लेकर कहा।

थोड़ी देर खामोशी रही। छछूँदरने पूछा—"तब फिर?"

"तब क्या? कहानी खत्म!" जलपक्षी बोला।

"अरे! तो मिलर बेचारेका क्या हुआ?" छछूँदरने कहा।

"मै क्या जानूँ ? मिलरसे मुझे क्या मतलव ?"

"छिः, तुममे ज़रा हमदर्दी नही वेचारेसे—"

"मिलरसे हमदर्दी—इसके मतलव तुमने कहानीका आदर्श ही नही समझा !"

"क्या नही समझा ?"

"आदर्श !"

"ओह !" छछूँदर झुझलाकर वोली—"मुझे क्या मालूम कि यह आदर्शवादी कहानी है। मालूम होता तो कभी न सुनती। आलोचकोकी तरह कहती—छि तुम पलायनवादी हो—धिक्कार ! और उसने गला फाडकर कहा "धिक्कार !" और पूँछ झटककर विलमे घुस गयी।

आवाज सुनकर वत्तख दौड आयी।

"क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"कुछ नही ! मैने एक आदर्शवादी कहानी सुनाई थी—छछूँदर झुझला गयी !

"ओह यह बात थी !" वत्तख बोली—"भाई अपनेको खतरेमे डालते ही क्यो हो ! आजकल और आदर्शवादी कहानी ?"

❁

इन्फैण्टाका जन्म-दिन

इन्फैण्टाका जन्म-दिन

इन्फैण्टाका जन्म दिन था। महलके उपवनमे धूप चमक रही थी, और अभी-अभी इन्फैण्टाने अपने जीवनका बारहवाँ वर्ष पूरा किया था।

यद्यपि वह एक असली राजकुमारी थी, और स्पेनकी युवराज्ञी थी, किन्तु अन्य निर्धन बच्चोंकी तरह ही उसकी वर्षगाँठ सालमें केवल एक बार पड़ती थी और इसलिए सारा देश इस बातके लिए व्यग्र रहता था कि इस अवसरपर उसे अधिकसे अधिक सुख पहुँचाया जाय। वास्तवमे वह दिन भी बडा ख़ुशनुमा था। सिपाहियोकी कतारोकी तरह छीटदार ट्यूलिप खडे थे और दूबमें लहराते हुए गुलाबोको देखकर उपेक्षासे कह रहे थे—"देखो न हम भी तो उतने ही शानदार है।" स्वर्ण धूलमे सने हुए पखो-वाली गुलाबी तितलियाँ एक फूलसे दूसरे फूलपर उड रही थी। छोटे-छोटे कीडे दरारोसे निकल धूप ले रहे थे और धूपसे अनार चिटख-चिटखकर अपने ख़ूनी घायल दिल दिखला रहे थे। पीले चकोतरे जो ढेरके ढेर हरि-याले कुंजोमें लटक रहे थे, उन्होने भी धूपका रंग चुरा लिया था। मैग-नोलियाकी बड़ी-बडी हाथीदाँतकी पाखुरियोवाली कलियाँ धीरे-धीरे खिल रही थी और हवामें मादक सौरभ बिखेर रही थी।

नन्ही राजकुमारी भी रविशोपर टहल रही थी, और प्राचीन मूर्तियो और काई लगे पत्थरोके पीछे लुकाछिपी खेल रही थी। यो साधारण दिनो तो वह केवल अपनी ही श्रेणीके बच्चोंके साथ खेल सकती थी, किन्तु जन्म-दिनके विशेष अवसरपर राजाने इसकी इजाज़त दे दी थी कि राजकुमारी किसी भी बच्चेको बुलाकर उससे अपना मनोरञ्जन कर सकती थी। इन

दुवले-पतले स्पेनी वच्चोमे एक अजव सौन्दर्य था—कमर तकके मखमली कोट और फूलदार टोपीवाले लडके, और हाथमे गाउनका छोर थामें और काले और रूपहले पंखोसे धूप वचानेवाली लडकियाँ—इनमे एक अजव सौन्दर्य था। मगर इन्फैण्टा उन सवसे सुन्दरतम थी, उसके वस्त्र भी सुन्दर थे। भूरे साटनका गाउन, फूली हुई वाहें, जरीका काम, और कडे कारसेट पर मोतियोकी पाँत—गुलावके गुच्छोवाली दो नन्ही मखमली चप्पले और मोतिया रंगका जालीदार पखा। चम्पई चेहरेके चारो ओरकी सुनहली अलकोमे एक सफेद गुलाव खुँसा था।

महलके एक गवाक्षसे उदास राजा देख रहा था। उसके वगलमे उसका भाई, अरागानका डान पेड्रो था जिससे वह नफरत करता था। इन्फैण्टा या तो वच्चोके साथ खेल रही थी, या अपने साथ रहनेवाली अलवुकर्ककी डचेसके गम्भीर चेहरेपर पंखेमे मुँह छिपाकर हँस रही थी। उसे देखकर राजाको, इन्फैण्टाकी माँ, स्वर्गीय रानीकी याद आ रही थी, जिसकी तरुणाई फ्रांससे आते ही मुर्झा गई थी और जिसने वागमें लगी अगूरकी लतरके तीसरी वार फूलनेके पहले ही पलकें मूँद ली थी। वह उसे इतना प्यार करता था कि उसने रानीको कव्रमे भी नही गाड़ने दिया था। एक शरणार्थी मूर वैद्यने उसके शवको मसालोमे लपेट दिया था और उसका शव अव भी काले सगमरमर वाले गिर्जेमे उसी चन्दन-मञ्जूपामें उसी प्रकार रक्खा है जैसे १२ वर्ष पहले उस वसन्तके तूफानी दिनोमें पुरोहितोने वहाँ रख दिया था। हर महीनेमे एक वार काला लवादा ओढ़कर राजा वहाँ जाता था और उसके वगलमे झुककर काँपते हुए स्वरोमे पुकारता था—"मेरी रानी!" यद्यपि स्पेनमे सामाजिक शिष्टाचारके कारण राजाको भी अपने दु:खपर नियन्त्रण रखना पड़ता था, किन्तु कभी-कभी वह आवेशमे आकर उसके पीले हाथोको दु:खमे पागल होकर पकड़ लेता था और जलते हुए चुम्वनोसे वह उसके ठढे शवको जगानेका प्रयत्न करता था।

आज ऐसा मालूम पडता था कि वह वैसे ही रानीको अपने सामने देख रहा है जैसे उसने उसे सबसे पहले फाटेन ब्लूके किलेमे देखा था जब उसकी आयु पन्द्रह वर्षकी थी, और रानी तो और भी छोटी थी। उस समय फ्रासके राजा और पूरे दरबारकी उपस्थितिमे पैपेल नन्शियोने उन दोनो की सगाई कराई थी। जब वह वहाँसे लौटा था तो उसके हाथमें पीले बालोका एक गुच्छा था और दो नन्हें होठोंके चुम्बनकी भीनी-भीनी याद।

सचमुच वह उसे दिलोजानसे प्यार करता था, और कहते है कि इसीके पीछे उसने अपने देशको बर्बाद कर डाला था जब कि नई साम्राज्यलिप्सासे पागल इंगलैण्डसे उससे लडाई हो रही थी। कभी उसने रानीको अपनी नजरोसे नही ओझल होने दिया और मालूम होता था कि राजकाज तो वह विसार ही बैठा है। उसमे कामनाका वह आवेग था कि उसने कभी यह नही समझा कि जितना वह रानीको सान्त्वना देनेका यत्न करता है, वह उतनी ही बीमार होती जाती है। वह चाहता था कि वह राजकाज छोड़कर किसी शान्त धार्मिक आश्रममे रहने लगे, किन्तु वह इन्फँटाको अपने भाईके भरोसे नहीं छोड सकता था। उसका भाई बहुत ही दुष्ट और क्रूर था और कहा जाता है कि रानीको उसने दो जहरीले दस्ताने उपहारमें देकर मरवा डाला।

उसका सारा वैवाहिक जीवन अपने समस्त जलते हुए सुखो और मर्म-स्पर्शी दु खोको लेकर खत्म हो गया था। किन्तु आज बागमें इन्फँटाको खेलते हुए देखकर उसमे न जाने क्यो फिर वही उमगे जग रही थी। उसकी चालढाल, बातचीत, चेहरा, हँसी, नजरें और आंगिक मुद्राएँ, सबकुछ वैसी ही थी। बच्चोकी हँसी उसके कानोमें बेचैनी उडेल रही थी। उज्ज्वल और निर्दय धूप उसके दु.ख पर व्यग कर रही थी, और कुछ अजब सी सुगन्धें सुबहके झोकोमे मचल रही थी। उसने अपने हाथोंसे अपना चेहरा ढाँप

लिया, और जव इन्फैंटाने ऊपर देखा तो पर्दे पड़ गये थे। और महाराज लौट गये थे।

उसने वडी निराश मुद्रा वना ली। आज जन्मदिनको तो राजाको उसके साथ रहना चाहिए। क्या वह उस उदास गिर्जाघरमे तो नही गया है जहाँ दिन-रात मोमवत्तियाँ जलती रहती है और जहाँ उसे कभी जानेकी इजाज़त नही मिलती। सव इतने ख़ुश है, धूप खिली है, भला अव भी उदासीका क्या कारण? फिर कठपुतली और नाटककी तो कुछ वात ही नहीं।" वह अव साँड़ोकी लड़ाई भी न देख सकेगा जिसके लिए इतने दिनोंसे घोषणा हो रही है। इससे अच्छे तो उसके चाचा है। वे वागमे आये और उसे वधाइयाँ दी। उसने अपना सिर हिलाया और डानपेड्रोका हाथ थामकर वागके कोनेमे वने हुए रेशमी मचकी ओर चल पड़ी। उसके पीछे सव वच्चे चल पड़े, क़दम-से-क़दम मिलाकर, जिनके नाम सवसे लम्वे थे, वे सवसे आगे चल रहे थे।

एक सुन्दर लड़कोका जलूस उसके स्वागतके लिए आया और टिरा-नुयेवा १४ वर्षके सुन्दर काउण्टने आकर उसको सहारा दिया और मचपर रक्खे हुए एक हाथी-दाँतके सिंहासनपर विठा दिया। चारो तरफ वच्चे जमा हो गये। वे अपने पंखे चला रहे थे और एक दूसरेके कानमें झुककर वातें कर रहे थे।

साँड़ोकी लड़ाई वास्तवमे अद्भुत थी। लड़ाई नकली साँड़ोकी थी, मगर असलीसे भी ज़्यादा मनोहर थी। कुछ लडके छोटे-छोटे सजे हुए घोड़े पर अपनी मणिजटित तलवारे घुमाते हुए और रेशमी फीते लहराते हुए घूम रहे थे। दूसरे वच्चे अपना लाल कोट पहनकर रस्सीके नज़दीक जाते थे और जव साँड़ उनपर हमला करता था तो वह किलकारी मार कर भागते थे। उस नकली साँड़की हरकतोंसे वच्चोको इतनी उत्तेजना होती थी कि वे उठ-उठकर शावाशियाँ दे रहे थे, और रूमाल उछाल रहे थे।

जब कई एक नकली घोड़े घायल होकर मर गये तो लडाई बन्द हुई। बादमें टिरानुयेवाका काउण्ट साँड़को राजकुमारीके पास पकड़ लाया और इस ज़ोरसे तलवार मारी कि सिर अलग होकर गिर पड़ा और उसमेंसे फ्रेञ्च राजदूतका लड़का मोशिये लारेव हँसता हुआ निकल पड़ा।

तालियोंके शोरके बीचमें अखाड़ा खाली हुआ और मरे हुए नकली घोड़ोको दो मूर गुलामोने खीचकर बाहर निकाला। उसके बाद एक छोटा सा तमाशा प्रारम्भ हुआ जिसमें एक फ्रेञ्च बाजीगरने छोरपर चलनेकी कला दिखाई। उसके बाद ही पासमे बने हुए अभिनयगृहमें एक पुराने इटालियन नाटकका अभिनय करनेके लिए कुछ इटालियन कठपुतलियाँ आयी। उनका अभिनय इतना पूर्ण था, इतना स्वाभाविक था कि इन्फैण्टाकी आँखें भर आई। कुछ बच्चे तो सचमुच ही रोने लगे और उन्हें मिठाई देकर चुप कराया गया। स्वयम् ग्राड इन्क्विजिटर इतना प्रभावित हुआ कि उसने डान पेड्रोसे कहा—"आश्चर्य है कि केवल सीक और मोमको बनी पुतलियाँ भी इतने दु खकी अनुभूति कर सकती हैं।

उसके बाद एक हवशी बाजीगर आया। उसके पास एक बड़ी-सी टोकरी थी जिसपर लाल कपडा ढँका था। अपनी पगडीमेंमे उसने एक विचित्र लाल तूमड़ी निकाली और बजाने लगा। कुछ क्षणोमें वह कपडा हिलने लगा और दो हरे और सुनहले साँपोने अपना फन बाहर निकाला। वे तूमड़ीके सगीतकी लयपर इस प्रकार झूम रहे थे जैसे लहरोमें पौदा झूमता है। बच्चे उनके चितकबरे फन और लपलपाती जीभको देखकर भयभीत हो गये। लेकिन उसके बाद मदारीने बालूमेंसे एक छोटा-सा नारगीका पेड़ लगा दिया जिसमे सुन्दर श्वेत कलियाँ लगी थीं और फलोंके गुच्छे लटक रहे थे। उसके बाद उसने एक छोटी-सी शाहज़ादीसे उसका पंखा माँगा और उससे एक छोटी-सी नीली चिड़िया बन गई जो चारो

ओर उडती रही और चहकती रही। बच्चे खुशीसे किलकारियाँ मारने लगे।

न्यूएस्ट्रा, सेनोरा डे पिलारके गिर्जेघरसे आने वाले बच्चोने एक छोटा-सा नाच दिखाया जो अद्भुत था। इन्फैण्टाने इस विचित्र नृत्यको कभी नही देखा था यद्यपि यह प्रतिवर्प वसन्तऋतुमें कुमारी मेरीकी मूर्तिके सम्मुख हुआ करता था। वास्तवमें स्पेनके शाही खान्दानका कोई भी व्यक्ति कभी उस गिर्जेमे नही जाता था क्योकि किसी पागल पादरीने आस्ट्रियसके राजकुमारको जहर देनेका प्रयत्न किया था। कहा जाता है कि उस पादरी को इगलैण्डकी साम्राज्ञी एलिजावेथने कुछ घूस दे रक्खी थी। उसने इस "कुमारी मेरीनृत्य" के विपयमे केवल सुनभर रक्खा था। वास्तवमे यह वहुत ही आकर्पक था। वच्चे सफेद मखमलके पुराने ढंगके कोट पहनते थे। उनकी विचित्र तिकोनी टोपियोमे जरीका काम था और शुतुरमुर्गके पर लगे हुए थे। उनके साँवले चेहरो और काले वालोके कारण धूपमे उनकी पोशाकोकी सफेदी और भी वढ जाती थी। वडी शान और गम्भीरतासे रगमचपर क़दम रख रहे थे, उनके झुकनेमे एक सौन्दर्य था, उनके सकेतोमे एक विचित्र अभिव्यजना थी, जिसमे हरएक दर्शक आकर्पित हो रहा था। जव उन्होने अपना नृत्य वन्द किया तो अपनी पखदार टोपियाँ उतार कर इन्फैटाको प्रणाम किया। इन्फैण्टाने वडी शिष्टतासे उत्तर दिया और वादा किया कि वह पुरस्कारस्वरूप एक वहुत वड़ी मोमवत्ती उस गिर्जाघरमें भेजेगी।

सुन्दर मिस्रियोका एक समूह अखाडेमें उतरा और दोजानू होकर एक गोल घेरेमें वैठ गया। अपने जगली सितार वजाकर झूमते हुए उन्होने अजव स्वप्निल तान छेड दी। डानपेड्रोको देखकर उनमेंसे कुछने मुँह वनाया, और कुछ भयभीत हो गये, क्योकि दो ही दिन पहले डान पेड्रोने दो मिस्रियोको जादू देनेके अभियोगमे फाँसी दिलवा दी थी। लेकिन इन्फैंटा

को देखकर उन्हें बहुत सान्त्वना मिली। वह पीछे झुककर पंखेकी ओटसे बड़ी-बड़ी नीली आँखोंसे उनकी ओर देख रही थी। उन्हें उसे देखकर यह विश्वास हो गया कि यह किसीके प्रति क्रूर हो ही नहीं सकती। वे बड़ी कोमलतासे सितार बजाते रहे, अपनी लम्बी अंगुलियोंकी पोरोंसे तारोंको स्पर्श मात्र कर वे धीमे-धीमे झूमने लगे जैसे वे सो गये हों। उनके बाद सहसा वे चीख उठे और कूदकर घेरेमें नाचने लगे। बच्चे चौंक उठे और डानपेड्रोका हाथ अपनी तलवारपर पहुँच गया। वे अपने मृदंग जोरोंसे पीट रहे थे और कोई जंगली प्रेम गीत गा रहे थे। दूसरे संकेतके साथ ही वे फिर जमीनपर लेट गये। सब मूक थे। केवल सितारके तारोंकी धीमी झंकार ही सुनाई पड रही थी। कई बार ऐसा करनेके बाद वे अदृश्य हो गये। उनके बाद वे एक भूरे रीछको लिये हुए और कन्धोंपर बन्दर बिठाये हुए आते हुए दीख पडे। रीछ बहुत गम्भीरतासे शीर्षासन कर रहा था। बन्दरोंने भी बहुतसे तमाशे दिखाये। उन्होंने तलवार चलाई, तोपें दागीं और बाकायदा कदमसे कदम मिलाकर मार्च किया। उनका खेल बहुत सफल रहा।

लेकिन सुबहके सब तमाशोंमें बौनेका नाच सबसे आनन्दप्रद रहा। जब वह अपने टेढे पैर नचाते और अपना कुरूप चेहरा घुमाते हुए अखाडेमें घुसा तो सभी बच्चे ठठाकर हँस पडे। इन्फैंटा स्वयम् इतनी हँसी कि, कैमरारानेने उसे चिताया कि शाही कानूनके अनुसार अपनेसे नीची श्रेणी वालोंके सामने राजकुमारीका इतना हँसना अनुचित है। किन्तु बौना वास्तवमें बहुत ही विचित्र था। स्पेनके राजदर्बारमें जो अपनी कुरूपताकी पसन्दगीके लिए प्रसिद्ध है वहाँ भी कभी इतनी कुरूप वस्तु देखनेमें नही आई। वह केवल एक दिन पहले पकड़ा गया था। दो सामन्त जङ्गलोंमें शिकार खेलने गये थे। वही उन्हें डरकर भागता हुआ यह बौना मिला था। वे लोग इन्फैण्टाके लिए वह आश्चर्यजनक वस्तु पकड़ लाये थे। बौनेका पिता जो एक लकड़हारा था—ऐसी बेकार और कुरूप सन्तानसे छुटकारा पाकर

बहुत ही प्रसन्न हुआ था। शायद उसके विपयमे सवसे हास्यास्पद बात यह थी कि वह स्वयम् अपनी कुरूपतासे अनजान था। वह बहुत प्रसन्न और उत्साहित मालूम देता था। जब बच्चे हँसते थे तो वह भी उतनी ही स्वच्छन्दता और आनन्दसे हँसता था। हर नाचके वाद वह अजब ढगसे झुककर सलाम करता था, उसी प्रकार हँसता और झूमता था जैसे वह भी उन्हींमेसे एक हो। वह यह नही समझता था कि वह एक कुरूप वस्तु है जो प्रकृतिने दूसरोके व्यंग सहनेके लिए बनाई है। इन्फैण्टापर तो वह मुग्ध था। वह अपनी निगाहें उसपरसे हटा ही नही पाता था और मालूम होता था मानो उसीके लिए नाच रहा हो। इन्फैण्टाको याद था कि शाही खान्दान की महिलाओने किस प्रकार इटालिन गायकपर फूलके गुच्छे फेंके थे, जिसे मैड्रिडके पोपने राजाकी उदासी दूर करनेको भेजा था। इन्फैण्टाने भी वालोमें खुँसा हुआ सफेद गुलाव निकाला और कुछ तो हँसीमें और कुछ केमराराको सतानेके लिए अखाड़ेमे वौनेके पास फेंक दिया और बहुत ही मीठे ढंगसे मुसकरा दी। वौनाने उसे बड़ी गम्भीरतासे स्वीकार किया और अपने भद्दे और सूखे ओठोंसे वह गुलाव चूमकर उसे हृदयसे लगाया, कानो तक उसका चेहरा लाल हो गया, उसकी आँखोमें एक चमक आ गई और उसने एक घुटनेपर झुककर सलाम किया।

इससे तो इन्फैण्टाको इतनी हँसी आई कि वौनेके रंगस्थलसे वाहर भाग जानेके वाद भी वह हँसती रही और अपने चाचासे उसने कहा कि यही नाच फिर कराया जाय। कैमराराने कहा कि धूप बहुत तेज़ हो गई है और राजकुमारीको महलोमे लौट चलना चाहिए। वहाँ दावतका प्रवन्ध है और जन्म-दिनकी एक बहुत बड़ी केक बनी है जिसपर उसका नाम लिखा है और ऊपर एक चाँदीकी झण्डी है। वह बहुत शानसे उठी और कहा कि थोड़ी देर वाद वौनेको फिर अपना नाच दिखाना होगा। फिर उसने टिरानुयेवाके काउण्टको इस आकर्पक उत्सवके लिए धन्यवाद दिया और अपने महलमें लौट गई। बच्चे भी जैसे आये थे उसी ढंगसे लौट गये।

जब बौनेने सुना कि उसे फिर इन्फैण्टाके सामने नाचना है और उसी-की इच्छानुसार, तो वह गर्वसे फूलकर बागमें दौड़ने लगा। वह बार-बार उसी गुलाबको चूमता था और अजब तौरसे मुँह बनाता था, खुशीमें भरकर।

बौनेको अपने उद्यानमे घुसनेकी हिम्मत करते हुए देखकर फूल बहुत ही नाराज़ हुए और जब उन्होंने उसे रविशोपर टहलते हुए देखा और भद्दे तौरपर हाथ झटकते हुए देखा तो वे चुप नही रह सके।

"वह इतना भद्दा है कि किसी स्थानमें भी जहाँ हम लोग हो उसे खेलने नही देना चाहिए।" ट्यूलिप चीखकर बोले।

"भगवान् करे वह पोस्तके फूलका रस पीकर हजारो सालकी नीदमें डूब जाय!" लिलीने गुस्सेसे लाल होकर कहा।

"कितना भयानक है वह!" कैक्टसने कहा—"वह कैसे मुडा हुआ है। और सर उसका कितना बडा है। उसे देखते ही मुझे आग लग जाती है। अगर पास आया तो मैं अपने काँटे चुभो दूँगा।"

"और देखो तो उसके पास मेरा सबसे अच्छा फूल है।" सफेद गुलाबने चीखकर कहा—"मैंने यह फूल आज सुबह इन्फैण्टाकी वर्षगाँठके उपलक्ष्यमें दिया था। इसने वहाँसे चुरा लिया"—और उसने जोरसे आवाज़ दी "चोर! चोर!"

लाल जरेनियमके फूल जो कभी घमण्ड नही करते थे क्योकि उनके बहुतसे सम्बन्धी बहुत ही निर्धन थे, घृणासे मुड गये। और जब वायलेटने कहा—"हाँ, वह बेचारा बहुत रूपहीन है, लाचारी है। तो उन्होने फौरन जवाब दिया यही तो उसका मुख्य दोष है। अगर वह दोष लाइलाज हैं तो भी सहानुभूति प्रकट करनेकी क्या जरूरत है। सच तो यह है कि कुछ वायलेटकी कलियाँ खुद सोच रही थी कि उसकी कुरूपता असह्य है और कही अच्छा होता अगर वह गम्भीर या उदास बना रहता, बजाय इसके कि वह इस तरह बाग भरमें उछलता-कूदता फिरता।

पुरानी, धूप-घड़ी जो स्वयम् वहुत ही महत्त्वपूर्ण थी क्योंकि वह सम्राट् चार्ल्स पचमको समय वता चुकी थी, वौनेको देखकर इतनी घवड़ा गई कि अपनी सुईसे दो मिनट वजाना भूल गई और वगलमें धूप खाते हुए श्वेत मयूरसे वोली—"कुछ भी हो, राजाओके लड़के राजा होते है और लकड-हारोकी सन्तान तो आखिर लकड़हारा ही होगी !" इस वक्तव्यपर मयूरको कोई भी आपत्ति नही हुई और इस जोरसे उसने उसका समर्थन किया कि ठडे जलवाले फव्वारेके हौजमे तैरनेवाली सुनहली मछलियोने वाहर सिर निकालकर जल-देवताओकी पत्थरकी मूर्तियोसे पूछा कि क्या दुनियामे कोई नई वात हो रही है ।

किन्तु कुछ भी हो चिड़ियाँ उसे चाहती थी । उन्होने उसे नाचती हुई पत्तियोके साथ परियोकी तरह गाते हुए सुना था, या उसे शाहवलूतके तने पर वैठकर गिलहरियोके साथ खेलते खाते हुए देखा था । उन्हे उसकी कुरूपतासे जरा भी अरुचि नही होती थी । खुद वुलवुल जिसे नारंगीके कुजोमें गाते हुए सुनकर चाँद झुक आता था, स्वयम् वहुत सुन्दर नही है । फिर वौनेने उनसे सदा दयापूर्ण व्यवहार किया था । उस भयानक शिशिरमे जव पेडोपर एक भी फल नही था, जमीन लोहेकी तरह सख्त पड़ गई थी और भूखसे व्याकुल भेड़िये शहरके फाटक तक चले आते थे, तव भी वह चिडियोको नही भूला था, और अपनी मोटी काली रोटीके टुकडे उन्हे खिलाया करता था ।

वे चिड़ियाँ उसके चारो ओर उड रही थी । पाससे गुजरते हुए उनके पंख उसके गालोसे छू जाते थे । वौना इतना खुश था कि उससे उन्हे वह सफेद गुलावका फूल विना दिखाये नही रहा गया और उसने यह वता दिया कि वह फूल इन्फैण्टाने खुद उसे दिया था क्योंकि वह उसे प्यार करती थी ।

वे उसके कथनका एक शव्द भी नहीं समझ पाती थीं, किन्तु इसकी

उन्हे कुछ परवाह न थी क्योकि वे एक ओर सिर झुका कर बुद्धिमत्ताका प्रदर्शन कर रही थी और समझदारीका आडम्बर भर रही थी।

छिपकलियाँ उसकी ओर बहुत आकर्षित थी। जब वह दौडते-दौडते थक गया और घासपर पड रहा, तो वे उसके चारो ओर घूमने लगी और उसे खुश करनेका प्रयत्न करने लगी। "हरेक तो छिपकलियोकी तरह सुन्दर नही हो सकता," उन्होने कहा—"यह तो केवल एक दुराशा है। फिर यद्यपि एक विरोधाभास लगता होगा किन्तु वास्तवमे अगर कोई अपनी आँखे बन्द कर ले और उसकी ओर न देखे तो वह कुरूप है ही नही। वास्तवमे छिपकलियाँ स्वभावसे ही दार्शनिक थी और कभी-कभी जब फुरसत होती थी या बाहर पानी बरसता रहता था तो वे घण्टो बैठकर गम्भीर विचार किया करती थी।"

किन्तु फूल उनके और चिडियोके व्यवहारसे बहुत झल्ला गये थे। "इससे यह मालूम होता है," फूलोने कहा—"कि इस भाग-दौडसे दूसरोपर कितना बुरा प्रभाव पडता है। शरीफ लोग उसी तरह एक जगह स्थिर रहते है जैसे हम लोग।" उसके बाद वे अपने मुँह आसमानकी ओर उठा कर शराफतका अभिनय करने लगे। जब बौना घाससे उठा और महलकी ओर जाने लगा तो वे खुशीसे फूल उठे।

"उसे तो अन्दर ही रखना चाहिए। देखो तो उसके पैर कैसे बेडौल है।" फूलोने कहा।

मगर बौना इन सब बातोसे अनजान था। वह चिडियोको बहुत प्यार करता था और फूलोको वह बडी आश्चर्यजनक वस्तु समझता था और उनसे दुनियामे सबसे ज्यादा प्यार करता था, (हाँ, इन्फैण्टाको छोडकर!) इन्फैण्टाने उसे सफेद गुलाब दिया था और वह उसे प्यार करती थी। कैसा अच्छा होता अगर वह उसके साथ ही रहता। इन्फैण्टा मुसकराती और वह उसे बहुतसे खेल सिखाता। यद्यपि वह महलोमे कभी नही रहा किन्तु उसे बहुतसे खेल आते थे। नरकुलके पिंजडेमें वह फतिंगे फँसाना जानता था।

बाँसोसे वह इतनी अच्छी बाँसुरी वना लेता था कि उसपर संगीत मोहित हो जाता था। वह हर पक्षीकी आवाज़ वोल लेता था और कभी भी कोयल या सारसको वुला सकता था। वह जानवरोकी राह पहचानता था, नर्म-नर्म पदचिह्नोंको देखकर वह खरगोशका रास्ता पहचान सकता था और कुचली हुई पत्तियोको देख जगली सुअरकी राह जान लेता था। वह सव तरहके जगली नाच जानता था—पतझडकी लाल पोशाकवाला ताण्डव नृत्य, नीले सैण्डल पहनकर पकी फसलके अवसरपर नाचा जानेवाला हास्य नृत्य, जाडेका वर्फानी नृत्य और वसन्तका कलियोवाला नृत्य। उसे जगली कवूतरोका घोसला मालूम था। इन्फैण्टा सचमुच जगलोमे चल कर वहुत ही खुश होगी। वह उसे अपने ही विस्तरपर ला देगा और खुद खिड़कीके वाहर खडे होकर सुवह तक पहरा देगा। सुवह होते ही वह खिड़कीको आहिस्तेसे खोलकर उसे जगायेगा और फिर वे दिन-भर मिलकर नाचेंगे। जंगलमें एकान्त भी तो नही लगता। कभी सामने सफेद घोडे-पर सवार होकर कोई विशप जंगलसे निकलता है, कभी मृगछालाके वस्त्र पहने और हरे मखमलकी टोपी लगाये हुए शिकारी कलाई-पर वाज विठालकर निकलते हैं। अंगूरी मौसममे हाथ लाल किये हुए और शरावके पीपे ले जाते हुए कलवार दिखाई पडते है। रातको लकडहारे लकडियाँ सुलगाकर आँच तापते है, आगमे जंगली फल भुन-भुनकर चिट-खते है, पासकी गुफाओसे डाकू निकल आते है और उनके साथ मिलकर रंगरलियाँ मनाते है। एक वार उसने टोलेडोकी धूल भरी सड़कपर एक लम्वा जलूस घूमते हुए देखा था। आगे-आगे महन्त लोग गाते हुए चल रहे थे, चमकदार झण्डे और सुनहरे क्रास उनके हाथमें थे। उनके पीछे शिर-स्त्राण, जिरह-वख्तर पहने और चाँदीके भाले लिये हुए सैनिक थे जिनके वीचमे तीन व्यक्ति थे जो नंगे पैरो थे, पीला चोगा पहने थे जिनपर विचित्र तस्वीरें वनी हुई थी। वे अपने हाथोमें तीन जलती हुई मोमवत्तियाँ लिये हुए थे। सचमुच जगलमें वहुत-सी दर्शनीय वस्तुएँ है और फिर भी जव वह

थक जायगी तो वह उसके लिए कोई नम कद्दार ढूँढ लेगा या उसे गोदमें उठाकर ले चलेगा, क्योंकि यद्यपि वह बौना था, किन्तु कमजोर नही था। वह उसके लिए लाल फूलोकी माला गूँथेगा। जब राजकुमारी चाहेगी उसे उतारकर फेंक देगी और वह दूसरी माला गूँथ देगा। वह उसके लिए सुबह शबनमसे भीगे हुए फूल और रातको जुगनू लायेगा जो उसकी श्यामल सुनहली अलकोमें तारोकी तरह चमकेंगे।

किन्तु राजकुमारी है कहाँ ? उसने श्वेत गुलाबसे पूछा किन्तु उसने कोई उत्तर नही दिया। सारे महलमे सन्नाटा छाया हुआ था जहाँ खिड़कियाँ भी नही बन्द थी, वहाँ मोटे पर्दे डालकर रोशनी रोक दी गई थी। वह चारो ओर घूमकर भीतर जानेका कोई रास्ता ढूँढता रहा, अन्तमें उसने एक गुप्त द्वार देखा जो खुला हुआ छूट गया था। वह चुपकेसे भीतर घुस गया और उसने देखा कि वह बडे शानदार हालमें है। इतना शानदार था वह हाल कि जगल भी उसके सामने मात था। चारो तरफ खूब चमक थी, और फर्शपर भी बहुत सुन्दर रगीन संगमरमर जडे हुए थे। मगर इन्फैण्टा वहाँ नही थी, केवल कुछ सफेद मूर्तियाँ थी जो अपने जस्तेके सिहासनोसे चुपचाप उदास काली आँखोंसे मुसकराते हुए उसकी ओर देख रही थी।

हालके सिरेपर काले मखमलका जरीदार परदा लटक रहा था। उसपर राजाको प्रिय लगने वाले सूर्य और तारोके चित्र कढे हुए थे। शायद इन्फैण्टा इसके पीछे छिपी हो ?

वह चुपचाप गया और परदा हटा दिया। वहाँ इन्फैण्टा नही थी, दूसरा और भी सुन्दर प्रकोष्ठ था, पहलेसे भी ज्यादा सुन्दर। दीवालोपर क्रोगियाका बिना हुआ एक शिकारी चित्र वाला पर्दा लटक रहा था, जिसको बनानेमें एक फ्लेमिश कलाकारको सात वर्ष लगे थे। कभी किसी ज़मानेमे यह जाँ ले फूका कमरा था। यह उस पागल राजाका नाम था जिसपर शिकारका भूत इस बुरी तरह सवार रहता था कि वह कभी-कभी सनकमे

चित्रके घोडेको जोतनेका प्रयत्न करता था, या अपना शिकारी बिगुल वजाते हुए भागते हुए स्वर्ण-मृगपर भाला फेंका करता था। अव यह मन्त्रणा-गृह वना दिया गया था। वीचकी मेजपर मन्त्रियोंके कागजात रक्खे हुए थे जिनपर स्पेनका राज-पुष्प लाल ट्यूलिप वना हुआ था और हैप्सवर्गके घरानेके राजकीय चिह्न अंकित थे।

वौनेने भयभीत होकर चारो ओर देखा और रुक गया। वह विचित्र मौन घुडसवार शिकारी जो इतनी तेज़ीसे जगलमे दौड़ रहा था और फिर भी कोई आवाज़ नही हो रही थी, उन प्रेतोसे भी ज्यादा भयंकर लगा जिनके विपयमे लकडहारे रातको वात किया करते थे। उसने मरे हुए शिकारियोके प्रेत भी देखे जो रातको घूमते है और अगर कोई मनुष्य मिल जाय तो उसे हरिन वनाकर उसीका शिकार करने लगते है। किन्तु फिर उसे इन्फैण्टाका ध्यान आया और उसने हिम्मत वाँधी। वह उससे एकान्तमे मिलना चाहता था और मिलकर यह वताना चाहता था कि वह भी उसे प्यार करने लगा है। शायद वह अगले कमरेमे है?

वह उस ईरानी कालीनपर दौड़ा और दूसरे कमरेमे गया। नही, इन्फैण्टा यहाँ भी नही थी। कमरा विलकुल खाली था।

यह विदेशी राजदूतोसे मिलनेका कमरा था। कुछ दिन पहले इसी कमरेमे इगलैण्डके दूतने आकर युवराजसे अपनी रानीके विवाहका प्रस्ताव रक्खा था। मोटे चमकदार चमडेके परदे पडे हुए थे। ऊपर एक शाही फानूस था जिसमें तीन सौ मोमवत्तियाँ जल सकती थी। नीचे सुनहले कपड़ेका शामियाना था जिसपर पोतसे शेर और किलेकी मीनारे वनी हुई थी। उसके नीचे राजसिंहासन था। वह सिंहासन रूपहली वूटियो वाली मखमली चादरसे ढँका हुआ था। सिंहासनके दूसरे सोपानपर इन्फैण्टाकी प्रार्थनाकी चौकी थी जिसपर चाँदीके तारोवाली गद्दी पडी हुई थी। सिंहासनके नीचे, शामियानेके छोरपर पैपेल नन्शियोका आसन था। किसी भी आम दरवारमे केवल पैपेलको ही राजाकी उपस्थितिमे वैठनेका अधि-

कार था। सामनेके एक छोटी-सी चौकीपर पैंपेलकी धार्मिक टोपी रक्खी थी। सिंहासनके सामनेकी दीवालपर एक चित्र फिलिप द्वितीयका था और दूसरे चित्रमे एक बडे शिकारी कुत्तेके साथ शिकारी पोशाकमे चार्ल्स पचम खडा था। दोनो खिड़कियोंके बीचमें एक बडी-सी आवनूसकी आलमारी थी जिसपर हाथी दाँतसे हालवीनने स्वयम् ताण्डव नृत्यका दृश्य अकित किया था।

किन्तु बौनेको इन विलास-उपकरणोमे कुछ भी दिलचस्पी न थी। शामियानेके सारे मोती एक गुलावके मुकाविलेमें कुछ नही थे और सिंहासन तो एक पाँखुरीके बरावर भी नही था। वह सभामें जानेके पहले ही इन्फैण्टासे मिलना चाहता था और कहना चाहता था कि नाचके बाद वह उसीके साथ चली चले। यहाँ महलमे हवा भारी और सुस्त पड जाती है, किन्तु जङ्गलमें उन्मुक्त पवनके झकोरे उसकी अलकोंसे अठखेलियाँ करेंगे और सुनहले करो वाली धूप उसके सग आँखमिचौनी खेलेंगी। जङ्गलमें फूल है। वे यद्यपि महलोके फूलोकी तरह शानदार तो नही होते किन्तु जङ्गली फूलोमें बडी ताजगी और सुगन्ध होती है। उसे विश्वास था कि यदि वह इन्फैण्टासे कहेगा, तो वह अवश्य उसके साथ चली चलेगी। जव वह हरे-भरे जङ्गलमे जायगी, तो वह दिन भर उसके लिए नाचेगा। उसके अधरोपर एक हल्की-सी मुसकान चमक गई और वह दूसरे कमरेमें चला गया।

दूसरा कमरा सवसे ज्यादा आकर्षक था। दीवारोपर चाँदीके काम वाला, पक्षियोके चित्र वाला, गुलाव फूलोसे अंकित दमिश्कका आवरणपट पडा था। पलङ्ग और चौकियाँ मीनाकित चाँदीके थे। अंगीठियोंके सामने दो वडे-वडे परदे पडे थे जिनपर पुष्प-बाण लिये हुए अनग झूल रहे थे और हरे मणियोका फर्श बहुत दूर तक जाता हुआ मालूम होता था। वह कमरा सूना भी नही था। कमरेके दूसरे छोरपर दर्वाजेके नीचे कोई था जो उसकी ओर देख रहा था। उसका हृदय धडकने लगा, खुशीकी चीख

उसके गलेसे निकली और वह आगे वढ़ा। उसके आगे वढते ही वह छाया भी आगे वढी, और नज़रोंमें साफ आ गई।

इन्फैण्टा! नही यह तो कोई दानव था, वहुत ही कुरूप दानव। उसके पीठपर कूवड़ था, उसके अंग वक्र थे, सर हिल रहा था और काली जटाएँ झूल रही थी। वौनेने होठ सिकोड़े, दानवने भी वही किया। वौना हँसा, वह भी हँस पड़ा। उसके भी हाथ कमरपर थे जैसे वौनेके थे। वौनेने झुक कर उसे व्यंग्यसे सलाम किया, उसने भी उसका उत्तर दिया। वौना आगे वढ़ा, वह भी क़दमसे क़दम मिलाकर आगे वढ़ा, जव वौना रुका तो वह भी रुक गया। वह हँस पड़ा और हाथ फैलाकर आगे वढा। वौनेके हाथ उसके हाथोसे छू गये। वे वर्फकी तरह ठडे थे। वह डर गया। उसने दानवको पीछे ढकेलना चाहा, मगर वीचमे कोई ठंडी और कड़ी चीज़ थी। वौनेके चेहरेपर भय था, दानव भी डरा हुआ-सा था। वौनेने उसपर घूँसा ताना। उसने भी यही दोहराया। वौना पीछे हट गया—वह भी पीछे हट गया।

यह क्या है? उसने क्षण भरको सोचा और अपने चारो ओर देखा। आश्चर्य था। कमरेमे हरेक चीज़की छाया थी। सामनेकी तस्वीर, दूसरे दीवालपर प्रतिविम्वित थी, पहले दरवाज़ेके ऊपर सोया हुआ मृगछौना दूसरी ओर भी झलक रहा था, और इधरकी अप्सराकी रजत मूर्ति वाहु फैलाये, दूसरी अप्सरासे मिलनेके लिए व्याकुल थी।

उसने जंगलोमे केवल प्रतिध्वनि सुनी थी। तो क्या यह प्रतिध्वनि है? क्या जैसे वाणीकी प्रतिध्वनि होती है, क्या वैसी ही नज़रोंकी भी प्रतिध्वनि होती है। क्या छायाजगत् भी उतना ही यथार्थ हो सकता है जितना पार्थिव जगत्। क्या यह यथार्थकी ही छाया है?

वह घवड़ा गया। उसने अपने सीनेके पाससे इन्फैण्टाका दिया हुआ श्वेत गुलाव निकाला और चूम लिया। छाया दानवके पास भी एक गुलाव

का फूल था, बिलकुल वैसा ही। वह भी उसे उसी प्रकार भयानक होठोंसे चूम रहा था।

क्षणभरमें बौना असलियत समझ गया। वह निराशासे चीख पड़ा और फर्शपर लोट-लोटकर सिसकियाँ भरने लगा। तो यह दानव उसीकी छाया है। वह इतना कुरूप कुबडा और घृणित है। इसलिए बच्चे हँस रहे थे और इन्फैण्टा भी उसीकी कुरूपतापर व्यंग कर रही थी। क्यो नही उसे जगलमें ही रहने दिया गया। वहाँ कमसे कम कोई दर्पण तो नही था। उसके पिताने उसे मनोरंजनके लिए बेचनेके बजाय मार क्यो नही डाला' उसने सफेद गुलाब नोचकर फेंक दिया और उसकी आँखोंसे जलते हुए आँसू ढलकने लगे। छाया-दानवने भी गुलाबकी पाँखुरी-पाँखुरी नोचकर फेंक दी। बौनेने उसकी ओर देखा उसका चेहरा दर्दसे भरा हुआ था। बौनेने अपनी आँखें हथेलियोसे ढँक ली और किसी घायल हरिणकी तरह छाँहमें लेटकर सिसकने लगा।

उसी समय अपनी सखियोके साथ इन्फैण्टा कमरेमे आई। उसने और उसकी सखियोने देखा कि बौना औंधा लेटा हुआ अपने हाथ पटक रहा है। वे सब खिलखिलाकर हँस पडी और बौनेके चारो ओर खडी होकर तमाशा देखने लगी।

"इसका नाच बडा मनोरंजक था, किन्तु इसका अभिनय तो और भी हास्यास्पद है। हाँ उतना अच्छा और स्वाभाविक नही है जितना कठ-पुतलियोका अभिनय होता है।" और वह अपना पखा झलकर हँसने लगी।

किन्तु बौना चुप रहा। उसकी सिसकियाँ धीमी पडती गईं। फिर एकाएक उसने मुट्ठियाँ कस ली। वह उठा और फिर गिर पड़ा और चुपचाप पड़ा रहा।

"शाबाश !" इन्फैण्टाने कहा "खूब कलाबाज़ी थी यह। मगर अब उठो और नाचो।"

"हाँ उठो !" सब बच्चे बोले, "तुम तो बन्दरोसे भी ज्यादा अच्छा नाचते हो ! और तुम्हारा चेहरा भी कम हास्यास्पद नही है।"

किन्तु बौनेने कुछ भी जवाब न दिया।

इन्फैण्टाने पैर पटका और अपने चाचाको बुलाया जो रविशपर टहलते हुए कुछ राजकीय पत्र पढ रहा था।

"बेचारा बौना ऊँघ रहा है" राजकुमारी व्यग्र होकर बोली "उसे जगाइए। हम लोग नाच देखेंगे।"

डान पेड्रो आया और झुककर अपने दस्तानेको बौनेके चेहरेपर पटकते हुए बोला—"उठो, स्पेन और इन्डीजकी राजकुमारी अपने मनोरजनके लिए तुम्हारी सेवाएँ माँगती है।"

लेकिन बौना चुपचाप पड़ा था।

डान पेड्रोने झल्लाकर कहा—"जल्लादको बुलाओ !" मगर चेम्बरलेन गम्भीर हो गया। उसने झुककर बौनेके सीनेपर हाथ रक्खा। क्षण भर बाद वह उठा और जरा झुककर राजकुमारीको अभिवादन करते हुए बोला—"राजकुमारी, आपका बौना अब कभी नही नाचेगा। अफसोस !"

"मगर क्यो नही नाचेगा ?" राजकुमारीने हँसते हुए पूछा।

"क्योकि उसका दिल टूट गया है।" चेम्बरलेनने कहा।

"दिल !" इन्फैण्टाने भँवें सिकोडकर पल्लव जैसे अधर बिचकाकर कहा—"आगेसे खेल-तमाशेके लिए ऐसे ही लोग लाये जाये जिनके दिल-विल न हों !"

इतना कह वह उछलती हुई बागमे भाग गयी।

एक लाल गुलाबकी क़ीमत
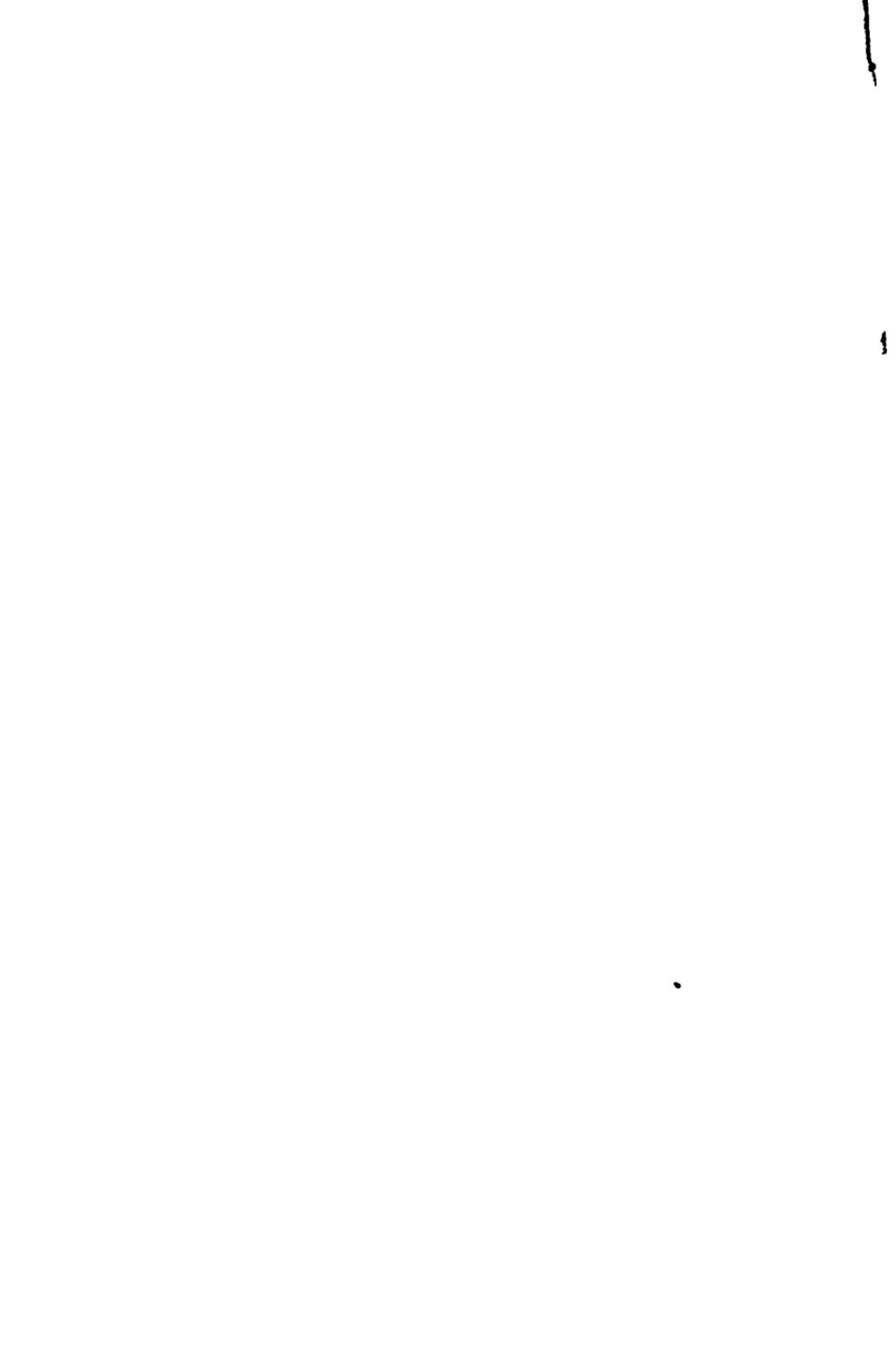
एक लाल गुलाबकी क़ीमत

"वह कह रही थी कि वह तभी मेरे साथ नाचेगी जब मैं उसके लिए लाल गुलाब ला दूँगा !" तरुण छात्रने कहा—"मगर मेरे बाग़मे एक भी गुलाब नही है !"

पासके पेड़के घोंसलेसे बुलबुलने उसे सुना और पत्तियोंसे झाँककर आश्चर्यसे सर हिलाने लगी !

"मेरे बागमे कोई भी गुलाब नही है", वह बोला और उसकी सुन्दर आँखोंमे आँसू छलक आये :"ओह ! सुख कितनी छोटी-छोटी बातोपर निर्भर है। मैंने सारी विद्याएँ पढ ली, सारे दार्शनिकोका रहस्य समझ लिया मगर एक गुलाबके अभावने मेरे जीवनको दुखी बना दिया है।"

"लो, यह एक सच्चा प्रेमी है ! हर रातको मैं उसके गीत गाती थी यद्यपि मैं उसे जानती नही थी। रोज़ रातको मैं तारोंसे उसकी कहानी कहती थी और आज वह मेरे सामने है। उसके बाल भँवरोकी तरह काले हैं और उसके होठ उसके इच्छित गुलाबकी तरह लाल है। मगर वासनासे उसका चेहरा हाथी-दाँतकी तरह ज़र्द पड़ गया है और उसकी भौंहोपर शोक छा गया है !" बुलबुलने कहा।

"राजकुमारने कल नृत्यका आयोजन किया है !" वह छात्र बोला—"और मेरी रानी भी नृत्यमें भाग लेगी। अगर मैं एक लाल गुलाब उसे ला दूँ तो वह सुबह तक मेरे साथ नाचेगी, वह मेरे कन्धोंपर अपना सर रख

देगी और मैं उसकी कमर अपनी बाहुओमे कस लूँगा। लेकिन अगर मैं गुलाव न ला सका तो वह मेरी ओर देखेगी भी नही—"

"लो, यह सचमुच एक गम्भीर प्रेमी है। मै जिसका गीत गाती हूँ, यह उस पीड़ाका अनुभव करता है। जो मेरा आनन्द है वह इसकी पीड़ा है। प्रेम भी कैसी अजीव चीज़ है। हम सोने-हीरेके भी मोल उसे नही ख़रीद सकते!" वुलवुल वोली!

"मेरी प्रेमिका सितार और वेलेकी गतपर नाचेगी। नाचते-नाचते वह ज़मीनसे ऊपर उठ जायगी! उसके चारो और लोग नाचते होगे। मै केवल उससे दूर रहूँगा क्योकि मेरे पास उसे उपहार देनेके लिए कोई लाल गुलाव नही है।" कहते-कहते वह घासपर लेट गया और मुँह ढाँपकर रोने लगा।

"वह रो क्यो रहा है?" एक पतिंगेने पूछा।

"मालूम नही क्यों" सूर्य किरणपर तैरती हुई एक तितली वोली।

"वह एक लाल गुलावके लिए रो रहा है।" वुलवुलने वताया।

"लाल गुलावके लिए! यह भी क्या पागलपन है।" पतिंगेने कहा और हँस पड़ा। वह भावुकता और कल्पनाका सदा ही उपहास किया करता था।

मगर वुलवुल उसके दुखके रहस्यको समझती थी और वह डालपर वैठी चुपचाप प्रेमके रहस्यको सोच रही थी।

एकाएक उसने अपने पर फैलाये और छायाकी तरह उड़ चली। मैदानके वीचोवीच एक गुलावका पौदा था। वह उसकी एक टहनीपर उतर पड़ी—"मुझे एक लाल गुलावका फूल दे दो, मैं तुम्हें वहुत मीठा गीत सुनाऊँगी!"

मगर पेड़ने अपना सर हिलाकर इन्कार कर दिया—"मेरे गुलाव सफ़ेद हैं, इतने सफेद जितना दुग्ध फेन या हिमहास। वहाँ उस धूप-घडीके पास दूसरे पौदेके पास जाओ!"

बुलबुल उड़कर उस पौदेके पास गई।

"मुझे एक लाल गुलाब दो! मैं तुम्हें अपना सबसे मीठा गीत सुनाऊँगी।"

मगर पौदेने अपना सिर हिलाकर इन्कार कर दिया।

"मेरे गुलाब पीले हैं, इतने पीले जितनी दोपहरकी धूप, जितने सोनेके तार, मगर उस छात्रकी खिड़कीके नीचेवाले पौदेके पास जाओ, वह शायद तुम्हारे मन लायक गुलाब दे सके!"

बुलबुल उस पौदेके पास गई।

"मुझे एक लाल गुलाब दो! मैं तुम्हें एक बहुत मीठा गीत सुनाऊँगी।"

"मेरे गुलाब लाल हैं, इतने लाल जितने साँझके बादल, जितने मूँगेके पखे जो समुद्री गुफाओमें डुलते रहते है। मगर जाडेसे मेरी नसें जम गई है, तूफानने मेरी टहनियोको तोड़ डाला है और अब इस वर्ष मुझमे एक भी गुलाब नही लगेगा!"

"सिर्फ एक गुलाब," बुलबुल सिसककर बोली—"मुझे केवल एक गुलाब चाहिए! क्या किसी तरकीबसे मुझे एक गुलाब नही मिलेगा।"

"केवल एक तरकीब है, मगर वह इतनी भयानक है कि मैं उसे बता भी नही सकता!"

"बताओ, मैं घबडाती नही हूँ।"

"अगर तुम्हें लाल गुलाब चाहिए तो चाँदनी रातमे तुम्हें अपने सगीतसे उसकी पाँखुरियाँ बिननी होगी और अपने हृदयके रक्तसे उसे रँगना होगा। किसी तीखे काँटेपर अपनी छाती अड़ाकर तुम्हें गाना होगा। रात भर तुम गाओगी और तुम्हारे दिलका खून मेरी नसोमें उतरता रहेगा।"

"एक लाल गुलाबके लिए मौतकी कीमत बहुत मँहगी है!" बुलबुलने कहा—"और फिर जिन्दगी कितनी प्यारी होती है! हरे-भरे जगलोमें गीतकी गूँजें, सोनेके रथपर सूरज और मोतीके रथपर चाँद! कितनी

खुशनुमा है ये चीजें । मगर फिर भी प्रेम जीवनसे ज्यादा मूल्यवान् है और फिर मनुष्यके हृदयके सामने चिडियाके हृदयका भला क्या मोल !"

और उसने अपने भूरे पख फैलाये और उड चली ।

छात्र अब भी घासपर लेटा था और उसकी खूबसूरत पलकोसे अभी आँसू नही सूखे थे ।

"अब तुम हँसो !" बुलबुलने कहा—"तुम्हें तुम्हारा गुलाब मिल जायगा । मै उसे संगीतके रेशोसे बुनूँगी और अपने हृदयके रक्तसे रगूँगी । मगर उसके बदले मै तुमसे सिर्फ यही याचना करती हूँ कि तुम सच्चे प्रेमी बनो ! प्रेम धर्मसे अधिक पवित्र होता है । उसके पख, उसका शरीर आगकी पुनीत लपटोसे बना होता है ! उसके होठ शहदकी तरह मीठे और उसकी साँस सौरभकी तरह नशीली होती है ।"

छात्रने अपना सिर उठाया और सुनने लगा, मगर उसकी समझमे कुछ नही आया, क्योकि छात्र केवल वही बातें समझ पाते है जो किताबोमे लिखी होती हैं । किन्तु पासके पेडने सुना और समझा और वह बहुत उदास हो गया । बुलबुलने उसकी डालोमे अपना घोसला बनाया था और इसलिए वह बुलबुलको प्यार करता था ।

"अच्छा तो आज अपना अन्तिम गीत सुना दो !" उसने एक ठण्डी आह भरकर कहा—"तुम्हारे बाद मुझे बड़ा सूना-सूना लगेगा !"

बुलबुल गाने लगी ! उसकी आवाजमें शराब बरस रही थी !

जब उसने अपना गीत खतम किया तो छात्र खडा हुआ और उसने अपनी जेबसे एक पेन्सिल और नोट बुक निकाल ली—"उसके गीतोमें सौन्दर्य है !" उसने मन-ही-मन कहा—"इससे तो इन्कार नही किया जा सकता, मगर ये गीत जीवनके बिलकुल निकट नही है ! वास्तवमे वह रोमान्टिक कलाकारोकी तरह हैं जिनमे सौन्दर्य बहुत होता है, यथार्थ बिलकुल नही । वह जनताके लिए कुछ भी नही सोचती । उसकी कला

व्यक्तिवादी है, स्वार्थी है, पतनोन्मुख है ! हाँ, उसमें सन्ध्याकालीन सौन्दर्य अवश्य है ! मगर उसका उपयोग क्या है ?" वह अपने कमरेमें गया, बिस्तरेपर लेटकर अपनी प्रेमिकाके बारेमें सोचता रहा और सो गया !

जब आकाशमें चाँद उग आया तो बुलबुल गुलाबके पौदेके पास गई और काँटेसे अपनी छाती अड़ाकर सारी रात गाती रही ! शीतल बिल्लौरी चन्द्रमा झुक आया और ध्यानसे सुनता रहा। वह सारी रात गाती रही और काँटा धीरे-धीरे उसकी छातीमें धँसता रहा।

उसने पहले एक किशोर और किशोरीके हृदयमें सहसा जग जाने वाले प्रेमके गीत गाये और पौदेकी टहनीपर हर गीतपर एक गुलाबकी पाँखुड़ी जमती गई। वह पीली थी जैसे नदीके किनारेकी झुटपुटी साँझ, जैसे उषाकी हथेलियाँ, जैसे सुबहके पंख !

"और समीप आओ !" पौदा बोला—"वरना दिन निकल आयेगा और गुलाब अधूरा रह जायगा !"

बुलबुल और भी समीप आती गई और उसके गीतोंके स्वर और भी तीखे होते गये क्योंकि अब वह तरुण और तरुणियोंके वासनामें रंगीन प्रेमके गीत गा रही थी।

गुलाबकी पाँखुड़ियोंपर हल्की गुलाबी छाँह आ गई जैसे प्रथम प्रणय चुम्बनकी गुलाबी लाज। मगर काँटा अभी तक उसके दिल तक नहीं चुभा था और इसलिए पाँखुड़ियाँ अभी बिलकुल लाल नहीं हो पाई थीं।

"और समीप आओ—जल्दी करो"—पौदा बोला "वरना दिन निकलने ही वाला है !"

बुलबुलने और ज़ोर लगाया और काँटा नसोंको चीरता हुआ दिलमें चुभ गया। एक दर्दकी ज़हरीली लपट उसके ख़ूनमें गूँज गई। दर्द बढ़ता जा रहा था और वह पागल-सी गाती जा रही थी क्योंकि अब वह उस प्रेमके गीत गा रही थी जिसकी परिणति मृत्युमें होती है।

और गुलाव सहसा लाल हो गया।

मगर वुलवुलकी आवाज़ टूट गई, उसके पख फड़फड़ा कर गिर गये, उसकी आँखके आगे झिलमिली छाँह आगई और उसके गलेमे खून अटकने लगा।

उसने जोर लगाकर आखिरी तान भरी। चाँदने सुना और वह सिहर उठा। लाल गुलावने सुना वह खुशीसे काँप उठा और उसने नसीमके झोकेमे अपनी पाँखुड़ियाँ खोल दी।

"देखो! देखो! तुम्हारा निर्माण पूरा हो गया!" पौदेने कहा। मगर वुलवुलने कोई जवाव नही दिया क्योकि वह घासपर मरी हुई पडी थी और उसके सीनेमें एक काँटा गडा हुआ था।

दोपहरको छात्रने अपनी खिड़की खोली और वाहर झाँका?

"वाह! किस्मत तो देखो! आज एक लाल गुलाव खिल गया है।" उसने झुक कर उसे तोड़ लिया और वह फौरन प्रोफेसरके घरकी ओर भागा।

प्रोफ़ेसरकी लड़की रीलपर नीला रेशम लपेटते हुए वैठी थी।

"लो तुमने अपने नाचके लिए लाल गुलावकी शर्त रखी थी न!" उसने कहा—"लो मै तुम्हारे लिए कितना लाल गुलाव लाया हूँ! तुम इसे अपनी छातीपर लगाकर नाचोगी और मैं तुम्हें देखूँगा!"

मगर लड़कीने केवल भौंहे सिकोड़ ली!

"ऊँह, यह मेरी पोशाकपर फवेगा नही! और फिर, सेठजीके भतीजे-ने कुछ सच्चे हीरे मेरे लिए भेजे है। हीरोके सामने फूलकी क्या विसात!"

"तुम वड़ी कृतघ्न मालूम देती हो!" छात्रने व्यथित होकर कहा और फूलको नालीमें फेंक दिया और एक गाड़ी उसे कुचलती हुई निकल गई।

"कृतघ्न, कृतघ्न !" लड़की बोली—"देखो जी, तुम्हे तमीज़से बोलना भी नही आता ! आखिर हो क्या ? तुम्हारी हैसियत क्या है ? सेठजीका भतीजा सोनेके बटन लगाता है, तुम्हारे पास चाँदीकी गोली भी नही होगी !" और वह कुर्सीसे उठकर घरमें चली गई !

"प्यार भी कैसा पागलपन है !" छात्रने लौटते हुए कहा—"यह तो तर्कशास्त्रसे भी गया-गुज़रा है क्योकि उससे कुछ भी नही सिद्ध होता ! यह सदा ही असम्भव वस्तुओकी कल्पना करता है और काल्पनिक ससारमे विहार करता है। वास्तवमें यह बिलकुल ही काल्पनिक है और यह कल्पनाका युग नही है। मैं दर्शनशास्त्र पढूँगा और यथार्थवाद और भौतिकवादका अध्ययन करूँगा !"

वह घर लौट आया और एक मोटी-सी पुरानी किताब निकालकर पढने लगा !

नाविक
और उसका अन्तःकरण
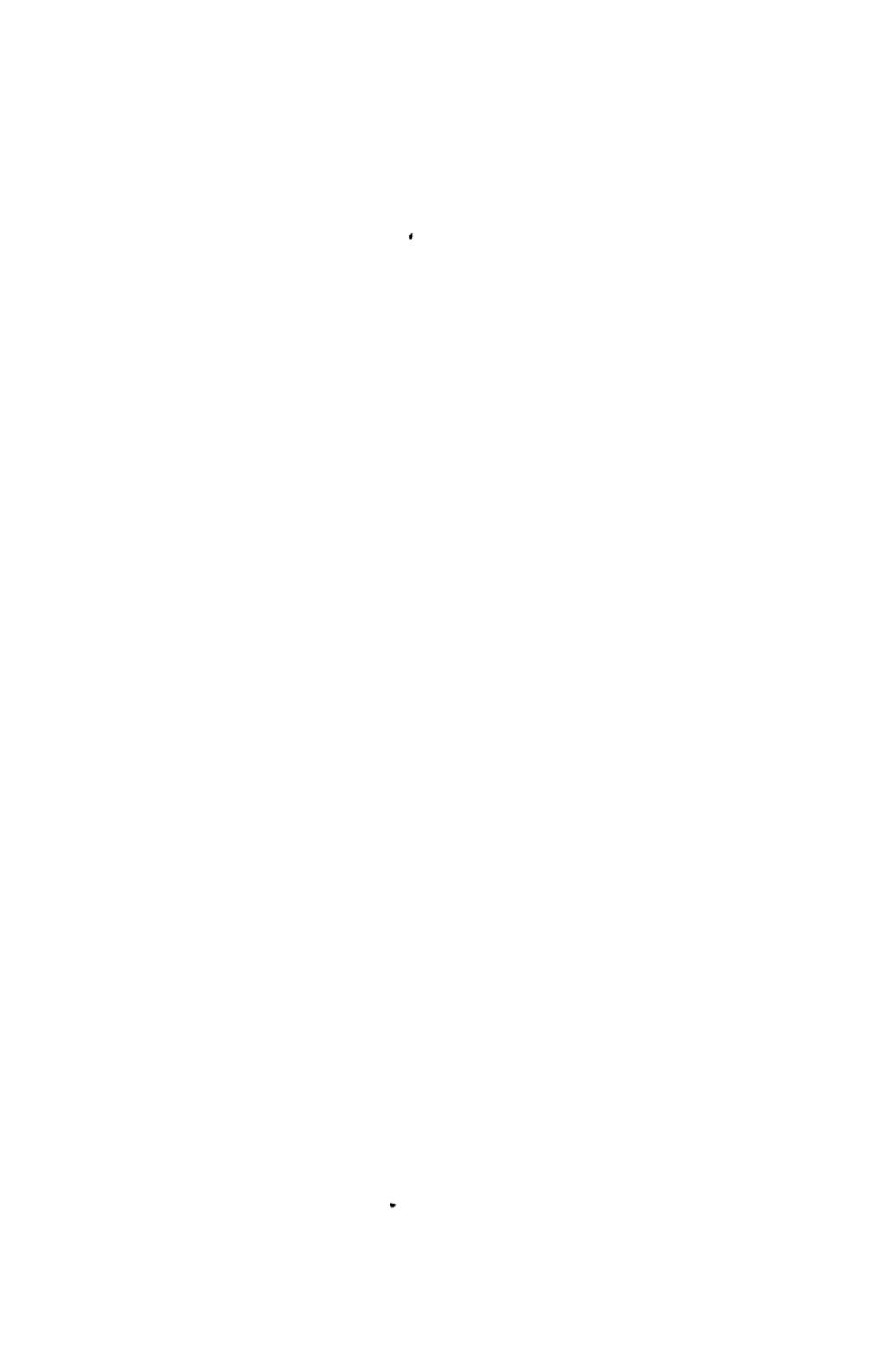
नाविक और उसका अन्तःकरण

हर साँझको नाविक समुद्र-तटपर जाता था और जलकी लहरोंपर अपना जाल फैला देता था।

जब कभी वायु स्थलसे समुद्रकी ओर बहती थी तो उसे खाली हाथ लौटना पड़ता था क्योंकि झकोरे बहुत तेज़ होते थे और बहुत ऊँची-ऊँची लहरे उठने लगती थीं। किन्तु जब समुद्री हवा स्थलकी ओर बहती थी तो मँझधारकी मछलियाँ भी किनारेकी ओर आकर उसके जालमें फँस जाती थीं, वह उन्हे बाज़ार ले जाता था और बेच देता था।

एक साँझको, निकालनेके वक़्त जाल इतना भारी लगा कि वह उसे नावपर बड़ी कठिनाईसे खींच सका। वह हँसा और बोला—"आज शायद मेरे जालमें सभी मछलियाँ आ गई हैं—या सम्भव है कि कोई समुद्री दानव फँस गया हो। लोगोंके लिए वह एक आश्चर्यकी चीज़ होगी और महारानी तो उसे बहुत ही पसन्द करेंगी।" और उसके बाद उसने पूरी ताक़त लगाकर जालकी डोरियाँ खींची। उसके गोरे हाथकी नीली नसें ऐसे उभर आईं जैसे किसी ताम्र पत्रपर खिंची हुई नीलमकी रेखाएँ।

किन्तु उसमें न कोई मछली थी, न कोई समुद्री दानव, सिर्फ एक छोटी-सी जलपरी पलकें बन्द किये गहरी नींदमें सो रही थी।

उसके बाल भीगे हुए स्वर्ण तारोंकी तरह थे—हर एक बाल ऐसा लगता था जैसे शीशेके प्यालेमे सोनेका तार। उसके अंग हाथीदांतकी तरह स्वच्छ थे—उसके पंख चाँदी और मोतीके थे। और उसके चारों

ओर समुद्रकी हरी सिवार लपटी थी। उसके कान सीपियोकी भाँति सुडौल थे और उसके होठ मूँगेकी तरह गुलावी। उसके शीतल वक्षपर जलकी लहरें टकराती थी और उसकी पलकोंपर नमक जम गया था।

वह इतनी सुन्दर थी कि जव नाविकने उसे देखा तो वह आश्चर्यमे डूव गया—उसने अपना हाथ वढाया, जालको अपने समीप खीचा और वगलमें झुककर उसे वाहुओमें कस लिया। जव उसने उसे छुआ तो वह चौंककर भयभीत जलपक्षीकी तरह चीख उठी, उसकी ओर अपनी झिलमिल आँखोंसे डरकर देखा और भागनेके लिए छटपटाने लगी। किन्तु नाविकने उसे जकड लिया और छूटने नही दिया।

जव जलपरीने देखा कि वह किसी भाँति उससे छूट नही सकती तो वह रोने लगी और वोली—"मै विनती करती हूँ मुझे जाने दो। मै एक राजाकी अकेली राजकुमारी हूँ—मेरा पिता वृद्ध और अकेला है।"

किन्तु उस तरुण नाविकने उत्तर दिया—"मैं तुम्हे केवल एक शर्तपर जाने दे सकता हूँ—वादा करो कि जव मै तुम्हे वुलाऊँ तुम आकर मुझे गाना सुनाओगी क्योंकि मछलियाँ तुम्हारे गीतोंसे आकर्पित होकर आयेंगी और मेरे जालमे फँस जायँगी!"

"यदि मै वादा कर दूँ तो क्या तुम सचमुच ही मुझे जाने दोगे?" जलपरीने रोकर पूछा।

"हाँ, तुम सचमुच जा सकोगी!" नाविकने जवाव दिया।

जलपरीने वादा कर दिया—वरुणकी शपथ खाई। नाविकने अपनी भुजाएँ ढीली कर दी—वह एक विचित्र भयसे काँपती हुई जलमे अदृश्य हो गई!

हर साँझको वह तरुण नाविक समुद्र-तटपर जाया करता था और

जलपरीको पुकारता था। वह जलमेंसे निकल आती थी और पास बैठकर उसे गीत सुनाती थी। बड़ी-बड़ी मछलियाँ उसके चारो ओर घिर आती थीं और समुद्री पक्षी उसके चारो ओर मडराने लगते थे।

और वह भी विचित्र गीत सुनाती थी। क्योंकि वह समुद्रके लोगोंके विषयमें गाती थी जो समुद्री गुफाओंमें रहते हैं। वह उन समुद्री चारणोंके विषयमें गाती थी जो बहुत ही वृद्ध हैं—जिनके बाल हरे पड़ गये हैं और जो राजाके स्वागतमें शंख बजाया करते हैं। राजाका वह महल जो चन्दनका बना है—जिसकी छतें नीलमकी हैं, जिसके फर्शपर मोती जड़े हैं। वे समुद्री उद्यान जहाँ मूंगेके पेड़ झूमते हैं, जिनकी डालोंपर मछलियाँ चाँदीकी चिड़ियोंकी तरह विश्राम करती हैं, गुलाबी जन्तु पीली बालूमें छिपे रहते हैं और शरमीली सीपियाँ चट्टानोंकी दरारोंमें छिपी रहती हैं। वे ह्वेल मछलियाँ जो उत्तरी ध्रुवसे आती हैं और जिनके पखोंपर हिमकण लगे होते हैं। समुद्री जादूगरनियाँ जो इतनी आश्चर्यजनक बातें बताती हैं कि समुद्री सौदागर अपने कान ढँक लेते हैं अन्यथा वे आकर्षित होकर जलमें कूद पड़ें और मर जाँय। वे समुद्री राजकुमारियाँ जो मूँगेकी नावोंमें तैरती हैं और रेशमकी पतवार चलाती हैं। वे समुद्री बच्चे जो छोटी-छोटी मछलियोंकी पीठपर सवार होकर लहरोंका पीछा करते हैं—वे जल-परियाँ जो स्वच्छ फेनकी शय्यापर सो जाती हैं...... 'वह इन सबके विषयमें गीत गाती थी!

और जब वह गाती थी तो बड़ी-बड़ी मछलियाँ जलसे निकलकर उनके गीत सुनती थीं। नाविक अपना जाल फेंकता था, और जब उसकी नाव खूब भर जाती थी तब जलपरी उसकी ओर देखकर मुसकराती हुई लहरोंमें विलीन हो जाती थी!

किन्तु कभी भी वह जलपरी नाविकके इतने समीप नहीं आती थी कि

वह उसे स्पर्श कर सके। कभी-कभी नाविक उसे बुलाता था और विनती भी करता था, किन्तु वह कभी नही मानती थी। अगर वह उसे पकडने चलता था तो वह फौरन जलमें डूब जाती थी और फिर दिन भर नही आती थी। हर रोज नाविकके लिए जलपरीकी आवाज़ मधुरतर होती जाती थी। इतनी मीठी थी उसकी आवाज़ कि वह भूल जाता था अपना जाल, अपनी डोरियाँ और अपनी नाव। पारेके पखो वाली, सुनहली आँखो वाली मछलियाँ झुण्डकी झुण्ड उसके चारो ओर लहराती थी मगर वह उस ओर ध्यान ही नही देता था। उसकी वंसी पडी रहती थी और हरे पौदोंकी डण्ठलोसे वुनी टोकरी खाली पड़ी रहती थी। ओठ खुले हुए, आँखोपर आश्चर्यका परदा—वह चुपचाप अपनी नावमे वैठकर सुनता जाता था—सुनता जाता था, यहाँ तक कि समुद्री कोहरा उसपर छा जाता था और ऊपर तैरता हुआ चाँद उसके गेहुँएँ अंगोपर चाँदी विखेर देता था!

और एक साँझको उसने उसे पुकारा और कहा—"नन्ही जलपरी! प्यारी जलपरी! मै तुझे प्यार करता हूँ!"

लेकिन जलपरीने सिर हिलाया। "तुममें मनुष्यका अन्त करण है" उसने उत्तर दिया—"मै तुम्हें तभी प्यार कर सकती हूँ जव तुम अपने अन्तःकरणको अलग कर दो।"

और नाविकने सोचा—"ठीक तो है! भला अन्त करणसे मुझे क्या लाभ? मै उसे समझ नही पाता! मै उसको छू नही सकता, मै उसे देख नही सकता! मै उसे अभी अलग करता हूँ क्योकि तभी मुझे अनन्त सुख मिल सकेगा!" और उसके ओठोंसे एक खुशीकी चीख निकली, और नावमे खड़े होकर उसने जलपरीकी ओर हाथ फैला दिये—"मै अपना अन्तःकरण हटा दूँगा और तव तुम मेरी हो जाओगी और समुद्र देशमें हम तुम दोनों साथ रहेंगे। तुम जितनी चीजोंके वारेमें गीत गाती हो वे सभी दिखाओगी न?"

और नन्ही जलपरी मारे खुशीके हँस पडी और अपना चेहरा अपनी छोटी-छोटी हथेलियोंमें छिपा लिया।

"किन्तु सुनो, मै अपना अन्तःकरण अपनेसे अलग कैसे करूँगा" वह बोला—"बोलो ! तुम इसकी तरकीब जानती हो ?"

"नही ! मुझे नही मालूम !" जलपरीने उत्तर दिया—"हम समुद्र-तलके निवासियोंमें अन्त.करण नही होता—" और उसके बाद प्यासी निगाहोंसे नाविककी ओर देखती हुई वह लहरोंमें डूब गई।

दूसरे दिन प्रात.काल जब सूरज सामनेवाली पहाड़ीपर केवल हाथ भर ऊँचा उठ पाया था, तब वह तरुण नाविक पादरीके घर गया और तीन बार दरवाजा खटखटाया।

नौकरने खिड़कीमे झाँका और नाविकको देखकर जजीर खोल दी और कहा—"अन्दर आ जाओ !"

नाविक भीतर गया और सुगन्धित फर्शपर पादरीके सामने झुक गया। पादरी बाइबिलका पाठ कर रहा था। नाविकने साहसकर कहा—"पिता, मै एक जलपरीको प्यार करता हूँ किन्तु मेरा अन्त करण मेरे मार्गमें बाधक है। मुझे बताइए कि मै अपने अन्त'करणको कैसे अलग करूँ—सच तो यह है कि मुझे आत्माकी कोई आवश्यकता नही है। मेरे लिए उसका क्या मूल्य ? मै उसे देख नही सकता, मैं उसे छू नही सकता, मैं उसे भली-भाँति जानता भी नही !"

और पादरीने मारे दु.खके अपनी छाती पीट ली और कहा—"हाय ! हाय ! तू तो बिलकुल ही पागल हो गया है—या तूने कोई जहरीली जडी खा ली है—क्योंकि अन्त करण तो मनुष्यकी सबसे मूल्यवान् सम्पत्ति है और हमे ईश्वरने अन्त करण इसलिए प्रदान किया है कि हम उसका सदु-पयोग करें। उससे अधिक मूल्यवान् और कुछ भी नही—किसी भी भौतिक

वस्तुकी तुलना उससे नही हो सकती। यह संसारकी समस्त स्वर्णराशिसे भी मूल्यवान् है और राजाओके रत्नोसे अधिक दुर्लभ है। इसलिए वत्स, तुम इसे भूल जाओ—यह तो इतना महान् पाप है कि उसे क्षमा ही नही किया जा सकता! जलपरियाँ तो धर्महीन और पतित है और उनका संसर्ग तुम्हे भी पतित बना देगा। वे तो आत्मविहीन है और पाप और पुण्यका भेद भी नही समझती! उनके लिए प्रभु जीसस क्रासपर नही चढे थे।"

ये कटु वचन सुनकर तरुण नाविककी आँखोमे आँसू छलछला आये। वह उठ खड़ा हुआ और वोला—"पूज्य पिता, जगलोंमें पशु स्वच्छन्द और सुखी है—समुद्रकी चट्टानोंपर गुलावी सोनेकी वीणाएँ लेकर जलपरियाँ वैठी रहती है। मै उन्हीकी तरह वनना चाहता हूँ—मै आपसे विनती करता हूँ—उनका जीवन फूलोके जीवनकी तरह हलका है। जहाँ तक मेरे अन्तः-करणका प्रश्न है उससे मुझे क्या लाभ? वह मेरे प्रेमको चूर-चूर कर रहा है।"

"शारीरिक प्रेम पाप है," पादरीने भवे सिकोडकर कहा—"ये प्राकृ-तिक वस्तुएँ जड़ है, माया है। जंगलके पशुओं और समुद्रकी गायिकाओके जीवनको धिक्कार है। मैने नीरव रात्रिमे उनका स्वर सुना है और उन्होने मुझे आकर्पित करनेका प्रयत्न किया है। वे रात्रिको द्वार खटखटाती है और हँसती है। वे मेरे कानोमे अपने उन्मुक्त उल्लासकी कहानियाँ कह जाती है। वे मुझे भुलावा देने आती है और जव मै प्रार्थना करता हूँ तो वे व्यग्य करती है। वे सव पतित और विधर्मी है—न उनके लिए स्वर्ग है, न नरक, और न वे भगवान्के नामका महत्त्व समझ सकती है!"

"पिता!" वह नाविक सिसककर वोला—"आप नही समझते कि आप क्या कह रहे है। मेरे जालमे एक वार एक जलपरियोकी राजकुमारी फँस गई थी–वह भोरके तारेसे अधिक आकर्पक थी और चाँदसे अधिक गोरी थी। उसके शरीरके लिए मै अपनी आतमा दे सकता हूँ और उसके प्यारके

लिए तो मैं स्वर्ग तक न्योछावर कर दूँगा। मुझे कोई तरकीब बतलाइए और मुझे शान्त कीजिए!"

"निकल जाओ!" पादरीने नाराज होकर कहा—"तेरी प्रेमिका पतित है और तू भी पतित हो गया है!" और पादरीने उसे कोई आशीर्वाद न दिया और द्वारसे निकाल दिया।

और तरुण नाविक बाजारमें गया। दुःख और चिन्तासे सिर झुकाकर धीमे-धीमे चलने लगा।

और जब सौदागरोंने उसे आते हुए देखा तो आपसमें सलाह करने लगे। उनमेंसे एक उसके समीप आया। उसका नाम लेकर पुकारा और कहा—"तुम क्या बेचने आये हो।"

"मै अपना अन्त करण बेचने आया हूँ"—उसने उत्तर दिया—"क्या तुम इसे खरीदोगे—मैं उससे ऊब चुका हूँ! मुझे उससे क्या लाभ? मै उसे देख नही सकता, मै उसे छू नही सकता, मैं उसे जानता भी नहीं।"

किन्तु सौदागर उसकी हँसी उड़ाने लगे और कहा—"मनुष्यका अन्त-करण हमारे किस कामका। चाँदीके चन्द टुकड़ोंके मोलका भी तो नही! यदि तुम गुलामीके लिए अपना शरीर बेचना चाहो तो हम तुम्हें गुलाबी वस्त्र पहनायें, अगूँठी पहनायें और महारानीका अगरक्षक बना दें। किन्तु अन्त करणके विषयमें बात करना व्यर्थ है क्योंकि हमारे लिए वह मूल्यहीन है और हमारे किसी काम नही आ सकता!"

और तरुण नाविकने अपने मनमे सोचा "कैसे ताज्जुबकी बात है! पादरी कहता है कि अन्त करण ससारकी समस्त स्वर्णराशिसे अधिक मूल्यवान् है और सौदागर कह रहे है कि वह चाँदीके चन्द टुकड़ोंके लायक भी नही!" और वह बाजारसे निकल गया, और समुद्र तटपर खड़ा होकर सोचने लगा कि क्या करे?

उसे याद आया कि उसका एक साथी जो वनमे कपूर वटोरने जाता था, उसने वताया था कि खाडीके किनारे गुफामे एक नौजवान जादूगरनी रहती है जो अपने जादू टोनेमें वहुत चतुर है। और वह उसी ओर दौड़ पडा—और वह अपनी आत्मासे छुटकारा पानेके लिए इतना व्यग्र था कि जव वह वालूपर दौड रहा था तो उसके पीछे-पीछे धूलका एक तूफान उड़ता चल रहा था। वायी आँखके फडकनेसे जादूगरनीको उसके आगमनका पता लग गया और उसने अपने भूरे वाल फैला दिये। भूरी अलकें छिटका कर वह गुफाके द्वारपर खडी हो गई। उसके हाथमें जंगली फूलोंका एक गुच्छा था!

वह हाँफता हुआ गुफाके सामने आया और झुक गया।

"तुम्हे क्या चाहिए? किस चीजकी जरूरत है?" वह वोली—"क्या तुम्हे जालके लिए मछलियाँ चाहिए? मेरे पास एक वाँसुरी है जिसे वजाते ही वहुत-सी मछलियाँ तटपर आ जाती है। किन्तु उसके लिए कीमत दोगे? तुम्हे क्या चाहिए? जहाजोंको तोडकर खजानेको किनारेपर वहा लानेवाला तूफान? मेरे पास आकाशसे भी ज्यादा वडा तूफान है—क्योंकि मेरा मालिक आकाशसे भी अधिक वलशाली है। एक कुश और एक चुल्लू पानीसे मै वडे-वड़े जहाजोंको डुवो सकती हूँ। किन्तु उसकी कीमत लगती है। तुम्हें क्या चाहिए? घाटीमें उगनेवाले एक फूलका पता मेरे सिवा और कोई नही जानता। उसकी पखुरियाँ फीरोजी रंगकी है, उसके वीचमे एक तारा है और उसका रस दूधकी तरह स्वच्छ है। यदि उस फूलको तुम रानीके होठोंसे छुला दो तो वह संसार भरमे तुम्हारा अनुसरण करती फिरेगी। राजाके पलगसे उठकर वह तुम्हारे पीछे-पीछे घूमेगी—मगर उस फूलकी भी कीमत लगेगी। तुम्हे क्या चाहिए? मैं एक चक्रसे चाँदको आकाशसे गिरा सकती हूँ और उसकी एक-एक किरणमें मौतका जहर भर सकती हूँ! मुझे अपनी

इच्छा बताओ—मैं अभी पूरी कर दूँगी लेकिन तुम्हें उसकी कीमत देनी होगी। बोलो तैयार हो?"

"हाँ, मेरी इच्छा बहुत ही छोटी-सी है फिर भी पादरी मुझपर बहुत नाराज़ हुआ और मुझे निकाल दिया। इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ—मैं तुम्हें मनोवाछित मूल्य दूँगा।"

"तो तुम क्या चाहते हो?" जादूगरनीने उसके और भी समीप आकर पूछा।

"मैं अपने अन्त करणसे छुटकारा पाना चाहता हूँ!" नाविकने उत्तर दिया।

जादूगरनी पीली पड़ गई, काँप उठी और अपना चेहरा अपने नीले घूँघटमें छिपाकर बोली—"नाविक! नाविक! यह तो बडी भयानक बात है!"

उसने अपने घुँघराले भूरे बाल ऊपर झटककर और हँस कर कहा—"मुझे अपने अन्त करणसे क्या लाभ? न मैं उसे छू सकता हूँ, न देख सकता हूँ, न जान सकता हूँ!"

"अच्छा अगर मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?" उस जादूगरनीने अपनी सुन्दर आँखोंसे उसकी ओर देखकर पूछा।

"पाँच मुहरें", उसने कहा—"और अपनी जाल और अपनी कुटिया, जो कुछ मेरे पास है मैं सब कुछ तुम्हें दूँगा—मैं अपनी नाव भी तुम्हें दे दूँगा!"

जादूगरनीने हँसते हुए उसे देखा और वनफूलोंके गुच्छेसे उसे मारते हुए बोली—"मैं पतझडकी पत्तियोंसे सोना बना सकती हूँ और चाँदकी किरणें जमाकर चाँदी बना सकती हूँ क्योंकि मेरा स्वामी संसारके सब राजाओंसे महान् है!"

"तो तुम्हे क्या चाहिए" नाविकने पूछा—"चाँदी और सोना दोनो तुम वना सकती हो, तो मै तुम्हे कौन-सी क़ीमत दूँ ?"

जादूगरनीने उसके रेशमी भूरे वालोको अपनी उँगलियोमे फँसाते हुए कहा—"तुम्हे मेरे साथ नाचना होगा ?" और मुसकरा दी।

"वस !" नाविकने अचरजसे पूछा।

"वस !" उसने कहा और फिर हँस पड़ी !

"तव सूर्यास्तके समय हम किसी कुजमे नाचेंगे" उसने कहा—"और नाचके वाद तुम मुझे अन्त.करणसे छुटकारा पानेकी तरकीव वताओगी न ?"

"हाँ, जव चन्द्रमा पूरा होगा !" उसने कहा—फिर उसने चारों ओर देखा और कान लगाकर सुना। घोसलेमेसे एक नीली चिड़िया निकली और वालूपर उड़ने लगी और भूरी घासमें छिपे हुए तीन धारीदार साँप एक दूसरेको पुकारने लगे—उस जादूगरनीने अपने हाथ फैलाये, उसे नजदीक खीचकर अपने सूखे होठ उसके कानोके समीप रख दिये "आज तुम पहाड़ी पर आना—आज पर्व है और वह वहीं होगा !"

नाविक चौंक गया और उसकी ओर नजर गड़ाकर देखने लगा—"यह कौन है जिसके लिए तुम कह रही हो ?"

वह हँस पड़ी और वोली—"इससे तुम्हे क्या ? आज रातको आना और कनैरके पेड़के नीचे खड़े रहना और मेरे आनेकी प्रतीक्षा करना। अगर कोई काला कुत्ता तुम्हारी तरफ दौड़े तो कनैरकी डालसे उसे मारकर भगा देना ! अगर कोई पक्षी तुमसे वोले तो तुम चुप रहना—जव चाँद निकल आयेगा तो मैं तुम्हारे पास आजाऊँगी और हम तुम घासपर नाचेंगे !"

"लेकिन शपथ खाकर कहो कि तुम मुझे अन्त करणसे छुटकारा पानेकी तरकीव वताओगी ?"

वह धूपमें खडी होकर और भूरे वाल लहराते हुए वोली—"मै काले फूलोंकी शपथ खाती हूँ !"

"तुम वहुत भली जादूगरनी हो" नाविक वोला—और झुककर अभिवादन किया और भागते हुए नगरकी ओर चला गया।

और जादूगरनी उसकी ओर देखती रही और जब वह निगाहसे ओझल हो गया तो वह गुफामें गई और आवनूसके डव्वेसे एक शीशा निकालकर फूलोंपर रख दिया और सामने अंगारे धधकाकर उसपर धूप जलाने लगी। क्षण भर वाद उसने गुस्सेमें मुट्ठी वाँधकर कहा—"वह मेरा है ! वह मेरा ही रहेगा—क्या मैं जलपरीसे कम सुन्दर हूँ ?"

और साँझको जब चन्द्रमा निकल आया—नाविक पहाडीपर चढ गया और कनैरके पेड़के नीचे प्रतीक्षा करने लगा। चिकनी धातुकी तरह समुद्र शान्त हो गया था और मछुओंकी नावोंकी छाया उनमें धीरे-धीरे तैर रही थी। एक वडे पक्षीने जलती हुई आँखोंसे उसकी ओर देखा और पुकारा किन्तु वह चुप रहा। एक काला कुत्ता उसकी ओर दौडा, किन्तु उसने कनैरकी टहनीसे भगा दिया।

आधी रातको हवामें तिमिरके पंखोंपर उडती हुई जादूगरनियाँ आई और जब वे नीचे उतरी तो वोली—"अरे ! यहाँ तो कोई अपरिचित है।" और वे आपसमे मौन सकेत करने लगी। सबने अन्तमें वह तरुणी जादूगरनी अपनी अलकें लहराती हुई आई। वह सुनहले तारोंकी साड़ी पहने थी जिसमें मोरकी आँखें गुँथी थी। उसके चेहरेपर धानी रेशमकी जाली पड़ी थी।

"वह कहाँ है ? कहाँ है ?" सभी जादूगरनियाँ पूछने लगी। किन्तु वह केवल मुसकराई और कनैरकी ओर दौडी। नाविकका हाथ पकड़कर वाहर आई और नाचने लगी।

चारो ओर वे घूमने लगी और वह छोटी जादूगरनी इतनी ऊँची उछली कि वे उसकी लाल एड़ी तक देख सकती थी। सभी नाचके बीचमें घोडेके टापोंकी आवाज़ सुनाई दी, यद्यपि कोई भी घोडा नही दिखाई पडा। नाविक डर गया।

"और तेजीसे"—जादूगरनीने कहा—और अपनी बाहोमे नाविकको कस लिया और नाविकके चेहरेपर उसकी सुरभित भाप लगने लगी—"और तेजीसे—और तेजीसे!" उसने कहा और मालूम होने लगा कि धरती नाचने लगी। नाविकका सिर चकरा गया और उसे आभास हुआ कि कोई भयानक व्यक्ति उसे देख रहा है। उसने देखा कि चट्टानकी छायामे एक व्यक्ति खडा उसकी ओर देख रहा था।

नाविकने उसकी ओर मन्त्र-मुग्ध दृष्टिसे देखा। अन्तमे उसकी निगाहे मिल गई। जादूगरनी हँस पडी। उसके कमरमे हाथ डालकर पागलोकी तरह नाचने लगी!

एकाएक जगलसे कोई आवाज आई और जादूगरनियाँ एकएक करके उसके पास गई और झुककर उसका हाथ चूमा। हर चुम्बनपर वह मुसकराता था जैसे चिडियाके पखोके स्पर्शसे लहरें खिल जाती है।

"आओ पूजा करें!" उस छोटी जादूगरनीने नाविकका हाथ पकड़कर कहा और उस व्यक्तिकी ओर ले चली। नाविकने अपने मनपर न जाने कैसे अशुभ प्रभावका अनुभव किया। जब वह बिलकुल समीप आ गया तो न जाने क्यो उसने ईश्वरका ध्यान किया—और वह व्यक्ति दर्दसे चीख उठा। जादूगरनियाँ चीखकर उड़ गई। वह व्यक्ति अदृश्य हो गया। जब वह छोटी जादूगरनी उडने लगी तो नाविकने उसे पकड लिया।

"मुझे जाने दो! क्योंकि तुमने उसका ध्यान किया है जिसका ध्यान हम नही सह सकती!"

"नही तुम अपना वादा पूरा करो तब मैं तुम्हे जाने दूँगा!"

"कौन-सा वादा ?" छूटनेके लिए छटपटाते हुए और अपने नीले होठोको दवाते हुए जादूगरनीने पूछा।

"कौन-सा वादा ? क्या तुम इतनी जल्दी भूल गई" नाविकने कहा।

उसकी नीलम-सी आँखें भर आई और उसने नाविकसे कहा—"और कुछ भी कहो मैं करूँगी किन्तु उसके लिए मत कहो।"

नाविक हँसा और उसे और भी मजबूतीसे थाम लिया।

जब उसने देखा कि वह किसी तरह नही छूट सकती तो उसने चुपकेसे उससे कहा—"मैं उतनी ही सुन्दर हूँ जितनी वह जलकुमारी।" और उसने अपना मुख उसके होठोपर रख दिया।

किन्तु नाविकने उसे पीछे ढकेल दिया और कहा—"अगर तुम अपना वादा नही पूरा करोगी तो मैं तुम्हे जीवित नही जाने दूँगा।"

वह चम्पेकी कलीकी तरह पीली पड गई—"जैसा तुम चाहो" वह वोली—"तुम अपने अन्त करणको अलग करोगे, मेरेको नही। लो इसे और जो चाहो सो करो।" और उसने अपनी कमरसे हरे सर्पके चमडेकी वेंट वाला चाकू निकालकर उसे दे दिया।

इससे क्या होगा ?" उसने आश्चर्यसे पूछा।

वह क्षण भर चुप रही फिर उसके मुखपर भयकी रेखाएँ खिच गई। फिर उसने अपने माथेपर झूलती हुई लटें पीछे उलटकर विचित्र रूपसे हँसते हुए कहा—"लोग जिसे शरीरकी छाया कहते है वह वास्तवमे अन्त-करणका शरीर होता है। समुद्रतटपर चन्द्रमाकी ओर पीठकर खडे हो जाना और झुककर चाकूसे अपनी छाया काट देना—और उसके वाद उसे चले जानेकी आज्ञा देना और वह चली जायगी।"

नाविक विचित्र आशंकासे काँप गया और वोला—"क्या यह सच है ?"

"विलकुल सच। किन्तु अच्छा होता मैं इसे न वताती।" वह चिल्लाई और रोते हुए उसके घुटनोमें लिपट गई।

उसने उसे अलग हटा दिया और घासपर छोड दिया, और पहाडीके सिरेपर जाकर, कमरमें चाकू खोसकर वह नीचे उतरने लगा। और उसके अन्तःकरणने, जो उसके अन्दर था, उसे पुकारा और कहा—

"देखो ! मैने इतने दिनो तक तुम्हारी सेवा की है। मुझे अपनेसे क्यों छुडाते हो—मैने तुम्हारा क्या विगाड़ा है ?"

नाविक हँसा—"तुमने मेरा कुछ नही विगाडा किन्तु मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नही। दुनिया वहुत विशाल है—इधर स्वर्ग है—उधर नरक है और उन दोनोके बीचमे फैला हुआ धूमिल तिमिर लोक है ! तुम जहाँ चाहो जाओ, किन्तु मुझे छोड़ दो ! वह देखो समुद्रकी लहरोंमें मेरा प्यार मुझे पुकार रहा है !"

उसे अन्त.करणने वहुत समझाया किन्तु वह न माना और चट्टानसे चट्टानपर पहाड़ी वकरियोकी तरह कूदता रहा और अन्तमें वह मैदानपर समुद्रकी पीली वालूपर पहुँच गया !

ताँवेके गठे हुए अंगो वाली ग्रीक प्रतिमाकी तरह, वह उस वालूपर चन्द्रमाकी ओर पीठ करके खड़ा हो गया और फेनमेंसे वे गोरी भुजाएँ निकली जो आलिंगनके लिए व्यग्र थी और समुद्री छायाएँ हिल-डुलकर उसका स्वागत करने लगी। सामने वालूपर उसकी छाया सो रही थी और पीछे मधुमासी हवामे चाँद तैर रहा था।

और उसके अन्त करणने उससे कहा—"यदि तुम मुझे अपनेसे अलग करना ही चाहते हो तो विना हृदयके मुझे मत भेजो। संसार वड़ा निष्ठुर है—कमसे कम अपना हृदय मुझे दे दो !

उसने अपना सिर हिलाया और हँसकर कहा—"मै अपनी रानीको प्यार किससे करूँगा यदि मै तुम्हें अपना हृदय दे दूँ तो ?"

"कुछ तो दया करो !" उसके अन्त करणने कहा—"दुनिया वहुत ही निष्ठुर है !"

"मेरा हृदय मेरी रानीका है ! तुम अव जाओ !"

"तो क्या मैं प्यार न करूँ !" अन्त करणने पूछा ।

"तुम चले जाओ" उसने अपने अन्त.करणके शरीरसे कहा—"मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नही !" और उसने हरे साँपके चमडेकी बेंट वाले चाकूसे अपनी छायाको पैरोंके समीपसे काट दिया । वह छाया उठकर उसके सामने खडी हो गई !

नाविक पीछे हट गया, उसके मुखपर भय छा गया—उसने चाकू कमरमें खोस लिया और कहा—"चले जाओ ! मैं तुम्हें नही देखना चाहता ।"

"नही, किन्तु हम फिर मिलेंगे" उसके स्वरोंमें बाँसुरी बज रही थी और बोलते समय उसके होठ भी नहीं हिलते थे ।

"अब हम कैसे मिलेंगे ?" नाविकने भयसे कहा—"क्या तुम समुद्र तलमें भी मेरा पीछा करोगे ?"

"वर्षमें एक बार मैं इस स्थानपर आकर तुम्हें बुलाऊँगा । हो सकता है कि तुम्हें कभी मेरी आवश्यकता पड जाय !"

"मुझे तुम्हारी क्या आवश्यकता हो सकती है ?" नाविकने कहा, "किन्तु फिर भी जैसा तुम चाहो !"

और उसके बाद वह पानीमें कूद पडा—चौनोंने शख बजाये और जलपरीने अपने गोरे हाथ उसकी गर्दनमें डालकर उसकी पलकें चूम ली ।

और अन्त करण उस एकान्त तटपर खडा उन्हे देखता रहा । जब वे लहरोंमें विलीन हो गये तब वह भी दलदलोपर रोता हुआ चला गया ।

जब एक वर्ष बीत गया तो अन्त करण समुद्रतटपर लौटकर आया और उस नाविकको पुकारा । नाविक गहरे समुद्र तलसे निकल आया और बोला—"तुमने मुझे क्यो बुलाया है ?"

आत्माने उत्तर दिया—और समीप आओ—"मै तुमसे कुछ वताना चाहता हूँ। मैने ससारमे विचित्र वस्तुएँ देखी है।"

नाविक और समीप आया और छिछले पानीमे लेटकर अपनी हथेलियो-पर सिर रखकर सुनने लगा!

और आत्माने उससे कहा—"तुमसे अलग होनेके वाद मैने पूरवकी ओर मुँह किया और यात्रा करने लगा—क्योकि पूर्व ही ज्ञानका भण्डार है। मै छ दिन तक चलता रहा। सातवे दिन मै तातार देशकी एक पहाडीपर पहुँचा। धूपसे वचनेके लिए मै एक अजीरके पेडके नीचे वैठ गया। भूमि सूखी थी और गर्मीसे जली हुई थी। लोग भूमिपर चल-फिर रहे थे जैसे चमकदार ताँवेकी चादरपर रेंगती हुई मक्खियाँ।

जव दोपहर हुई तो भूमिसे लाल धूलका एक वादल उडा। जव तातारो-ने उसे देखा तो उन्होने अपनी चित्रित भवें सिकोड़ी और उसी ओर घोडो पर सवार होकर चल दिये। स्त्रियाँ चीखती हुई अपने खेमोकी ओर भागी और नमदेके परदोमे छिप गई।

गोधूलिके समय तातार लोग लौटे किन्तु उनमेंसे पॉच वहाँ नही थे। जो लोग वापस आये थे उनमेंसे भी वहुतसे घायल थे! एक गुफासे तीन सियार निकले। सिर ऊपर उठाकर उन्होने हवा सूँघी और उल्टी दिशामे चल दिये।

जव चाँद निकल आया तो मैने दूर मैदानमे एक अलाव जलते हुए देखा और मै उस ओर चल दिया। सौदारोका एक दल उसके चारो ओर कालीनोपर वैठा हुआ था। उनके ऊँट उनके पीछे खडे हुए थे। पीछे उनके हब्शी गुलाम वालूपर चमडेके खेमे गाड रहे थे और उसके चारो ओर नील काँटेकी एक चहारदीवारी सजा रहे थे।

जव मै उनके पास पहुँचा तो सौदागरोके सरदारने अपनी तलवार निकाल ली और मुझसे पूछा—"तुम क्या चाहते हो?"

मैंने उत्तर दिया कि मैं अपने देशका राजा था और तातार मुझे गुलाम बनाना चाहते थे किन्तु मैं उनके पाससे भाग आया। सरदार हँसा और एक लम्बे बाँसपर लटके हुए पाँच सिर दिखाये।

फिर उसने मुझसे पूछा कि खुदाका पैगम्बर कौन है, तो मैंने कहा 'मुहम्मद !' जब उसने यह सुना तो उसने झुककर सलाम किया और बगलमें बिठा लिया। एक हब्शीने एक तश्तरीमें भेडका दूध और थोडा-सा भुना हुआ मास मेरे सम्मुख रक्खा।

सुबह हम लोगोने अपनी यात्रा प्रारम्भ कर दी। मैं सरदारके बगलमें एक भूरे ऊँटपर चल रहा था और हमलोगोंके आगे एक हरकारा भाला लेकर दौड रहा था। कारवाँमें चालीस ऊँट थे और अस्सी खच्चर !

तातारोंके देशसे हम इस्लाम-विरोधी देशोंमें गये। सफेद चट्टानोंपर पहाडी लोग सोना बटोर रहे थे और धारीदार अजगर अपनी माँदोंमें सो रहे थे। जब हमलोग पहाडोंपर चल रहे थे तो हर मनुष्यने अपनी साँस रोक ली और आँखोंपर जाली डाल ली ताकि बर्फमें कहीं हमलोग घुट न जायँ ! जब हमलोग घाटियोंमेंसे चल रहे थे तो बौने लोगोंने पेडोंमें छिप-कर हमपर तीर चलाये। रातके सन्नाटेमें जगली लोग अपने युद्धके ढोल पीटा करते थे। जब हमलोग बन्दरोंके देशमें पहुँचे तो हम लोगोंने उनके सामने फल रख दिये और वे कुछ भी न बोले। जब साँपोंके देशमें गये तो हमलोगोंने ताँबेके प्यालोंमें दूध रख दिया और साँपोंने हमें चुपचाप चले जाने दिया ! नदियोंमें दरियाई घोडे तैर रहे थे !

चार महीनोंमें हमलोग इलेलके नगरमें पहुँचे। रातको हम नगरकोटके बाहरके कुञ्जके पास पहुँचे। हवा सूखी थी क्योंकि चन्द्र वृश्चिकमें सचरण कर रहा था। हमलोगोंने पेडसे पके हुए अनार तोडे और उनका रस पिया। हमलोगोंने कालीन बिछाये और सुबहके लिए प्रतीक्षा करने लगे।

सुबह हम उठे और नगरके दरवाज़ेपर आवाज दी। फाटक ताँबेका था और उसपर समुद्री अजगर और पखदार अजगरोंके चित्र नक्श थे।

पहरेदारोंने झाँका और हमसे आनेका लक्ष्य पूछा। कारवाँके दुभाषियेने जवाब दिया कि हमलोग सीरियासे बहुत-सा माल लेकर आ रहे है। उन्होने नजराना स्वीकार कर लिया।

दोपहरको फाटक खुला। लोगोकी भीड हमलोगोके चारो ओर घिर आई। हमलोग वाज़ारमे खडे हो गये और हब्शी गुलामोने छीटदार कपडो-की गाँठें खोली। और उसके बाद सौदागरोंने मिस्रकी मोमी छीट निकाली, ईथियोपियाके रगीन कपड़े निकाले, टायर देशके गुलावी जाल निकाले और सिडनके पर्दे निकाले, आवनूसके प्याले, शीशेके वर्तन और मिट्टीके विचित्र वर्तन निकाले! मकानकी छतोसे स्त्रियाँ हमे देख रही थी।

पहले दिन धर्माचार्योंने आकर हमसे क्रय-विक्रय किया। दूसरे दिन सरदार आये और तीसरे दिन मज़दूर और गुलाम आये।

मै शहरमे घूमने निकला और घूमते-घूमते नगर-देवताके उपवनमे पहुँचा। पीले वस्त्र पहने हुए पुजारी हरे पेडोमे घूम रहे थे, गुलावी मन्दिर काले सगमरमरके चवूतरेपर खडा था। उसके फाटक चन्दन के थे और उसपर वैलो और मोरोके स्वर्ण चित्र नक्श थे। उसकी छतें हरे पत्थरकी थी और उनमें छोटी-छोटी घण्टियाँ लटकी हुई थी। जव उसमे पक्षी उडते थे तो उनके पर घण्टियोसे टकराते थे और वे घण्टियाँ झनझना उठती थी।

मन्दिरके सामने स्वच्छ जलका एक तालाव था जिसके किनारे पीले पत्तो वाले पेड उगे थे। मै वही लेट गया। एक पुजारी आकर मेरे पीछे खडा हो गया। उसके पैरोमे चिडियोके पखोके चप्पल थे। उसके सिरपर काले नमदेकी टोपी थी जिसपर चाँदीके चाँद वने थे। उसकी पोशाकमे सात पुखराज गुँथे थे और उसके वालोकी लटोमे मेंहदीके गुच्छे थे।

थोडी देर वाद उसने पूछा—"क्या चाहते हो?"

मैंने कहा—"मै देवताके दर्शन करना चाहता हूँ!"

"देवता! देवता तो शृंगार कर रहे है!" उसने विचित्र निगाहोसे देखते हुए कहा।

"शृंगार, मैंने फूलोंके देशमें शृंगार करना सीखा है—मैं भी उनका शृंगार करूँगा।"

"किन्तु देवता तो सो रहे हैं।"

"उनकी शय्या कहाँ है—मैं उसकी देख-रेख करूँगा।"

"किन्तु देवता तो भोग लगा रहे हैं।" वह अधीर होकर चीख पड़ा।

"मैं भी प्रसाद ग्रहण करूँगा।" मैंने उत्तर दिया।

उसने आश्चर्यसे सिर हिलाया और बाँह पकडकर मंदिरमें ले गया।

पहले ही प्रकोष्ठमें नीलमके सिंहासनपर बड़े-बड़े पूर्वी मोतियोंसे जड़ी हुई एक प्रतिमा थी। वह काष्ठकी बनी थी और उसके माथेपर लाल सजे हुए थे। उसका अधोवस्त्र ताँबेका था और उसमें सात हीरे जड़े थे। उसके चरण एक बलिपशुके ताजे रक्तसे लुहलुहान थे।

और पुजारीने कहा—"यही ईश्वर है।"

"यह ईश्वर नहीं है, मुझे ईश्वर दिखलाओ अन्यथा ।"

पुजारी डर गया और मुझे दूसरे प्रकोष्ठमें ले गया। वहाँ एक स्वर्ण कमल था, जिसमें सात मानिक जड़े थे। उसपर हाथी-दाँतकी एक मूर्ति थी उसके माथेपर फिरोजी हीरे थे और एक हाथमें हीरोंकी छड़ी थी।

और पुजारीने कहा—"यही ईश्वर है।"

"यह ईश्वर नहीं है, मुझे ईश्वर दिखलाओ अन्यथा ।"

पुजारी डर गया और मुझे तीसरे प्रकोष्ठमें ले गया। और लो! उसमें कोई प्रतिमा नहीं थी—केवल चाँदीकी चौकीपर एक गोल दर्पण रक्खा था।

और मैंने पूछा—"ईश्वर कहाँ है?"

और उसने उत्तर दिया—"मुझे नहीं मालूम ईश्वर कहाँ है? यह दर्पण जो तुम देखते हो यह ज्ञानका दर्पण है। उसमें पृथ्वी और आकाशकी सारी चीजें दीख पड़ती हैं, केवल देखने वालेकी छाया इसमें नहीं पड़ती। जिसके पास यह दर्पण है उससे कुछ भी छिपा नहीं रहता। जिसके पास

यह नही है, उसके पास कुछ भी नही ! यही ईश्वर है और हम इमीकी पूजा करते है ।"

और मैने चलते समय वह दर्पण उठा लिया और पासकी एक गुफामे वह रक्खा है । तुम मुझे फिर ग्रहण कर लो नाविक और तुम संसारके सबसे अधिक ज्ञानवान् व्यक्ति बन जाओगे !"

किन्तु नाविक हँस पडा "प्रेम ज्ञानसे भी बड़ा है और वह नन्ही जलपरी मुझे प्यार करती है !"

"किन्तु ज्ञानसे श्रेष्ठ कुछ भी नही है !" अन्त.करणने कहा ।

"तुम्हारा भ्रम है, प्रेम ज्ञानसे भी अच्छा है !" नाविकने उत्तर दिया और जलमें अदृश्य हो गया । अन्तःकरण निराश होकर दलदलोपर रोता हुआ चला गया ।

दूसरा वर्ष बीतनेके बाद अन्त.करण फिर समुद्रतटपर आया और नाविकको बुलाया । वह समुद्रसे निकला और बोला, "तुमने मुझे क्यों बुलाया ?"

अन्तःकरणने कहा—"समीप आओ, मैने बहुत-सी विचित्र चीजे देखी है और मैं तुम्हे सब बताऊँगा !"

नाविक छिछले जलमें लेट गया और हथेलियोपर सिर रखकर ध्यानसे सुनने लगा ।

और अन्त.करणने कहा—"तुमसे अलग होनेके बाद मै दक्षिणकी ओर चल दिया । दक्षिण देश संसारका बहुत धनी देश है । छ दिन तक मैं पहाड़ी रास्तेपर चलता रहा । लाल पत्थरोवाली पगडण्डियोपर यात्री चल रहे थे । सातवें दिन मैंने नज़रें उठाई और लो ! शहर सामने था ।

उस नगरमें सात द्वार हैं और हरेक द्वारके सामने एक ताँबेकी अश्व-प्रतिमा है। जब बद्दू लोग समीपके पर्वतोंसे उतरकर नगरपर आक्रमण करने आते हैं तो ये प्रतिमाएँ घोषकर नगर-निवासियोंको विपत्तिकी सूचना देती हैं। उस नगरके परकोटेपर ताँबेकी चादरें मढ़ी हैं और पहरेके बुर्जोंपर पीतलकी छतें हैं। हरेक बुर्जपर एक प्रहरी धनुष बाण लेकर सन्नद्ध रहता है। सूर्योदयके समय वह समीपके एक घण्टेपर तीर मारता है और सूर्यास्तके समय सींगकी एक भेरी बजाता है।

जब मैं प्रवेश करने लगा तो पहरेदारोंने रोककर मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ और क्या चाहता हूँ। मैंने उत्तर दिया कि मैं एक दरवेश हूँ और मक्केकी ओर जा रहा हूँ, जहाँ कि एक रेशमी हरे पर्देमें एक कुरान रक्खा है जिसे स्वयम् पैगम्बरोंने अपने हाथसे चाँदीके अक्षरोंमें लिखा है। वे यह वर्णन सुनकर स्तम्भित हो गये और उन्होंने मुझसे भीतर आनेकी प्रार्थना की।

उस नगरके भीतर एक बाजार है। कितना अच्छा होता यदि उस समय तुम भी मेरे साथ होते। तंग गलियोंमें अबरकके प्रदीप इस प्रकार जलते हैं जैसे पंख फरफराती हुई तितलियाँ। छतोंपर जब हवा बहती है तो रंगीन बुलबुलोंकी तरह काँपने लगती हैं। रेशमी कालीनोंपर अपनी-अपनी आढतके सामने सौदागर बैठे रहते हैं। उनकी दाढ़ियाँ लम्बी और काली हैं, उनकी पगडियोंमें सुनहली जरीका काम रहता है और चाँदीके डोरे गुँथे रहते हैं। उनकी शीतल उँगलियोंमें बडे-बडे नगोंवाली अँगूठियाँ चमकती हैं। वे विचित्र चीजें बेचते हैं। हिन्दमहासागरसे लाये हुए भाँति-भाँतिके इत्र और सुगन्धित तेल, लाल गुलाबोंका गाढ़ा तेल, रहस्यमय अर्क और आश्चर्यजनक जडी बूटियाँ! जब कोई ग्राहक रुककर उनसे मोलभाव करता है तो वे जलते हुए अंगारोंपर सुगन्धित चूर्ण छोड देते हैं और हवामें सौरभकी लहरें उमड़ने लगती हैं। एक सीरिया निवासीके हाथमें एक पतली नरकुलकी डण्डी थी जिसमेंसे भूरा-भूरा धुआँ निकल रहा

था जिसमेसे वसन्तके कच्चे गुलावी वादामोकी-सी सुगन्ध आ रही थी। कुछ लोग चाँदीके हार वेंचते है जिनपर नीलमकी रेखाएँ जड़ी होती है, और कुछ लोग मोतियोके पायल वेचते है। सोनेमे जडे वघनखे, तेंदुएके पंजे, मानिकके कुण्डल और पन्नेकी अंगूठियाँ सभी वहाँ विकती है! चायघरोमेसे सितारकी आवाज आती है और जर्द चेहरेवाले अफीमची लोग मुसाफिरोकी ओर देखा करते है।

सचमुच मै चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ होते! काली मशके पीठपर लादकर शराव वेचनेवाले भीडमे घूमा करते है। वहाँ ज्यादातर शीराजकी शराव विकती है जो शहदकी तरह मीठी होती है। वे चाँदीके छोटे-छोटे पैमानोमे शराव ढालते है और उसपर गुलावकी पाँखुरियाँ विखेर देते है। वाज़ारमे मेवा-फरोश खडे रहते है। पकी हुई अजीरें, सरदे-पुखराजकी तरह पीले और कस्तूरीकी तरह सुगन्धित सन्तरे, गुलावी सेव, अंगूरोके गुच्छे, सुनहली नारगियाँ और हरियाले नीवू सभी वहाँ मिलते है। एक वार मैने वहाँसे एक हाथी निकलते हुए देखा। उसकी सूँडपर सिन्दूर और हल्दी लगी हुई थी और उसके कानोके पास एक रेशमकी डोर थी। एक दूकानपर वह रुक गया और सूँडसे नारगियाँ उठाने लगा। दूकानदार देखकर केवल हँस दिया। तुम नही जानते वे लोग कैसे अजीव है। जव वे वहुत प्रसन्न होते है तो वे वहेलियोके पास जाकर चिडियाँ ख़रीदते है और उन्हे उड़ा देते हे, ताकि उनकी खुशी और वढे। जव वे दुःखी होते है तो वदनसे काँटे चुभोते है ताकि उनका दु.ख न घटे।

एक शामको मैने देखा कि कुछ हव्शी लोग वाजारसे एक पालकी लिये जा रहे थे। वह धातुमण्डित वाँसकी थी और उसके डण्डोपर पीतलके मोर वने थे। उसके दरवाज़ेपर मलमलके झीने पर्दे थे जिनमें पोत और अवरकका काम था। उसमेसे एक म्लान सरकासी (एक जातिका नाम) झाँकी और मुझे देखकर हँस दी। मैने पीछा किया। यद्यपि हव्शियोने अपने क़दम तेज कर दिये किन्तु मै भी रुका नही। अन्तमे वे एक श्वेत चौकोर

भवनके सामने रुके। उस भवनमें कोई भी खिड़की नही थी। केवल मक़बरे-की तरह उसमें एक ही दरवाजा था। उन्होंने पालकी उतारी और एक ताँबेकी हथौडीसे तीन बार दरवाजा खटखटाया। हरे चमडेका लबादा ओढे हुए एक आर्मीनी बाहर झाँका और उन्हें देखकर उसने द्वार खोल दिया और कालीन बिछा दिया। सुरकासी लडकी बाहर आई। भीतर जाते समय वह फिर मुडी और मुझे देखकर मुसकराई। मैंने कभी किसीको इतना ज़र्द नही देखा था।

जब चाँद निकला तो मैं उसी जगह आया, लेकिन वहाँ न कोई मकान था और न कोई स्त्री। मैं समझ गया कि वह कौन स्त्री थी और मुझे देख कर क्यो हँसी थी।

ईदके दिन, नमाज़के वक्त तरुण सुल्तान अपने महलसे निकला और मस्जिदमें गया। उसके केशोमें गुलाबकी पाँखुडियाँ फँसी थी और उसके चेहरेपर स्वर्ण-धूल चमक रही थी। उसके तलवे और हथेलियाँ जाफरानसे रगी थी।

सूर्योदयके समय वह रुपहली पोशाकमें अपने महलसे वापस गया। और सूर्यास्तके समय उसी पोशाकका रङ्ग सुनहला हो गया। सभी लोग उसे दण्डवत् करने लगे। पर मैं खड़ा रहा। मैं एक खजूर बेचनेवालेकी दूकानके पास खडा देखता रहा। जब सुल्तानने मुझे देखा तो उसने अपनी रजित भौंहें सिकोडी और रुक गया। मैं भी अडिग खडा रहा और उसे कोर्निश नही की। लोग भयभीत हो गये और मुझे चुपचाप भाग जानेकी सलाह दी। मैंने उनकी ओर कुछ भी ध्यान नही दिया और मूर्तियाँ बेचने-वालोंके पास खडा हो गया। जब मैंने उन्हे पूरी घटना बताई तो वे भी डर गये और एक मूर्त्ति मुझे देकर फौरन चले जानेका अनुरोध किया।

रातको जब मैं अनारगलीके एक चाय-घरमें गद्देपर आराम कर रहा था। वे राजाके भृत्य आये और मुझे पकड़ ले गये। जब मैं भीतर गया तो वे दरवाज़े बन्द करते गये और सोनेकी ज़ंजीरें चढाते गये। भीतर एक

चौड़ा आँगन था। दीवारें बिल्लोरी पत्थरकी थीं जिसमें हरे और लाल नगोंकी नक्काशी थी। खम्भे हरे पत्थरके थे और चम्पई संगमरमरकी रविशे वनी हुई थी।

जव मै उधरसे गुजरा तो छज्जेसे झाँकती हुई दो औरतोंने अस्फुट स्वरोंमें मुझे कोसा। राजभृत्योंने शीघ्रतासे कदम वढ़ाये और अपने नेत्रोंकी नोकोसे चमकीले फाटकपर दस्तक दी। हाथी-दाँतका फाटक खुल गया और मैंने अपनेको साल खण्डोवाले एक सुन्दर उपवनमें पाया। धुँधले नीहारमें वंशीकी पतली आवाज़की तरह फव्वारा हवाको चीर रहा था। सरोके पेड़ वुझी मशालोंकी तरह उदास खडे थे और एक सरोके कुन्जमे वुलवुल चहक रही थी।

उपवनके दूसरे सिरेपर एक वारादरी थी। उसके नजदीक पहुँचनेपर हमें दो खोजे मिले। उन्होंने अपनी पीली पलकें उठाकर हमारी ओर विचित्र निगाह डाली। उनमेंसे एकने सैनिकोंके नायकको अलग ले जाकर धीमेसे कुछ कहा।

नायकने अपने सैनिकोंको लौटा दिया। खोजे मेरे पीछे-पीछे वगलके पेडोंसे शहतूत तोड़ते हुए चले।

नायकने वारादरीकी ओर जानेका संकेत किया। मै भारी पर्दा हटाकर निडर होकर भीतर चला गया।

वादशाह शेरकी खालके गद्दे्पर लेटा था और उसकी कलाईपर एक वाज़ वैठा पंख फड़फड़ा रहा था। उसके पीछे ताँवेका शिरस्त्राण पहने एक जल्लाद खड़ा था जिसके फटे हुए कानोमे भारी कुण्डल झूल रहे थे और जो कमर तक नग्न था। पासकी चौकीपर एक भारी खंजर रक्खा हुआ था।

वादशाह मुझे देखकर चिढ़ गया और वोला "तू कौन है? तेरा नाम क्या है? क्या तू नही जानता कि मै इस शहरका वादशाह हूँ?"

मगर मैंने उसे कोई भी जवाव नही दिया।

उसने अँगुलीसे खंजरकी ओर इशारा किया। जल्लाद उसे उठाकर मेरी ओर दौडा और पूरी शक्तिसे प्रहार किया। मगर खजर मुझे चीरता हुआ चला गया और मुझे कुछ भी नुकसान न पहुँचा। जल्लाद औंधे मुँह फर्शपर गिर गया। वह उठा तो उसकी घिग्घी वँध गई और वह पलँगके पीछे छिप गया।

वादशाह उछल पडा और पाससे एक भाला उठाकर मुझपर फेंका। मैंने उसे पकड लिया और दो टुकडे कर डाला। उसने तीर चलाया, पर मेरे हाथ उठाते ही वह बीच अधरमें रुक गया। फिर उसने घवडाकर सफेद चमडेके म्यानसे एक तलवार निकाली और जल्लादके गलेमे भोक दी ताकि वह राजाके अपमानको वाहर कही न प्रकट कर दे। वह वेचारा कटे साँपकी तरह तडपा और उसके मुँहसे लाल फेन वह निकला।

उसके मरते ही वादशाह मेरी ओर मुडा। माथेपर झलकते हुए स्वेद-विन्दुओको नारगी रेगमके रूमालसे पोछता हुआ वोला—"क्या तुम कोई पैगम्बर हो, या देवदूत हो जो मृत्युको जीत चुके हो। मैं तुमसे विनती करता हूँ आज ही शहरसे चले जाओ, वरना यहाँसे मेरा राज उखड जायगा।"

"मुझे अपना आधा खजाना दे दो", मैंने उत्तर दिया "और तव मै सन्तुष्ट होकर चला जाऊँगा।"

राजाने मेरा हाथ पकडा और मुझे साथ ले चला। पहरेदार यह देख कर आश्चर्यमें पड गये और खोजे तो मारे डरके मूच्छित हो गये।

उस महलमे एक कमरा है जिसमे गन्धकी पत्थरकी आठ दीवारे है और एक ताम्बेसे मढी छत है जिसमे फानूस लटकते है। वादशाहने एक दीवार छुई और वह खुल गई। हम एक सुरंगमे गये जिनमे कई दीप जल रहे थे। दोनो ओर चौकियोपर चाँदीके टुकडोसे भरे हुए शरावके पीपे रक्खे थे। सुरगके वीचो वीच जाकर राजाने कोई गुप्त मन्त्र कहा

और एक पथरीला दरवाजा किसी पेंचसे खुल गया। राजाने अपने हाथोसे मुँह ढँक लिया ताकि उसकी आँखें चकाचौंध न हो जाँय।

तुम्हे विश्वास न होगा वह कैसी विचित्र जगह थी। वहाँ कछुवेकी पीठकी मजूपाओमे मोती भरे पडे थे और वहुतसे चन्द्रकान्त मणि लालोके साथ ढेरके ढेर एक कोनेमें पडे थे। हाथीके चमडेकी पेटियोमे सोना भरा था और चमडेकी मशकोमें सोनेका चूरा भरा हुआ था। पुखराज और वैदूर्य मणि विल्लौरी प्यालोमे भरे हुए थे। हाथी-दाँतकी तश्तरीमे वडे-वड़े नीलम कतारमे सजे रक्खे थे। एक कोनेमे रेशमके थैलोमे मूँगे और पन्ने भरे हुए थे। वडे स्वर्णमण्डित हाथी-दाँत दीवारसे टिके हुए थे और शीशेके खम्भोपर पीली मणि-मालाएँ लटकी हुई थी।

राजाने अपने चेहरेपरसे अपने हाथ हटाकर कहा—"यह मेरा भण्डार हैं। इसमेसे आधा तुम्हारा है। मै तुम्हे ऊँट दूँगा और तुम इन सवको लाद दुनियाके किसी भी हिस्सेमें जा सकते हो। लेकिन तुम आज रातको ही यहाँसे चले जाओ। मै सूर्यवंशी हूँ और मै नही चाहता कल प्रभातका सूर्य तुम्हे यहाँ देखे!"

लेकिन मैने उससे कहा "यह सव सोना तेरा है, यह चाँदी भी तेरी है और यह सव मणियाँ और अमूल्य वस्तुएँ भी तेरी है। मुझे इन सवकी कोई इच्छा नही है। मै सिवा एक चीजके और कुछ भी तुमसे न माँगूँगा। तुम अपनी उँगलीवाली अँगूठी मुझे दे दो और मै कुछ भी नही चाहता।"

वादशाहने भवें सिकोडी "यह तो केवल सीसेकी अँगूठी है" वह चिल्लाया "इसका कुछ भी मोल नही। तुम आधा कोष ले लो और फौरन चले जाओ।"

"नही!" मैने उत्तर दिया "मै सिवा इस अँगूठीके और कुछ भी न लूँगा! मै जानता हूँ उसपर क्या लिखा है और उसका क्या उपयोग है!"

बादशाह कांप उठा और प्रार्थना करने लगा—"मेरा पूरा खजाना ले लो और शहरसे चले जाओ। मैं अपना हिस्सा भी तुम्हें देता हूं।"

और मैंने फिर एक विचित्र बात की, उसे सुनकर तुम क्या करोगे, लेकिन पासकी एक गुफामें वह धनकी अंगूठी छिपी है। यहांसे केवल दिन भरका रास्ता है। उसे पहनने वाला दुनियाके सभी सम्राटोंसे अधिक धनी होता है। आओ मेरे साथ, मैं वह अंगूठी तुम्हें दे दूंगा।

किन्तु वह नाविक हंस पड़ा—"प्यार दुनियाके सारे ऐश्वर्योंसे बड़ा है और नन्ही जलपरी मुझे प्यार करती है।"

"लेकिन धनसे बड़ी कोई चीज़ नहीं" अन्त करणने कहा।

"प्यार उससे भी बड़ा है।" नाविकने कहा और वह लहरोंमें विलीन हो गया। अन्त करण दलदलपर रोता हुआ लौट गया।

जब तीसरा वर्ष समाप्त हुआ तो अन्त करण समुद्र-तटपर आया। उसने नाविकको बुलाया। नाविक जलसे निकला और बोला—"तुमने मुझे क्यों बुलाया?"

"मेरे पास आओ। मैं तुम्हें बहुत विचित्र बातें बताऊं जो मैंने इस वर्ष देखी है।"

वह पास आया, छिछले पानीमें लेटकर हथेलीपर मुंह रखकर बातें सुनने लगा।

और अन्त करणने उससे कहा—"एक शहर जानता हूं जहां नदीके किनारे एक सराय है। मैंने वहां नाविकोंके साथ बैठकर भोजन किया है जो दो रंगकी शराब पीते हैं, जौकी रोटियां खाते हैं और पत्तलोंपर नम-कीन मछलियां सिरकेके साथ खाते हैं। एक बार जब हम आपसमें बैठ कर रंगरेलियां मना रहे थे, एक बूढ़ा आदमी अबरकको दीपमजूषा और

दन्तपत्र-मण्डित वीणा लेकर आया। उसने फर्शपर आसन डाला और ज्योंही उसने वीणाके तारोंको झंकार दी कि एक छोटी-सी नर्तकी मुँहपर झीना आवरण डाले हुए आई और नाचने लगी। उसके चेहरेपर जाली-का घूँघट था, किन्तु उसके पैर निरावृत थे। उसके पैर निरावृत थे और वे उस कालीनपर श्वेत कपोतोकी भाँति ठुमुक रहे थे। मैंने कभी कोई इतनी आकर्षक वस्तु नही देखी, और वह नगर यहाँसे केवल दिन भरकी यात्राके अन्तर पर है।"

जव नाविकने अन्त करणके शव्द सुने तो उसे ध्यान आया कि जलपरी का अर्द्धभाग सुनहली मछलीकी तरह है वह नाच नहीं सकती। उसके मन मे न जाने कैसी इच्छाएँ जाग उठी और उसने मनमे कहा—"वह नगर यहाँसे दूर नही है और मैं दो दिनमे ही लौट आऊँगा!" वह हँस पडा, छिछले पानीको चीरता हुआ तटकी ओर चला।

जव वह सूखे तटपर पहुँचा तो फिर हँस पड़ा और अन्त करणसे आलिगनके लिए वाहे फैला दी। अन्त करण प्रसन्नतासे चीख उठा और दौडकर नाविकमे विलीन हो गया, और तीन साल वाद नाविकने पीली वालूपर विछी हुई अपनी छाया देखी!

और उसके अन्तःकरणने कहा—"रुको मत। यहाँ समुद्रके देवता है जो तुमसे ईर्ष्या करते है और तुम्हें हानि पहुँचा सकते है!"

वे जल्दी जल्दी चल पडे, रात भर वे चाँदनीमे चलते रहे। दूसरे दिन धूपमें चलते रहे और तीसरे पहर वे उस नगरमे पहुँचे।

और नाविकने अपने अन्त करणसे पूछा—"क्या यही वह नगर है जिसमे वह नाचती है जिसके विपयमे तुमने वताया था!"

"यह वह नगर नहीं है, दूसरा है," अन्तःकरणने कहा—"लेकिन आओ फिर भी इसमें चलें।"

वे अन्दर गये और जब वे स्वर्णकारोकी हाटसे गुजर रहे थे एक दूकानके पास एक स्वर्णपात्र रक्खा था। अन्तःकरणने चुपकेसे कहा—"इसको उठाकर छिपा लो!" नाविकने प्याला उठाया और वस्त्रोमे छिपा लिया!"

जब वे शहरसे मीलो दूर चले गये तो नाविकने क्रुद्ध होकर प्याला फेंक और अन्तःकरणसे बोला—"तुमने पात्र चुरानेको क्यो कहा? यह तो पाप है!"

"शान्त रहो! शान्त रहो!" अन्तःकरणने कहा।

दूसरे दिन शामको वे दूसरे नगरमे पहुँचे। "क्या यही वह नगर है जहाँ वह नर्तकी रहती है?"

अन्तःकरणने उत्तर दिया "नही, वह दूसरा नगर है। फिर भी आओ इसमे चले।"

वे अन्दर गये और जब वह चर्मकारोकी हाटसे गुजर रहा था तो एक पात्र की कूँडोके पास एक बच्चा खड़ा था। अन्तःकरणने कहा—"इस बच्चेको मारो।" उसने उसे मारा और जब वह रोने लगा, वे शहरसे बाहर चले आये।

जब वे शहरसे मीलो दूर निकल आये तो वह क्रोधसे जल उठा और अन्तःकरणसे बोला—"तूने मुझे बच्चेको मारनेकी आज्ञा क्यो दी? यह तो पाप है।"

"शान्त रहो, शान्त रहो!" अन्तःकरणने उत्तर दिया।

तीसरे दिन शामको वे एक नगरके द्वारपर पहुँचे और नाविकने अन्तःकरणसे पूछा—"क्या यही वह नगर है जहाँ वह नर्तकी नाचा करती है?"

अन्तःकरणने कहा—"सम्भव है यही वह नगर हो! आओ भीतर तो चलें।" वे नगरमे गये, मगर कही भी नाविकको नदी या उसके तटकी सराय न दीख पडी। लोगोने आश्चर्यसे उसकी ओर देखा। वह भयभीत

होकर अन्तःकरणसे बोला—"चलो यहाँसे, यहाँ तो गोरे पैरो वाली नर्तकी नही रहती।"

अन्त.करणने उत्तर दिया—"नही, अव तो यही ठहर जाओ, रात अन्धेरी है और राहमे लुटेरोंका डर है।"

वह वाजारमे एक स्थानपर वैठ गया और आराम करने लगा। कुछ देर वाद उधरसे एक सौदागर निकला जो तातारी ऊनका लवादा ओढे था और हाथमें सीगकी जालीदार मंजूपा थी और सिरेपर पतले नरकुलका कडा था।

सौदागरने उससे कहा—"तुम वाजारमें क्यो वैठे हो? दूकान वन्द हो गई है और लोग सामान लपेट रहे है।"

नाविकने जवाव दिया—इस नगरमे कोई सराय नही दीख पड़ती, न यहाँ कोई सम्बन्धी है जहाँ मै रात गुजार सकूँ!"

"क्या हम सभी भाई नही है?" सौदागरने कहा "क्या उसी ईश्वरने हम सवको नही वनाया है? मेरे साथ आओ, मेरे यहाँ एक अतिथि-गृह है!"

नाविक उठा और सौदागरके पीछे चल दिया। अनारोंका वाग पार कर वह सौदागरके मकानमे गया। सौदागर एक ताँवेके वर्तनमे गुलाव-जल ले आया ताकि वह अपने हाथ धोये और एक चाँदीकी तश्तरीमे तर-वूजकी फाँके लाया जिससे वह अपनी प्यास वुझाये, और उसके वाद एक प्यालेमे कुछ चावल और भुना गोश्त उसके सामने रख दिया।

जव नाविक खा चुका तो सौदागर उसे अतिथिशालामे ले गया और विश्राम करनेके लिए कहा। नाविकने उसे धन्यवाद दिया और उसके हाथकी अगूठीको कृतज्ञतासे चूमा और भेडके रंगीन ऊनकी कालीनपर लेट गया। और काले मेमनेके ऊनका कम्वल ओढकर सो रहा।

सुवह होनेके तीन घण्टे पहले उनके अन्त करणने उसे जगाया और

बोला—"उठो ! सौदागरके कमरेमें जाकर उसकी हत्या कर दो और उससे सोना छीन लो, क्योंकि हमें उसकी आवश्यकता होगी !"

नाविक उठा और दबे पाँव उसके शयन-गृहकी ओर गया। उसके पैताने एक बड़ी सी तलवार रक्खी थी। उसके सिरहाने एक चौकीपर सोने-की नौ थैलियाँ रक्खी थीं। उसने हाथ बढ़ाकर ज्योंही तलवार उठाई, कि सौदागर जाग गया, उछलकर तलवार उठा ली और नाविकसे बोला "तुम नेकीका बदला बदीमें देते हो। मैंने तुमपर मेहरबानी की, तुम उसका बदला ख़ून बहाकर देना चाहते हो !"

अन्तःकरणने नाविकसे कहा—"उसे मार दो !" नाविकने प्रहार किया और सौदागर मूर्छित होकर गिर पड़ा। उसने सोनेकी थैलियाँ उठा लीं और खिड़की फाँदकर अनारके बागमें भाग गया और ध्रुवके तारेकी ओर मुँह करके चल पड़ा।

जब वे शहरसे मीलों दूर निकल आये तो नाविक अपनी छाती पीटकर अन्त:करणसे बोला—"तूने मेरे हाथोंपर ख़ूनके दाग क्यों लगा दिये ! तू पापसे सना हुआ है !"

"शान्त रहो, शान्त रहो !" अन्तःकरणने उत्तर दिया।

"नहीं मुझे कभी शान्ति न मिलेगी, मैं इन सब कृत्योंसे नफ़रत करता हूँ। बताओ तुमने यह सब क्यों किया वरना मैं तुझसे भी नफ़रत करने लगूँगा !"

अन्त:करणने जवाब दिया—"जब तूने मुझे संसारमें भेजा तो तूने मुझसे मेरा हृदय छीन लिया था। हृदयके न होनेपर मैं यह सब पाप सीख गया और अब मैं उन्हें करनेमें आनन्दका अनुभव करता हूँ !"

"क्या ? तू कह क्या रहा है ?" नाविक बोला।

"तुम्हें मालूम है, तुम्हें अच्छी तरह मालूम है। क्या तुम भूल गये कि तुमने मुझे हृदयसे वंचित कर दिया था ? मैं झूठ थोड़े ही कहता हूँ। अब

पछतानेसे क्या लाभ ? इस पापके जीवनमे तुम सभी दु ख भूल जाओगे और कोई भी सुख तुम्हे अलभ्य न रहेगा !"

नाविक यह सुनकर काँप गया और अन्त करणसे बोला—"नही, तू पापी है, तूने मेरे मनसे प्यार समाप्त कर दिया और तू मुझे पापकी डगर पर ले आया।"

"लेकिन तुम्हीने मुझे हृदय-हीन वना दिया था।" अन्त करण बोला—"आओ दूसरे नगरमे चलकर आनन्द मनाये। हमारे पास नौ थैली सोना है !"

लेकिन नाविकने उन सोनेकी थैलियोको पटक दिया और उन्हें पैरसे कुचल दिया—"नही मै तुमसे कुछ भी नाता न रक्खूँगा।" वह चिल्लाया "न मै तुम्हारे साथ अव कही भी जाऊँगा। पहलेकी तरह अव फिर मै तुम्हें अपनेसे अलग कर दूँगा !"

उसने चाँदकी ओर पीठ की और हरे साँपके चमडेकी वेटवाला चाकू निकालकर पैरोके समीपसे छाया काटनेके लिए झुका।

लेकिन अन्तःकरणने उस ओर कुछ भी ध्यान नही दिया और उससे कहा—"अव उस जादूगरनीकी वताई हुई तरकीव व्यर्थ है। न तुम अव मुझे निकाल सकते हो, न मै कही भी जाऊँगा। जीवनमे केवल एक वार मनुष्य अपने अन्तःकरणको पृथक् कर सकता है, मगर जव एक वार फिर उसे स्वीकार कर लेता है तो दोवारा अलग नही कर सकता। यही उसकी सजा है; यही उसका इनाम !"

नाविक भयसे पीला पड गया, और मूठियाँ कसकर कहने लगा—"वह वडी ही धोखेवाज जादूगरनी थी—उसने मुझसे यह नही वताया था।"

"नही, वह अपने स्वामीकी आज्ञाकारिणी है और वह ऐसे ही छल किया करता है।"

जव नाविकने जान लिया कि अव वह अपने अन्त करणसे नही छुटकारा पा सकता और यह पापी अन्तःकरण सदा उसके साथ रहेगा, तो वह

भूमिपर लोटकर फूट-फूटकर रोने लगा। जब दिन हुआ तो नाविक उठा और अपने अन्त करणसे बोला—"मैं अपने हाथ बाँध लूँगा ताकि वह तुम्हारी आज्ञा पालन न कर सकें, और अपने होठ बन्द कर लूँगा ताकि वे तुम्हारे शब्द न बोलें, और मैं वहाँ जाऊँगा जहाँ मेरी रानी रहती है। मैं उस समुद्रको लौट जाऊँगा, मैं उसे बुलाऊँगा और उसके समक्ष अपने सब पाप रक्खूँगा और यह भी बताऊँगा कि तुमने मेरे साथ क्या फरेब किया है!"

उसके अन्त करणने उसे लालच दिया—"कौन तुम्हारी प्रेमिका है जिसके पास तुम जाओगे? ससारमे उससे ज्यादा सुन्दर लडकियाँ है। ससारीकी नर्तकियाँ हर तरहके नृत्य जानती है—उनके पैरोमे मेहदी रची रहती है और उनके हाथमे छोटी-छोटी घण्टियाँ होती है। वे नाचते समय हँसती है और उनकी हँसी लहरोकी हँसीसे भी स्वच्छ होती है। मेरे नाथ आओ, मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा। तुम पापसे डरते क्यो हो? क्या स्वादिष्ट भोजन खानेके लिए नही बनाया जाता है। क्या ससारकी सभी मीठी चीजोमे जहर होता है? दु खी मत हो। मेरे नाथ दूसरे नगरको चलो। पास ही एक नगर है जहाँ कनैरके पेड लगे है। उन शान्त कुजोमे श्वेत मयूर और नीली छातीवाले मयूर बसेरा लेते है। जब वे अपने ही पख फैलाकर नाचते है तो उनके पख हाथी-दाँत और सोनाके थालोकी तरह लगते है। उनको पालनेवाली भी खुशीसे नाच उठती है। उनकी नाक अबाबीलके पखकी तरह नुकीली है और उसमे वह मुक्ताफूल पहनती है। वह नाचते वक्त हँसती है और उसके पैरमें पडी पायल चाँदीकी घण्टियोकी तरह छमक उठती है। दु खी मत हो! मेरे नाथ आओ।"

लेकिन नाविकने अपने अन्त करणको कुछ भी उत्तर नहीं दिया। अपने होठ मजबूतीसे बन्द कर लिये और अपने हाथोमे मजबूत रेशमकी डोर बाँध ली और वही चल पडा जहाँसे वह आया था। वह खाडी, जहाँ जलपरी उसे गीत सुनाती थी। उसके अन्त करणने उसे बहुत बहकाया,

वहुत भरमाया लेकिन नाविकने कोई जवाव न दिया और वरावर अपने अन्त करणसे लडकर उसे हराता रहा, उसके हृदयका प्रेम इतना शक्ति-मान था ।

समुद्र-तटपर पहुँचकर उसने मुँह खोला, अपना वन्धन ढीला किया और प्यारभरे शब्दोमे जलपरीको पुकारा । किन्तु उसने कोई भी उत्तर नही दिया । वह दिन भर पुकारता रहा लेकिन वेकार !

अन्त करणने उसे ताने देकर कहा—"तुम्हे प्रेममे कोई भी सुख नही मिल सकता । तुम मृत्युकी वेलामें, भग्न पात्रमे जल उडेल रहे हो । तुमने अपना सव कुछ दे दिया किन्तु तुम्हें कुछ भी प्रतिदान नही मिला । मेरे साथ आओ, मैं सुखकी घाटी जानता हूँ और तुम्हे भी वहाँके रहस्योसे परिचित करा दूँगा !"

किन्तु नाविकने अपने अन्तःकरणको कोई भी उत्तर नही दिया । एक गुफामे पत्तियाँ विछाकर वह रहने लगा और एक साल गुजार दिया। सुवह वह जलपरीको पुकारता था, दोपहरको फिर उसे आमन्त्रण देता था और, रातको भी उसका नाम लिया करता था । किन्तु वह कभी भी समुद्रसे न निकली । उसने समुद्री गुफाओमे, हरे पानीमे और ज्वार के चढावमे अपनी जलपरीकी खोज की किन्तु वह निराश ही रहा ।

सदा उसका अन्त करण उसे भयानक पापके निर्देशोंसे वहकाता रहा किन्तु कभी भी वह नाविकको न भरमा सका, उसका प्रेम इतना शक्ति-मान था ।

जव एक वर्ष वीत गया तो अन्त करणने सोचा—"मै अपने स्वामीको पापकी लालच देकर भी न वहका सका । उसका प्यार पापसे भी वलवान

है। अव मैं उसे पुण्यके बहाने बहकाऊँगा तव शायद वह मेरे जालमें फँस जाय।"

फिर वह नाविकसे बोला "मैंने तुमसे जीवनके सभी सुखोंका जिक्र किया लेकिन तुमने कुछ भी ध्यान न दिया। अव मैं तुम्हे जीवनके अभाव दु.ख और दर्दकी कहानियाँ सुनाऊँगा और तव शायद तुम मेरी वात सुनो। दु ख ही संसारका व्यापक तत्त्व है और कोई भी उससे नहीं बचा है। दुनियामें कुछ लोग नंगे है, कुछ भूखे है। कही कम्वलमे लपटी हुई विधवाएँ रोती है, कही पगडण्डियोपर कुष्ट पीडित भिखारी आपसमे लडते हुए नजर आते है। सडकोपर भिखमगे घूमते हैं और उनके पेटमे भूखकी ज्वाला जलती है। शहरकी सडकोपर अकाल घूमता है और नगर-द्वारपर महामारी बैठी रहती है। आओ इन सवको सुधारें और इनका अस्तित्व न रहने दें। तुमने अपनी प्रेमिकाको पुकारा और उसने कुछ भी उत्तर न दिया? और प्रेम भी क्या इतनी महत्त्वपूर्ण वस्तु है कि तुम उसे इतना उच्च स्थान दो?"

लेकिन नाविकने इसका भी कुछ उत्तर न दिया, उसका प्यार इतना शक्तिमान था। हर सुवह वह जलपरीको पुकारता था, दोपहरको उसे आमन्त्रण देता था और रातको उसका नाम लेकर पुकारता था। किन्तु वह कभी भी समुद्रसे न निकली। उसने समुद्रकी गुफाओमें हरे पानीमे, ज्वारके चढावमे जलपरीकी खोज की मगर वह निराश ही रहा।

और जव दूसरा साल समाप्त हो गया तो गुफाके एकान्तमे अन्त करण ने नाविकसे कहा—"लो! मैं तुम्हे पाप और पुण्य दोनोंसे भरमा चुका। तुम्हारा प्रेम मुझसे अधिक वलशाली है। अव मैं तुमसे हार मानता हूँ। लेकिन तुम मुझे अपने हृदयमें प्रवेश करनेकी आज्ञा दे दो, ताकि मैं पहलेकी भाँति एकात्म हो जाऊँ।"

"अवश्य !" नाविकने उत्तर दिया, "तुम्हे विना हृदयके वहुत ही कष्ट हुआ होगा !"

"हाय !" अन्त.करणने व्यथित होकर कहा—"मुझे हृदयमे प्रवेश करनेके लिए कोई स्थान ही नही मिलता, तुम्हारा हृदय प्रेमसे इतना अभिभूत है।"

"दु.ख है ! मै तुम्हारी सहायता अवश्य करना चाहता हूँ लेकिन कैसे करूँ ?" नाविकने उत्तर दिया।

एकाएक समुद्र तलसे भयानक क्रन्दनकी आवाज आने लगी। वैसी आवाज तो तभी उठती है जव कोई समुद्र-तलवासीकी मृत्यु हो जाती है। नाविक चौंक उठा और अपनी गुफा छोडकर समुद्र-तटकी ओर भागा। काली लहरें तटकी ओर चली आ रही थी और उनके हाथोमे कोई चाँदीसे भी ज्यादा श्वेतवस्त्रा थी। वह फेनकी तरह श्वेत थी और फूलकी तरह लहरोपर उतरा रही थी। लहरोसे वह फेनमे आई और फेनने उसे तटपर फेक दिया। और नाविकने अपने चरणोके पास नन्ही जलपरीका शव देखा जो मृत उसके चरणोपर पडी थी।

जैसे किसी मरोडते हुए दर्दसे व्याकुल होकर वह उसके वगलमे लेट कर विलख-विलखकर रोने लगा। उसने उसके अधरोकी शीतल अरुणाई चूमी और उसके रेशमी वालोमे काँपती हुई अँगुलियाँ फेरने लगा।

वह वालूपर लेट गया और इस तरह रोने लगा जैसे कोई खुशीसे सिसक रहा हो। उसने उसके शवको अपने भूरे वाहुओमे कस लिया। उसके अधर शीतल थे लेकिन उसने उन्हे चूमा। उसकी अलकोका मधु खारा पड गया था लेकिन एक कडुए नशेमे उसने उसे चूम लिया। उसने उसकी मुँदी पलकें चूमी। उसकी पलकोपर जमा हुआ फेन नाविकके आँसुओसे कम खारा था।

और उसके बाद उन सबके सामने उसने अपने पाप स्वीकार करने प्रारम्भ किये। उसके सीपीने निर्जीव कानोमे उसने अपने दर्दकी कहानी की शराब उडेलनी प्रारम्भ की। उसने उसके गलेमे अपना हाथ डाल दिये ! उनके मनमे खुशी थी मगर बेहद कड्वी, और उसे दु ख था, बहुत, मगर अजीब खुशीसे भरा हुआ।

श्यामल समुद्र समीपतर आता गया। श्वेत फेन जर्द रोगियोकी तरह कराह रहा था। फेनके श्वेत पजोंसे समुद्रने किनारेको दबोच लिया। समुद्रके सम्राट्के महलोसे फिर क्रन्दनके स्वर उमडे और समुद्रकी लहरों पर जल-देवताओंने शख बजाये।

"भाग चलो !" अन्त करणने कहा "समुद्र बढता आ रहा है। अगर तुम रुके तो जानका खतरा है। भाग चलो। तुम्हारा हृदय प्रेमके कारण मुझसे विमुख है। लेकिन किसी सुरक्षित जगह चलो। बिना हृदयके ही तुम मुझे कहीं दूसरी दुनियामें न भेज देना।

किन्तु नाविकने उधर कुछ भी ध्यान न दिया। उसने नन्ही जलपरीके शवसे कहा—"प्रेम ज्ञानसे बडा है, धनसे ज्यादा मूल्यवान् है, मानवीयोके नग्न पैरोसे भी अधिक सुन्दर है। आग उसे जला नही सकती, पानी उसे बुझा नही सकता। मैं तुम्हे भोरमे पुकारता था और तुम आ जाती थी। लेकिन जब चाँद तुम्हारा नाम लेता था तुम उसे अनसुनी कर देती थी क्योकि मैंने तुमसे छल किया था और तुम्हे छोड दिया था। किन्तु तुम्हारा प्यार सदा मेरे साथ रहा और कोई भी उसे न हरा सका। मैं पाप देख चुका, मैं पुण्य देख चुका। अब तुम मर गई हो, मैं भी जीवित नहीं रहूँगा।"

समुद्र और भी समीप आ गया और जब लहरें उसे डुबोने लगी और वह समझ गया कि अन्त समीप है तो उसने पागल अधरोंसे उसके मुर्दा होठ चूमे। उसका दर्द इतना असहनीय था कि उसका हृदय दो टूक हो गया। अन्त करण अवसर देखकर टूटे हुए हृदयमे प्रवेश कर गया और

नाविक मरकर गिर पडा। समुद्रकी लहरोने उसपर जलका कफन तान दिया।

दूसरे दिन प्रात.काल पादरी समुद्रको आशीर्वाद देने गया क्योंकि वह रात भर अशान्त रहा। उसके साथ-साथ महन्त, मशालची, गायक और वहुतसे लोग गये।

तटपर पहुँचकर उसने देखा कि फेनकी शय्यापर तरुण नाविक अपनी मुर्दा भुजाओमे जलपरीके शवको कसे पड़ा हैं। पादरी चौककर पीछे हट गया, हवामे क्रासका निशान वनाया और चीख़ उठा। "मैं समुद्रको अशीर्वाद नही दूँगा। समुद्र-निवासी और उनसे सम्बन्ध रखनेवालों पर मेरा शाप पडे! इस नाविकने प्रेमके पीछे ईश्वरको छोड दिया, ईश्वरने अपना शाप इसकी प्रेमिकापर भेजा और वह मर गई। इन दोनो-की लाशोको उस कब्रिस्तानके किसी गन्दे कोनेमे गाड दो और उसपर भी कोई स्मृति-चिह्न न वनाओ। उनका जीवन कलुपमय था, उनकी मृत्यु भी उज्ज्वल नही होगी।"

लोगोने वैसा ही किया और कब्रिस्तानके एक उजाड कोनेमे गड्ढा खोदकर उन्हे गाड दिया।

जव तीसरा साल वीत गया तो एक धार्मिक त्यौहारके अवसरपर पादरी गिर्जेमे गया ताकि वह वहाँसे लोगोको ईश्वरीय साम्राज्यके रहस्यो-से परिचित करा दे। उसने अपनी पोशाक पहनी और जव वह जाकर वेदीके सामने झुका तो देखा कि वेदी विचित्र फुलोसे ढँकी थी। वे देखनेमे अद्भुत थे, उनका सौन्दर्य अद्वितीय था, और उनका सौरभ उसकी शिराओमे अपूर्व रस सचार कर रहा था। उसके वाद उसने पूजाकी मजूपा खोली। धूपदानीमे धूप डाली, पवित्र जल छिडका और उपदेश

प्रारम्भ किया। वह आज बताने जा रहा था कि किस प्रकार पापियोपर ईश्वरका क्रोध उतरता था। किन्तु पीछे पड़े हुए फूलोका सौरभ उसके विचारोको अस्त-व्यस्त कर रहा था और न जाने किस नशेमे भूलकर वह उस ईश्वरके विषयमें बताने लगा जिसका स्वभाव क्रोध नही है, प्रेम है, अनन्त प्रेम ! ऐसा क्यो हुआ, उसे स्वयम् नही मालूम था।

जब उसने अपना भाषण बन्द किया तो लोग रोने लगे। पादरीका भी गला भर आया और वह भीतर चला गया। नौकरोने उसकी पोशाक उतारनी प्रारम्भ की किन्तु वह न जाने किस स्वप्नमे विभोर निश्चल और अचेत खडा रहा।

जब उसकी पोशाक उतर गई तो उसने नौकरोसे पूछा—"ये कौन फूल वेदी पर चढाये गये है ? कहाँसे आये ये फूल ?"

उन्होने कहा "कौनसे फूल है यह हमें नही मालूम। किन्तु वे कब्रिस्तानके कोनेमें उगे थे।"

पादरी काँप गया और घरमें लौटकर प्रार्थनामे डूब गया।

और मुँह अँधेरे ही उठ कर वह महन्तो, गायको और बहुतसे लोगोके साथ समुद्र-तटपर गया। समुद्र और उसमे रहनेवाले जन्तुओको आशी-र्वाद दिया। पत्तियोसे झाँकनेवाली उजली आँखो वाली चिड़ियाँ, जगलमे नाचनेवाली वनपरियाँ, सबको उसने आशीर्वाद दिया। उसने आकाशके नीचे और पृथ्वीपर रहने वाले प्राणीमात्रको आशीर्वाद दिया और उनपर अपनी कल्याण-कामना बिखेर दी। और लोग आश्चर्य और प्रसन्नताने भर गये।

लेकिन फिर कभी उस कब्रिस्तानमें फूल न लगे, न उस देशमें कोई भी समुद्री जीव दिखाई दिये। वे लोग शायद ससारके किसी दूसरे भागमे चले गये !